A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 22 जुलाई, 2025
इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 283, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

04 - हमारे सामूहिक नैतिक पतन की दास्तान

05 - भारत की एकता, साहस और आकांक्षाओं का प्रतीक तिरंगा

06 - देश को ऑर्थो फिजिशियन की सख्त जरूरत

07 - कलेक्टर ने राजस्व कार्यों की समीक्षा की, राजस्व वसूली...

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

114 वर्षीय फौजा सिंह की मौत ने खोली भारत की सड़कों की सच्चाई

सागरिका किस्सू

114 साल के फौजा सिंह को तेज़ रफ्तार कार ने टक्कर मार दी, जिससे उनकी मौत हो गई। इस हादसे ने एक बार फिर भारत की खतरनाक सड़कों, बढ़ते सड़क हादसों और लापरवाह ट्रैफिक व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। मशहूर मैराथन धावक फौजा सिंह का निधन 114 साल की उम्र में हुआ, लेकिन उनकी मौत उम्र के कारण नहीं, बल्कि एक सड़क हादसे में हुई। 14 जुलाई को जालंधर-पठानकोट हाईवे पर उन्हें एक तेज़ रफ्तार कार ने टक्कर मार दी।

कार चलाने वाले 26-वर्षीय एनआरआई (प्रवासी भारतीय) अमृतपाल सिंह ढिल्लो को गिरफ्तार कर लिया गया है। सिंह, जिन्हें दुनियाभर में सम्मान से देखा जाता था, जालंधर के अपने गांव में सड़क पार कर रहे थे, जब ढिल्लो ने उन्हें अपनी टोयोटा फॉर्च्यूनर से कुचल दिया। यह घटना एक बार फिर भारत की एक पुरानी और लगातार बनी हुई समस्या को उजागर करती है– सड़क सुरक्षा और ट्रैफिक नियमों की अनदेखी। जिस तरह भारत की वैश्विक स्थिति और आर्थिक आंकड़े देश की पहचान दिखाते हैं, वैसे ही सड़क पर लोगों का व्यवहार और सार्वजनिक सुरक्षा भी हमारी असली तस्वीर पेश करते हैं।

अभी पिछले साल ही देश ने हाल के समय की सबसे भयावह दुर्घटनाओं में से एक देखी – पुणे की पोर्श कार दुर्घटना। एक 17 साल का लड़का, जो अपने माता-पिता की पोर्श चला रहा था (और उस समय नशे में होने का आरोप भी था), उसने बाइक सवार दो लोगों को कुचल दिया था। इस हादसे के बाद लोगों में तब और ज्यादा गुस्सा फूट पड़ा जब 'किशोर न्याय बोर्ड' ने उसे कुछ ही घंटों में ज़मानत दे दी। शर्तें भी बेहद नरम थीं – 300 शब्दों का सड़क सुरक्षा पर निबंध लिखना, नशा छुड़ाने वाले केंद्र में काउंसलिंग लेना और 15 दिन तक ट्रैफिक पुलिस की मदद करना।

एक साल बाद और संयोग से फौजा सिंह की मौत के ठीक अगले दिन – उसी किशोर न्याय बोर्ड ने पुणे पुलिस की ये अपील खारिज कर दी कि उस लड़के पर बालिग के तौर पर मुकदमा चलाया जाए। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, भारत में हिट एंड रन (टक्कर मारकर भागने) के मामलों में तेज़ बढ़ोतरी हुई है – 2014 में ऐसे 53,334 मामले दर्ज हुए थे, जबकि 2022 में ये बढ़कर 67,387 हो गए।

सिर्फ 2023 में ही भारत में सड़क हादसों में 1.72 लाख से ज़्यादा लोगों की मौत हुई – यानी हर दिन औसतन 474 मौतें, या लगभग हर तीन मिनट में एक मौत। इनमें से 54 हजार लोग हेलमेट न पहनने के कारण और 16 हजार लोग सीट बेल्ट न लगाने की वजह से मारे गए। ये आंकड़े साफ दिखाते हैं कि भारत की सड़कें आज भी कितनी खतरनाक हैं।

पिछले साल दिसंबर में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा था कि ये हादसे इसलिए हो रहे हैं क्योंकि लोगों में कानून का ना तो सम्मान है और ना ही डर। गडकरी ने कहा था, 'हादसों के कई कारण हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण इंसानी व्यवहार है।'

हर साल सरकार की ओर से ब्लैक स्पॉट्स (ऐसे सड़क हिस्से जहां बार-बार हादसे होते हैं) को चिन्हित करने और सुधारने की बात होती है। साथ ही नागरिकों से सड़क सुरक्षा की शपथ लेने जैसे अभियान भी चलाए जाते हैं।

भारत सरकार की 2021 की एक अधिसूचना के मुताबिक, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में राष्ट्रीय राजमार्गों पर कुल 5,803 ब्लैक स्पॉट्स की पहचान की थी – ये आंकड़े 2015 से 2018 के बीच के हादसों और मौतों पर आधारित थे। मंत्रालय के अनुसार, इनमें से 5,366 जगहों पर अस्थायी सुरक्षा उपाय किए गए हैं, जबकि 3,215 स्थानों को स्थायी रूप से दुरुस्त किया जा चुका है।

सड़क हादसे ये भी दिखाते हैं कि भारत में सड़कें कैसे इस्तेमाल होती हैं – और कैसे उनकी देखरेख में लापरवाही होती है। ज़्यादातर सड़कें जरूरत से ज़्यादा भरी होती हैं, जहां कार, ऑटो, बाइक जैसी मोटर गाड़ियां साइकिल, ठेला और रिक्शा के साथ सड़कों पर जगह के लिए जूझती रहती हैं। फुटपाथों पर अक्सर रेहड़ी-पटरी वाले कब्ज़ा कर लेते हैं और अव्यवस्थित पार्किंग से सड़क और भी संकरी हो जाती है।

'डाउन टू अर्थ' की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं हमारे परिवहन सिस्टम से भी जुड़ी हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, हर मिनट 90 से ज़्यादा गाड़ियां रजिस्टर्ड होती हैं और इनमें से 88 प्रतिशत से अधिक प्राइवेट कार या टू-व्हीलर होते हैं।

हालांकि, एक अच्छी मिसाल कोलकाता से मिलती है, जहां सड़क सुरक्षा के लिए कुछ ठोस कदम उठाए गए हैं। यहां वैज्ञानिक तरीके से तय की गई स्पीड लिमिट लागू की गई है – शहरों में अधिकतम रफ्तार 50 किमी/घंटा और जोखिम वाले इलाकों में इससे भी कम रखी गई है। अब यह देखना बाकी है कि अगर इस तरह के कदम बाकी शहरों में लागू किए जाएं तो क्या सकारात्मक नतीजे मिलेंगे, लेकिन साफ है कि सड़क हादसे न सिर्फ लोगों की जान ले रहे हैं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं।

मार्च में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा था कि भारत को हर साल करीब 5 लाख सड़क दुर्घटनाओं के कारण जीडीपी का 3 प्रतिशत नुकसान होता है। वे AMCHAM के एक सम्मेलन में बोल रहे थे, जिसका विषय था- 'सड़क सुरक्षा में टेक्नोलॉजी का उपयोग: भारत-अमेरिका साझेदारी।'

गडकरी ने डीपीआर तैयार करने वाले सलाहकारों की भी आलोचना की और कहा कि खराब योजना और गैर-जिम्मेदार रवैये की वजह से हादसे बढ़ते हैं। उन्होंने कहा, "DPR कंसल्टेंट्स ही असली गुनहगार हैं जो सड़क हादसों के लिए ज़िम्मेदार हैं। ये लोग कभी पैसे बचाने के चक्कर में, कभी अन्य कारणों से और कभी गंभीरता की कमी के चलते गलत रिपोर्ट बनाते हैं।' लेकिन अंत में, जैसा कि गडकरी भी कहते हैं – असली बदलाव तभी आएगा जब लोगों का व्यवहार बदलेगा।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

संसद परिसर में पीएम मोदी बोले-

ऑपरेशन सिंदूर कामयाब रहा

● 22 मिनट में आतंकी ठिकानों को जमींदोज किया, दुनिया ने भारत की सैन्य ताकत देखी

नईदिल्ली (एजेंसी)। मानसून सत्र के पहले दिन सोमवार को पीएम नरेंद्र मोदी ने संसद परिसर में मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा, ऑपरेशन सिंदूर कामयाब रहा। हमने 22 मिनट में ऑपरेशन सिंदूर के तहत आतंकी ठिकानों को जमींदोज किया, दुनिया ने भारत का सैन्य सामर्थ्य देखा।

पीएम ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत की सेना ने जो लक्ष्य निर्धारित किया था, वह 100 प्रतिशत अचीव किया। हमने सिद्ध करके दिखा दिया। इसमें मेड इन इंडिया सैन्यशक्ति का नया स्वरूप दिखा है।

आतंकी ठिकाने जमींदोज

ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की सेना ने जो लक्ष्य निर्धारित किया था, वह 100 प्रतिशत अचीव किया। आतंकी आकाओं के घर जाकर 22 मिनट में ऑपरेशन सिंदूर के तहत जमींदोज किया गया। हमने सिद्ध करके दिखा दिया। इसमें मेड इन इंडिया सैन्यशक्ति का नया स्वरूप दिखा है।

- **नक्सलवाद-माओवाद को जड़ से उखाड़ने का संकल्प-** देश कई प्रकार की हिंसक वारदातों का शिकार रहा है। चाहे आतंकवाद हो, नक्सलवाद हो। कोई शुरुआत में हुआ, कोई बाद में, आज नक्सलवाद-माओवाद का दायरा तेजी से सिकुड़ रहा है। इसे जड़ से उखाड़ने के संकल्प के साथ एक नए आत्मविश्वास, तेज गति से सफलता की ओर कदम रख रहे हैं। मैं गर्व से कह सकता हूं, देश में सैकड़ों जिले आज मुक्ति की सांस ले रहे हैं। हमें गर्व है कि बम, बंदूक और पिस्तौल के सामने देश का संविधान विजयी हो रहा है। देश का उज्वल भविष्य में दिख रहा है कि जो कल तक रेड कॉरिडोर थे, आज ग्रीन कॉरिडोर में बदल रहे हैं।
- **एस्ट्रोनॉट शुभांशु को बधाई, देशवासियों के लिए गौरव का पल था-** एस्ट्रोनॉट शुभांशु को बधाई, उन्होंने पहली बार इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन) में तिरंगा लहराया। आईएसएस पर भारत का तिरंगा लहराना देशवासियों के लिए गौरव का पल है।
- **तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था-** 2014 के पहले वैश्विक अर्थव्यवस्था में हम 10वें नंबर पर थे, आज तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बनने पर दस्तक दे रहे हैं। इन दिनों 25 करोड़ गरीबों का गरीबी से बाहर निकलने की सराहना हो रही है। एक जमाना था, जब महंगाई दर डबल डिजिट में होती थी, आज 2 प्रतिशत के पास है, इससे सामान्य आदमी की जीवन में राहत है। लो इन्फ्लेशन के साथ हाई ग्रोथ अच्छी विकास यात्रा की दिशा है।
- **मानसून सत्र गौरव का प्रतीक-** ये मानसून सूत्र देश के लिए गौरव का रूप है। विजयोत्सव का रूप है। मैं जब कहता हूं कि सत्र राष्ट्रगौरव और विजयोत्सव का रूप है तो स्पेस स्टेशन पर तिरंगा फहराना गौरव का पल है।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इस्तीफा दिया, स्वास्थ्य को वजह बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को पद से इस्तीफा दे दिया है। धनखड़ ने अपने इस्तीफे में लिखा, मैं स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए और डॉक्टरों की सलाह का पालन करते हुए भारत के उपराष्ट्रपति पद से तत्काल प्रभाव से इस्तीफा देता हूं। यह इस्तीफा संविधान के अनुच्छेद 67(क) के अनुसार है। मैं भारत की राष्ट्रपति को हार्दिक धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान मुझे लगातार सहयोग और एक शांतिपूर्ण कार्य संबंध प्रदान किया। यह मेरे लिए बेहद सुखद अनुभव रहा।

उन्होंने आगे कहा, मैं माननीय प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद का भी आभार प्रकट करता हूं। प्रधानमंत्री का सहयोग मेरे लिए बेहद मूल्यवान रहा है और मैंने अपने कार्यकाल के दौरान उनसे बहुत कुछ सीखा है।

नवीन विधायक विश्राम गृह का नवनिर्माण आधुनिक प्रक्रियाओं के साथ भविष्य की ओर अग्रसर होने के भाव को दर्शाता है : मुख्यमंत्री

सीएम डॉ. यादव ने की नवीन विधायक विश्राम गृह के द्वितीय चरण के निर्माण की घोषणा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में सिंहावलोकन की परंपरा रही है। पिछले अनुभवों की समीक्षा करते हुए भविष्य की कार्य योजना बनाना और उसका क्रियान्वयन सुखद और सफलता प्रदान करने वाला रहता है। समय की मांग के अनुरूप हो रहा विधायक विश्रामगृह का नवनिर्माण आधुनिक प्रक्रियाओं के साथ भविष्य की ओर अग्रसर होने के भाव को दर्शाता है। भवन निर्माण और वास्तुकला के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों के उपयोग से बनने वाला यह भवन लोक कल्याण और जन सेवा के लिए विधायकों को बेहतर वातावरण उपलब्ध कराएगा। राज्य सरकार ने विधायकों के कार्यालयों के आधुनिकीकरण के लिए बजट में 5-5 लाख रुपए के आवंटन का प्रावधान किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नवीन विधायक विश्रामगृह के द्वितीय चरण के निर्माण को भी स्वीकृति प्रदान करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव नवीन विधायक विश्रामगृह के निर्माण कार्य के भूमि पूजन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के साथ 102 फ्लैट्स का निर्माण प्रस्तावित है- मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मुख्य आतिथ्य और विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर की अध्यक्षता में विधायक विश्राम गृह परिसर में नवीन विधायक विश्रामगृह के निर्माण कार्य का भूमि पूजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में संसदीय कार्य मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह भी उपस्थित थे। नवीन विधायक विश्रामगृह लगभग 160 करोड़ रुपए की लागत से बनेगा, इसमें सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के साथ 102 फ्लैट्स का निर्माण प्रस्तावित है।

विधायकों को मिलेगा लाभ

विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि विधायक जनता का प्रतिनिधि होते हैं और उनको समयानुकूल सुविधाएं मिलना आवश्यक है और इसकी पूर्ति करने के लिए नए विधायक विश्राम गृहों का निर्माण किया जा रहा है। आने वाले समय में मध्यप्रदेश की विधानसभा ई-असेंबली के रूप में तैयार हो जाएगी तो इसका लाभ विधायकों को मिलेगा। वर्तमान विधायक विश्राम गृह का निर्माण वर्ष 1958 में हुआ था जो अब पुराना हो चुका है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश को विकास में अग्रणी बनाने के लिए संकल्प के साथ जुड़े हैं। प्रदेश में निवेश आकर्षित करने के लिए उन्होंने विदेश दौरा संपन्न किया है। स्वच्छता में प्रदेश के 8 शहरों ने झंडे गाड़े हैं। इंदौर तो स्वच्छ है ही, अगले वर्ष भोपाल को नंबर-1 बनाने के लिए सभी कृतसंकल्पित हैं। नगरीय विकास एवं आवास तथा संसदीय कार्य मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि यह विश्राम गृह आधुनिक सुविधाओं, सुरक्षा और तकनीकी आवश्यकताओं से सुसज्जित होगा।

संसद में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा के लिए सरकार तैयार

● खड़गे बोले-पहलगाम आतंकी नहीं पकड़े गए, जवाब दें ● राज्यसभा से बिल ऑफ लैडिंग विधेयक 2025 पारित ● हंगामे के चलते लोकसभा की कार्यवाही स्थगित

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद मानसून सत्र में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा के लिए सरकार तैयार हो गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस मुद्दे पर लोकसभा में 16 और राज्यसभा में 9 घंटे बहस होगी। सदन के पहले दिन दोनों सदनों में विपक्ष के हंगामे के बाद चर्चा का समय तय किया गया है। हालांकि अभी डेट तय नहीं है।

इधर, सत्र के पहले दिन राज्यसभा-लोकसभा में पहलगाम और ऑपरेशन सिंदूर पर हंगामा हुआ। विपक्ष ने इन मुद्दों पर चर्चा की मांग को लेकर नारेबाजी की। दिनभर में लोकसभा 4 बार स्थगित हुई, हंगामे के चलते सदन को मंगलवार 11 बजे तक स्थगित कर दिया गया।

राज्यसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- पहलगाम हमले के आतंकी अब तक पकड़े नहीं गए। मारे भी नहीं गए। लेफ्टिनेंट गवर्नर ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर में इंटेलिजेंस फेलियर हुआ। ट्रम्प 24 बार कह चुके हैं कि हमने युद्ध रुकवाया। सरकार को इन सभी जवाब देना चाहिए।

हम चर्चा करेंगे और हर तरीके से करेंगे-जेपी नड्डा – इस दौरान केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने कहा- देश में ऐसा संदेश नहीं जाना चाहिए कि सरकार पहलगाम और ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा नहीं करना चाहती। हम चर्चा करेंगे और हर तरीके से करेंगे। ऑपरेशन सिंदूर के सभी प्वाइंट्स को देश के सामने रखा जाएगा।

महाभियोग प्रस्ताव-लोकसभा के 145 सांसदों ने साइन किए

लोकसभा में 145 सांसदों ने जस्टिस यशवंत वर्मा को हटाने के संबंध में स्पीकर ओम बिरला को याचिका सौंपी। जस्टिस वर्मा को हटाने वाली याचिका पर हस्ताक्षर करने वालों में राहुल गांधी, अनुराग ठाकुर, रविशंकर प्रसाद, सुप्रिया सुले और के सी वेणुगोपाल शामिल हैं।

सुप्रभात

पोस्ट ऑफिस में अब कहाँ टकराते हैं
खूबसूरत लड़के
चिट्ठियाँ गुम होने का बड़ा नुकसान ये भी
हुआ है
'एक्सक्यूज़ मी..पेन मिलेगा क्या' जैसा
बहाना जाता रहा
'आप बैठ जाइए..मैं लगा हूँ लाइन में'
कहने वाले भी कहाँ रहे
मुए ज़माने ने इतना भर सुख भी छीन
लिया
वो दिन जब लाल पोस्ट बॉक्स जैसे
तिलिस्मी संदूक
और डाकिया जादूगर
वो दिन जब महीने में डाकघर के
चार चक्कर लग ही जाते
और तीन बार कहीं टकरा ही जाती नज़रें
बीते दिनों इतना रोमांच काफी था
कॉलेज की सहेलियों से
बतकही में ये बात ख़ास होती–
'सुन..कल वो फिर दिखा था'
पोस्ट ऑफिस में दिखने वाले
लड़के अमूमन शरीफ़ माने जाते
पार्सल, मनीआर्डर, रजिस्टर्ड पोस्ट,
ग्रीटिंग कार्ड
और भी सौ काम थे
राशन से कम कीमती नहीं थी चिट्ठियाँ
एक से पेट भरता दूसरे से मन
वो दिन जब डाकघर जाना हो तो
लड़की अपना सबसे अच्छा सूट
निकालती
पोस्ट ऑफिस उन बैरंग चिट्ठियों का भी
ठिकाना था
जो एकदम सही पते पर पहुँचती
कुछ बेनामी ख़त जो आँखों-आँखों में
पढ़ लिए जाते
इन दिनों डाकघर सूने हो गए हैं
अब आँखों पर भी चश्मा चढ़ गया है।

– श्रुति कुशवाहा

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 22 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अलीगढ़ में धर्मांतरण के नेटवर्क पर ऐक्टिव हुई खुफिया एजेंसियां

● जिले में जनवरी से अब तक 97 महिलाएं लापता हैं ● लगातार गायब हो रही महिलाओं का राज क्या है?

अलीगढ़ (एजेंसी)। आगरा में अवैध धर्मांतरण गिरोह के खुलासे के बाद अलीगढ़ में खुफिया एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। पहले अवैध धर्मांतरण और विदेशी फंडिंग में दोषी पाए गए उमर गौतम का नेटवर्क अलीगढ़ तक फैला था। उसकी गिरफ्तारी के बाद मिली लिस्ट में 33 महिलाओं के नाम थे, जिन्होंने 2018 में धर्मांतरण किया था। इनमें से तीन महिलाएं अलीगढ़ की थीं। वह नौकरी का लालच देकर लोगों का धर्मांतरण करवाता था। जिले में जनवरी से अब तक 97 महिलाएं लापता हैं, जिनमें 17 किशोरियां हैं। खुफिया एजेंसियां धर्मांतरण के एंगल से भी जांच कर रही हैं। धर्मांतरण के मुख्य आरोपी छांगुर का अलीगढ़ से कोई कनेक्शन है या नहीं, इसकी भी जांच की जा रही है। आगरा पुलिस की छह राज्यों में कार्रवाई के बाद अलीगढ़ पुलिस भी सक्रिय हो गई है। पहले भी अलीगढ़ में धर्मांतरण के मामले सामने आ चुके हैं और आरोपियों के तार अलीगढ़ से जुड़े रहे हैं। आगरा में धर्मांतरण गिरोह का पर्दाफाश होने के बाद अलीगढ़ में भी सतर्कता बढ़ा दी गई है। खुफिया एजेंसियां इस मामले की गहराई से जांच कर रही हैं। पहले उमर गौतम नाम का एक व्यक्ति अवैध धर्मांतरण और विदेशी फंडिंग के मामले में दोषी पाया गया था। जांच में पता चला है कि उसने अलीगढ़ में भी अपना नेटवर्क फैला रखा था। जब उमर गौतम को गिरफ्तार किया गया, तो उसके पास एक लिस्ट मिली। इस लिस्ट में 33 महिलाओं के नाम थे, जिन्होंने 2018 में धर्मांतरण किया था। इन 33 महिलाओं में से तीन अलीगढ़ की रहने वाली थीं। उमर गौतम लोगों को नौकरी का लालच देकर उनका धर्म बदलवाता था।

अलीगढ़ जिले में इस साल जनवरी से लेकर अब तक 97 महिलाएं लापता हो चुकी हैं। इनमें 17 नाबालिग लड़कियां भी शामिल हैं। खुफिया एजेंसियां इस बात की भी जांच कर रही हैं कि कहीं इन महिलाओं का धर्मांतरण तो नहीं करा दिया गया। धर्मांतरण के मुख्य आरोपी छांगुर पर कार्रवाई होने के बाद, एजेंसियां यह पता लगाने में जुटी हैं कि क्या उसका अलीगढ़ से कोई संबंध है। हालांकि, अभी तक ऐसा कोई कनेक्शन सामने नहीं आया है। आगरा पुलिस ने इस मामले में छह राज्यों में कार्रवाई की है, जिसके बाद अलीगढ़ पुलिस भी हरकत में आ गई है।

जयपुर की लाइफ लाइन बीसलपुर बांध से आई खुशखबरी, आज जुलाई में पहली बार खुलेंगे गेट

जयपुर (एजेंसी)। राजधानी जयपुर की लाइफ लाइन बीसलपुर बांध अब आठवीं बार मुस्कुराने के लिए तैयार है। बीसलपुर बांध के गेट पहली बार जुलाई महीने में खोले जाएंगे। इसको लेकर बीसलपुर बांध प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। इस दौरान जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत 22 जुलाई को सुबह 10 :00 बजे पूजा अर्चना के बाद बांध के गेट खोलेंगे। इधर, बीसलपुर बांध के गेट खोले जाने की खबर से क्षेत्र के लोगों में उत्सुकता फैल गई है। बता दें कि यह पहला मौका है कि जब बीसलपुर बांध के गेट जुलाई महीने में खोले जा रहे हैं।

2006 में कैसे दहली थी मायानगरी?

● 11 मिनट, 7 धमाके और 189 मौतें; 19 साल बाद भी इंसाफ की दरकार, 12 आरोपी बरी

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के स्टेशनों पर दफ्तर से लौट रहे लोगों की भारी भीड़ थी। मायानगरी की लाइफलाइन कही जाने वाली लोकल ट्रेनें भी यात्रियों से खचाखच भरी थीं। तभी अचानक एक जोरदार ब्लास्ट हुआ। धमाके की आवाज सुनते ही स्टेशन पर भगदड़ मच गई। इससे पहले की लोग कुछ समझ पाते एक के बाद एक सात लोकल ट्रेनों में हुए बम ब्लास्ट ने पूरी मुंबई को हिलाकर रख दिया।

पहला ब्लास्ट शाम 6.24 बजे हुआ, जिसके बाद महज 11 मिनट में लगातार 7 धमाके हुए। सभी धमाके लोकल ट्रेनों के फर्स्ट क्लास कंपार्टमेंट नें हुए थे। इस हादसे में 189 लोगों की जान चली गई। इसी के साथ मायानगरी भी कुछ पलों के थम सी गई थी।

हाईकोर्ट ने 12 आरोपियों को किया रिहा- मुंबई ट्रेन ब्लास्ट में मारे गए लोगों का परिवार आज भी न्याय की राह देख रहा है। लोकल ट्रेनों में हुए इन धमाकों ने कई जिंदगियों को तबाह कर दिया था।

कैंसर से जीतकर जीवन की नई शुरुआत करने वाले बच्चे सच्चे योद्धा हैं: राज्य मंत्री

'पासपोर्ट टू लाइफ (पी2एल)' सर्वाइवरशिप क्लीनिक भोपाल का किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा है कि कैंसर से जीतकर जीवन की नई शुरुआत करने वाले बच्चे सच्चे योद्धा हैं। उनकी आगे की ज़िंदगी को सुरक्षित, स्वस्थ और सम्मानपूर्ण बनाना हम सबकी साझा ज़िम्मेदारी है। कैनकिड्स द्वारा सर्वाइवरशिप क्लिनिक और केयर प्लान इस दिशा में उत्कृष्ट प्रयास है। राज्य मंत्री श्री पटेल ने कैनकिड्स संस्था के 'पासपोर्ट टू लाइफ (सर्वाइवरशिप)' परियोजना के अंतर्गत राज्य स्तरीय सर्वाइवरशिप क्लीनिक (पी2एल क्लिनिक) भोपाल का शुभारंभ किया।

राज्यमंत्री श्री पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन एवं उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल के नेतृत्व में प्रदेश सरकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास के लिये निरंतर कार्य कर रही है। सरकार की प्राथमिकता है कि गंभीर बीमारियों से पीड़ित हर बच्चा न केवल जीवन रक्षक इलाज पाए, बल्कि इलाज के बाद की ज़रूरतों की भी समुचित पूर्ति हो। कार्यक्रम में कैनकिड्स संस्था द्वारा तैयार किए गए सर्वाइवर केयर प्लान का विमोचन भी राज्य मंत्री श्री पटेल द्वारा किया गया। यह केयर प्लान कैंसर से उबर चुके बच्चों के दीर्घकालीन स्वास्थ्य प्रबंधन, नियमित फॉलोअप, पोषण, मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक पुनर्वास जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

राज्यमंत्री श्री पटेल ने कैंसर से उबर चुके बच्चों से संवाद किया, उन्हें प्रोत्साहित किया और उनके साहस की सराहना करते हुए कहा कि आप सभी ने बीमारी को नहीं बल्कि हालात को भी हराया है। आप सबके लिए प्रेरणा हैं। प्रदेश सरकार आपकी आगे की यात्रा को सरल, सुरक्षित और संबलयुक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य मंत्री श्री पटेल ने कहा कि कैंसर के इलाज के बाद फॉलोअप महत्वपूर्ण है। हमारे समाज में जानकारी के अभाव, आर्थिक कठिनाइयों और दूरी के कारण कई बच्चे जरूरी देखरेख से वंचित रह जाते हैं। यह पहल इन सभी बाधाओं को दूर करने में सहयोगी होगी।

कैनकिड्स की सह-संस्थापक एवं निदेशक श्रीमती सोनल शर्मा ने बताया कि संस्था द्वारा पहले से ही इंदौर के एम.वाई. अस्पताल, सैम्स तथा जबलपुर के नेताजी सुभाषचंद्र बोस मेडिकल कॉलेज में पी2एल क्लिनिक संचालित किए जा रहे हैं। अब भोपाल में राज्य स्तरीय क्लिनिक की शुरुआत के साथ संस्था का उद्देश्य प्रदेश के हर जिले तक सेवा पहुंचाना है। कार्यक्रम में स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा विभाग सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, डॉक्टर्स, कैंसर से उबरे बच्चे तथा उनके परिजन उपस्थित रहे।

राहुल गांधी ने सरकार पर लगाया पक्षपात का आरोप

'मैं विपक्ष का नेता, फिर भी मुझे बोलने नहीं दे रहे'

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र के पहले दिन हंगामे और स्थगन के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पक्षपात का आरोप लगाते हुए कहा कि विपक्ष का नेता होने के बावजूद उन्हें लोकसभा में बोलने नहीं दिया गया। सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद राहुल ने संसद भवन के बाहर संवाददाताओं से कहा, रक्षा मंत्री और सरकार के अन्य लोगों को बोलने की इजाजत है, लेकिन विपक्षी नेताओं को बोलने नहीं दिया जा रहा। मैं विपक्ष का नेता हूं, बोलना मेरा अधिकार है, मुद्दे उठाना मेरा काम है, लेकिन वे मुझे बोलने नहीं दे रहे।

सुप्रीम कोर्ट की ईडी को फटकार

● सिद्धारमैया की पत्नी को समन भेजने पर कहा- राजनीतिक लड़ाई चुनाव तक ठीक, इसके लिए एजेंसियों का इस्तेमाल क्यों

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को फटकार लगाते हुए कहा कि राजनीतिक लड़ाइयां चुनाव में लड़ी जानी चाहिए, जांच एजेंसियों के जरिए नहीं। ईडी का इस तरह इस्तेमाल क्यों हो रहा है? ये टिप्पणी सीजेआई बीआर गवई और जस्टिस के.विनोद चंद्रन की बेंच ने सोमवार को मैसूर अर्बन डेवलपमेंट बोर्ड (एमयूडीए) केस में ईडी की अपील की सुनवाई के दौरान की। सीजेआई ने कहा कि हमारा मुंह मत खुलवाइए। नहीं तो हम ईडी के बारे में कठोर टिप्पणियां करने के लिए मजबूर हो जाएंगे। दरअसल, ईडी ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की पत्नी बीएम पार्वती को एमयूडीए केस में समन भेजा था।

बांग्लादेश वायुसेना का विमान कॉलेज परिसर में गिरा, 19 लोगों की मौत, 160 घायल

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश वायुसेना का विमान एफ-7 बीजीआई ढाका के उत्तरा क्षेत्र के दियाबारी इलाके में माइलस्टोन स्कूल और कॉलेज परिसर में गिर गया। शुरुआती जानकारी के मुताबिक हादसे में 19 लोगों की मौत हुई है, जबकि करीब 160 से अधिक लोग घायल हुए हैं। घायलों में कई बच्चे बताए जा रहे हैं। इस विमान हादसे के बाद पूरे क्षेत्र में चीख-पुकार मच गई। विमान हादसे में अभी तक 19 लोगों की मौत हो गई है।

मुंबई में एअर इंडिया का विमान रनवे से फिसला

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई एयरपोर्ट पर सोमवार सुबह एअर इंडिया का एआई 2744 प्लेन लैंडिंग के दौरान रनवे से फिसल गया। ये विमान कोच्चि से मुंबई आया था। मुंबई में भारी बारिश के कारण रनवे पर फिसलन था, जिससे विमान रनवे से 16 से 17 मीटर दूर घास पर चला गया। ये हादसा सुबह 9:27 बजे हुआ। विमान के दाहिने इंजन के नैसेल (ढक्कन) को नुकसान पहुंचा है।

बारिश ने बढ़ाई परेशानी, वैष्णो देवी यात्रा रुकी, पुराने रूट पर रियासी में भूस्खलन

1 की मौत 9 घायल, मुंबई में सड़कों पर पानी भरा

हिमाचल में लैंडस्लाइड से पति-पत्नी की मौत, व्यास नदी उफान पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में रविवार रात से भारी बारिश हो रही है। चंबा जिले की चडी पंचायत में पहाड़ी से घर पर बड़ा पत्थर गिरने से दंपती की मौत हो गई। इनकी 5 महीने पहले ही शादी हुई थी। आज हिमाचल के 4 जिलों के 9 सब डिवीजन में स्कूलों की छुट्टी कर दी गई है। वहीं व्यास नदी उफान पर हैं।

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में सोमवार सुबह वैष्णो देवी के पुराने रास्ते पर भूस्खलन हुआ, जिसमें 1 यात्री की मौत हो गई, 9 श्रद्धालु घायल हो गए।

खबर लिखे जाने तक यात्रा रोक दी गई थी। इधर, लेह की नुब्रा घाटी से एयरफोर्स ने फंसे 21 नागरिकों का रेस्क्यू किया। ये सभी बाढ़-बारिश और लैंडस्लाइड के कारण यहां फंसे हुए थे। मुंबई में रविवार रात से ही तेज बारिश जारी थी, अंधेरी इलाके में सड़कों पर जलभराव हो गया है। इस वजह से लोगों को परेशानियों को सामना करना पड़ रहा है।

यूपी में लगातार बारिश से नदियां उफनी- वहीं, यूपी में लगातार बारिश से नदियां और डैम उफान पर हैं। महोबा में उर्मिल बांध के 7 फाटक एक साथ खोले गए, जिससे कैमाहा गांव में बाढ़ आ गई। गांव के 3 मकान ढह गए। छत्तीसगढ़ में मौसम विभाग ने सभी जिलों में आज बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने हिमाचल, उत्तराखंड, तेलंगाना, कर्नाटक राज्यों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। बाकी पूरे देश में आज बारिश का यलो अलर्ट है।

राजस्थान के अजमेर में विधानसभा स्पीकर ने जलभराव क्षेत्र का किया दौरा- राजस्थान के अजमेर में विधानसभा स्पीकर वासुदेव देवनानी, कलेक्टर लोकबंधु और नगर निगम आयुक्त देशलदान ने जलभराव क्षेत्र का दौरा कर हालात का जायजा लिया।

गोवा से इंदौर आ रही फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग

गोवा से इंदौर आ रही इंडिगो की फ्लाइट में उड़ान के दौरान तकनीकी खराबी आ गई। फ्लाइट की इंदौर में ही इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। एयरपोर्ट प्रबंधन से मिली जानकारी के अनुसार गोवा से इंदौर आ रही इंडिगो की उड़ान संख्या 6ई813 की इमरजेंसी लैंडिंग हुई। बताया जा रहा है कि अंडर कैरिज वॉर्निंग के चलते फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई थी। प्रबंधन के मुताबिक विमान की सुरक्षित लैंडिंग हुई है।

केरल के पूर्व मुख्यमंत्री वी.एस. अच्युतानंदन का 101 साल की उम्र में निधन

नईदिल्ली (एजेंसी)। केरल के पूर्व मुख्यमंत्री अच्युतानंदन का निधन हो गया है। उन्होंने 101 साल की उम्र में प्राइवेट अस्पताल में ली अंतिम सांस ली। वे केरल के एक बहुत बड़े और प्रभावशाली कम्युनिस्ट नेता थे। उनका पूरा नाम वेलिक्कथु शंकरन अच्युतानंदन था।

जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट ने बांधों की मांगी रिपोर्ट

विधानसभा सत्र के पहले प्रमुख इंजीनियर देंगे जानकारी ; शहरी सीमा में शामिल हुए कई डैम

भोपाल (नप्र)। बारिश के कारण लबालब हुए बांधों और जल भराव के चलते पानी निकासी की स्थिति को देखते हुए जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट ने प्रदेश के सभी बांधों की रिपोर्ट तलब की है। मंत्री ने विभाग के प्रमुख इंजीनियर्स से यह खासतौर पर पूछा है कि प्रदेश में ऐसे कितने बांध हैं, जो वर्तमान में शहरी सीमा में आ गए हैं।

सरकार ऐसे बांधों को लेकर भविष्य में नई कार्ययोजना बनाने की तैयारी में है। इसके अलावा, जल संसाधन विभाग के रेस्ट हाउस की दशा सुधारने को लेकर भी विभाग प्लान तैयार कर रहा है।

प्रदेश के सभी मुख्य अभियंता, परियोजना संचालकों को पत्र लिखकर जल संसाधन विभाग के प्रमुख अभियंता ने कहा है कि विभाग के मंत्री तुलसी सिलावट मानसून सत्र के पहले विभाग की समीक्षा बैठक लेने वाले हैं। ऐसे में सभी अधिकारी इस जानकारी के साथ बैठक में मौजूद रहेंगे।

शहरी सीमा में आ चुके ये बांध

- प्रदेश में शहर के किनारे कई बांध हैं, जिनमें से कोलार बांध, केरवा बांध और कलियासोत बांध हैं।
- ये बांध भोपाल शहर के पास स्थित हैं। कलिया सोत और केरवा तो काफी हद तक शहरी सीमा में भी हैं।
- इसके अलावा भोपाल का हथाईखेड़ा डैम में शहरी सीमा में आ गया है।
- भदभदा बांध भोपाल में स्थित है और शहर के लिए पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

मंत्री ने अफसरों से मांगी यह जानकारी

- विभाग के आधिपत्य में कितने भवन हैं, कितनी संपत्तियां हैं? इसकी चीफ इंजीनियर क्षेत्र वार जानकारी दी जाना है।
- विभाग के अधीन कितने रेस्ट हाउस, इंस्पेक्शन बिल्डिंग है? इसकी विस्तृत जानकारी देने के लिए कहा गया है।
- विभाग या चीफ इंजीनियर क्षेत्र के ऐसे सभी बांधों की सूची दी जाए, जो वर्तमान में शहरी क्षेत्र में आ गए हैं।
- विभाग की ऐसी नहरों का ब्योरा मांगा गया है, जिसके अंतिम छोर तक पिछले रबी सीजन में पानी नहीं पहुंचा है।
- बांध और नहरों के सुधार के लिए राशि का ब्योरा दिया जाए।
- विधानसभा के फरवरी 2024 में हुए सत्र के दौरान जिन ध्यानाकर्षण प्रस्तावों का जवाब दिया गया है, उसकी जानकारी भी मंत्री ने अलग से मांगी है।

युवक के मर्डर के विरोध में जयपुर-आगरा हाईवे जाम, पथराव

पुलिस से धक्का-मुक्की; मुख्य आरोपी ने एएसआई की पिस्टल छीनने की कोशिश की, पैर में गोली लगी

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में युवक की हत्या के बाद गुस्साई भीड़ ने जयपुर-आगरा हाईवे (जामडोली) जाम कर दिया। पुलिस ने समझाने की कोशिश की तो जमकर धक्का-मुक्की हुई। दुकानों पर पथराव किया। इससे कई दुकानें क्षतिग्रस्त हो गईं। एक जवान भी घायल हो गया। सुबह 9 बजे से आगरा रोड पर अफरा-तफरी का माहौल है।मामला बिगड़ता देख पुलिस ने भीड़ को खदेड़ दिया। मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात है। प्रदर्शनकारी 50 लाख रुपए मुआवजा, मृतक आश्रित को सरकारी नौकरी, जामडोली थानाधिकारी के निलंबन (सस्पेंड), फास्ट ट्रैक कोर्ट में केस की सुनवाई जैसी मांगों पर अड़े हैं। मामले में मुख्य आरोपी सहित 6 को डिटेन कर पूछताछ की जा रही है। डीसीपी तेजस्विनी गौतम ने बताया- सुबह पुलिस आरोपियों को जामडोली थाने ला रही थी। इस दौरान हिस्ट्रीशीटर अनस खान ने एएसआई की पिस्टल छीनने की कोशिश की। बीचबचाव में उसके दोनों पैर में गोली लग गई।

इंदौर के दो मेडिकल कॉलेज इंडेक्स और 'सेवाकुंज' की 300 सीटें खत्म कर दी गईं

कार्रवाई को पिछले दिनों हुए सीबीआई के छापे से जोड़कर देखा जा रहा

इंदौर। यहां के एक मेडिकल कॉलेज 'इंडेक्स मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर' की सभी 250 सीटें हटा दी गई। नेशनल मेडिकल काउंसिल (एनएमसी) ने शनिवार को नीट की फर्स्ट काउंसिलिंग के लिए जो शेड्यूल और कॉलेज की लिस्ट जारी की यह कार्रवाई उसके तहत की गई। इसमें इंदौर के दो मेडिकल कॉलेजों की 300 सीटें हटाने का फैसला किया गया।

इंडेक्स के लिए यह जीरो ईयर होगा। वहीं, एलएनसीटी कॉलेज और सेवाकुंज हॉस्पिटल की 150 में से 50 सीटें कम की गई हैं। कार्रवाई को पिछले दिनों हुए सीबीआई के छापे से जोड़कर देखा जा रहा है। यह पहली बार है, जब किसी एजेंसी की कार्रवाई के बाद एमसीआई ने वहां की सभी सीटें शून्य घोषित कर दी। कुछ वर्ष पहले एक कॉलेज के लिए भी जीरो ईयर घोषित किया गया था, पर छात्र कोर्ट चले गए थे तो अन्य मेडिकल कॉलेज में उनकी पढ़ाई का इंतजाम किया गया था। सालाना मान्यता के नवीनीकरण को लेकर सीबीआई ने पिछले दिनों मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के 40 से ज्यादा संस्थानों पर कार्रवाई की थी। इन पर मान्यता रिन्यू कराने में फर्जीवाड़े का आरोप है। मामले में 35 से ज्यादा लोगों पर एफआईआर दर्ज की गई है। सीबीआई अभी मामले की जांच कर रही है। इस बीच 19 जुलाई को एनएमसी ने एमबीबीएस की सीटों पर काउंसिलिंग के फर्स्ट राउंड के लिए देशभर के कॉलेजों की सूची जारी की है। एक्सपर्ट का मानना है कि पहली ही काउंसिलिंग में जिन कॉलेजों की सीटें कम की गई हैं तो आगे भी उन्हें जोड़ना संभव नहीं है। बाकी के राउंड में सिर्फ सीट अपग्रेड होती हैं, नई सीटें नहीं जोड़ी जाती हैं। इस विषय में दोनों ही कॉलेज प्रबंधन चुप हैं।

स्टेट और नेशनल की आधी-आधी सीटें - राज्यों की मेडिकल परीक्षाएं बंद होने के बाद से नीट में राज्य और नेशनल कोटे की 50-50 फीसदी सीटें कर दी गई हैं। काउंसलिंग मेरिट के आधार पर होती हैं। आधी सीटें राज्य की मेरिट के आधार पर और बाकी नेशनल मेरिट के आधार पर भरी जाती हैं। मप्र में एकदम 300 सीटें कम होने से स्टेट और नेशनल दोनों ही तरह के छात्रों को खासा नुकसान उठाना पड़ेगा।

फर्जी फेस रिक्गनाइजेशन एप

एनएमसी ने सभी टीचर्स के लिए फेस रिक्गनाइजेशन सिस्टम लागू किया है। इसके तहत माना गया था कि टीचर्स को कॉलेज आना ही पड़ेगा, लेकिन कुछ कंपनियों ने इसका भी तोड़ निकाल लिया। एक कंपनी मात्र सात हजार रुपए में ऐसा मोबाइल उपलब्ध करा रही है, जिसके आधार पर टीचर्स घर बैठे अटेंडेंस लगा रहे हैं। मेडिकल काउंसिल ने जब थम्ब इम्प्रेशन अनिवार्य किया, तो कई कॉलेजों ने टीचर्स के थम्ब स्कैन कर अटेंडेंस लगाना शुरू कर दिया। कई टीचर्स आधी तनख्वाह में केवल नाम के लिए रोल पर रहते हैं ताकि प्रोफाइल बनी रहे और आगे सरकारी कॉलेज में मौका मिल सके। इसके अलावा मरीजों के लिए तय मापदंडों के अनुसार मेडिकल कॉलेज के अस्पताल की 80 प्रतिशत बेड फुल होने चाहिए। हकीकत में यह संभव नहीं होता। ऐसे में कई मेडिकल कॉलेज वोटर लिस्ट से नाम उठाकर 12 रु. में मरीज की फर्जी फाइल तैयार कर लेते हैं। सीबीआई ने अपनी जांच में इंडेक्स समेत कई कॉलेजों में ऐसी गड़बड़ी पायी थी।

इंदौर से पुणे जा रही बस में कंटेनर से टक्कर के बाद आग, 2 घायल

यात्रियों ने जलती बस से कूदकर जान बचाई, बस खाक

इंदौर। निजी ट्रेवल्स की स्लीपर बस शाम को पुणे के लिए निकली थी। इस बस में बायपास पर कंटेनर ने टक्कर मार दी। इससे बस चालक और आठ यात्री घायल हुए। इसमें एक महिला भी शामिल है। टक्कर के बाद बस के बस के अगले हिस्से में आग लग गई। घटना रविवार की है। हादसे के बाद यात्री घबरा गए थे। इस घटना के बाद हाईवे पर ट्रैफिक बाधित हुआ। आग बुझाने के लिए दमकल पहुंची, उससे पहले बस को आग ने चपेट में ले लिया। यह हादसा महू बायपास के बाद हुआ। टक्कर से आठ यात्रियों को चोटें आईं, लेकिन आग के कारण कोई हताहत नहीं हुआ। बस पूरी तरह आग की चपेट में आती, उससे पहले 40 से ज्यादा यात्री बस से सुरक्षित निकल गए। ड्रायवर को बड़ी मुश्किल से निकाला गया।

टक्कर के बाद बस के बस के अगले हिस्से में आग लग गई। धुआं निकलते देख यात्रियों ने बस से उतरना शुरू कर दिया। जब तक बस को आग पूरी तरह चपेट में लेती, उससे पहले यात्री सुरक्षित उतर गए थे। हालांकि उनके लगेज नहीं निकाले जा सके। कंटेनर से टक्कर आगे से हुई। बस का अगला हिस्सा क्षतिग्रस्त हुआ और आग भी उसी हिस्से में लगी। सीट पर फंसे चालक को यात्रियों ने बड़ी मुश्किल से गेट खोलकर निकाला। यात्रियों ने बताया कि टक्कर के बाद बस के आगे के केबिन से धुआं उठते देखा गया था। बस के कंडक्टर ने बताया कि कंटेनर से धुआं उठ रहा था। इस कारण चालक को कुछ नजर नहीं आया। अचानक बस कंटेनर से टकरा गई और उसमें आग लग गई। घटना की जानकारी मिलने के बाद महू और पीथमपुर पुलिस भी मौके पर पहुंची गई थी। आग लगने की सूचना फायर ब्रिगेड को दी गई, लेकिन उसे पहुंचने में आधे घंटे का समय लगा, तब तक बस पूरी तरह जल कर खाक हो चुकी थी। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में ले जाया गया। हादसे से घबराए यात्रियों को पुणे पहुंचाने के लिए बस ऑपरेटर ने दूसरी बस की व्यवस्था की।

विधानसभा क्षेत्र-1 में 6 करोड़ के कार्यों का लोकार्पण, भूमिपूजन

झूले, ओपन जिम, ड्रेनेज, सड़क और बगीचों की सौगात

इंदौर। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने रविवार को विधानसभा क्षेत्र 1 के वार्ड 4 को विकास की सौगातों से नवाजा। उन्होंने 6 करोड़ से अधिक लागत के 21 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। कार्यक्रम में बच्चों के लिए झूले-चकरी और युवाओं-बुजुर्गों के लिए ओपन जिम सेट की सौगात दी गई,जिनकी कुल लागत 2.5 करोड़ से अधिक है। सभी बगीचों के रखरखाव के लिए स्थानीय नागरिकों की समिति बनाने की घोषणा भी की गई। शिक्षक नगर स्थित स्व गोपाल मालू उद्यान में पौधारोपण कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इंदौर को लगातार 8वीं बार स्वच्छता में नंबर-1 बनाने वाले महिला सफाई मित्रों का पुष्प वर्षा कर सम्मान किया गया। विजयवर्गीय ने कहा, जनसेवा ही ईश्वर सेवा है। आज बच्चों को मोबाइल की लत लग चुकी है। मांओं से निवेदन है कि बच्चों को घर का पौष्टिक भोजन दें, संस्कार सिखाएं, व्यायाम की आदत डालें। उन्होंने कहा कि रामचरितमानस जैसे ग्रंथों से बच्चों का चरित्र निर्माण होगा,न कि आज के टीवी सीरियलों से जो विकृति फैला रहे हैं। करीब 34 स्थलों पर ड्रेनेज, सीमेंटीकरण, योग शेड, सड़क और सार्वजनिक सुविधाओं के कार्यों का भूमिपूजन कर क्षेत्रीय जनता को बड़ी सौगात दी गई। कार्यक्रम में महापौर पुष्यमित्र भार्गव,पूर्व विधायक आकाश विजयवर्गीय व अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

इंदौर-देवास में बाइक चोर गिरोह धराया, 34 बाइक जब्त

कंजरों से सीखी चोरी, सुनसान खंडहरों में छुपाते गाड़ियां

इंदौर। इंदौर और देवास में लंबे समय से बाइक चोरी की घटनाओं से परेशान पुलिस को आखिरकार बड़ी सफलता हाथ लगी है। थाना लसूडिया पुलिस ने शातिर वाहन चोर गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से 22 लाख की 34 चोरी की बाइकें बरामद की गई हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि ये बदमाश देवास के पीपलरावां क्षेत्र के कंजर गिरोह से चोरी का प्रशिक्षण लेकर आए थे और बेहद फिल्मी अंदाज में वारदात को अंजाम देते थे। आरोपी पहले गाड़ियों की वायर काटकर उन्हें डायरेक्ट करते और फिर सुनसान खंडहरों, पार्किंग लॉट या झाड़ियों में छिपा देते थे। जब खरीदार से कंपनी और रंग के हिसाब से ऑर्डर मिलता, तो उसी स्पेसिफिकेशन की बाइक चोरी कर डिलीवर करते। गिरफ्तार आरोपियों के पास से फर्जी इंजन और चेचिस नंबर चढ़ाने के उपकरण- जैसे ग्राइंडर, धातु की डाई, गैस लाइटर, छैनी-हथौड़ी आदि भी मिले हैं। 3 बाइकें फर्जी नंबरों के साथ पकड़ी गई हैं।झ पूछताछ में खुलासा हुआ कि मुख्य खरीदार जितेंद्र सिंह सेंधव,देवास जिले के गांवों में चोरी की बाइक बेचता था। गिरोह के हर सदस्य की जिम्मेदारी तय थी, कोई चोरी करता,कोई नंबर बदलता और कोई बिकवाली करता। अब तक इंदौर और देवास में दर्ज 19 एफआईआर से इनका कनेक्शन सामने आया है। थाना प्रभारी तारेश सोनी और उनकी टीम की यह बड़ी कामयाबी मानी जा रही है। पुलिस आरोपियों से और खुलासे की उम्मीद कर रही है।

नशे से दूरी की रैली एवं शपथ कार्यक्रम

इंदौर। मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा चलाए जा रहे विशेष जागरूकता अभियान 'नशे से दूरी है जरूरी' के तहत रविवार को लसूड़िया थाना क्षेत्र में बोल बम कांवड़ यात्रा के दौरान जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सहायक पुलिस आयुक्त (यातायात) तारेश कुमार सोनी व थाना प्रभारी लसूड़िया ने हजारों कांवड़ियों व श्रद्धालुओं को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई। इस मौके पर उपस्थित जनसमुदाय को नशे की शारीरिक,मानसिक व सामाजिक हानियों के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही बताया गया कि नशा कैसे परिवारों को बर्बाद कर देता है व घरेलू कलह का कारण बनता है। लोगों से अपील की गई कि वे स्वयं भी नशे से दूर रहें और दूसरों को भी प्रेरित करें।

अहमदाबाद विमान हादसे में मृत इंदौर की बहू हरप्रीत के नाम से ट्रस्ट बनेगा

दो लाख रुपए से ट्रस्ट गठित, सारा मुआवजा ट्रस्ट को दिया जाएगा

इंदौर। 12 जून को अहमदाबाद में हुए विमान हादसे में जान गंवाने वाली इंदौर की बहू हरप्रीत कौर के परिजनों ने फैसला लिया है कि इस हादसे के कारण मिलने वाले मुआवजे की राशि से महिलाओं और बच्चों की सेवा की जाएगी। इसके लिए एक ट्रस्ट बनाया गया है। अहमदाबाद प्लेन क्रैश में दिवंगत हुई हरप्रीत कौर, अब उनके नाम पर होने वाले सेवा कार्यों से याद की जाएगी।

सिख समाज के आठवें गुरु श्री हर किशन साहिब के प्रकाश पर्व के मौके हरप्रीत कौर के परिजनों ने सेवा कार्यों के लिए राम हरप्रीत मेमोरियल ट्रस्ट का गठन कर श्री गुरु सिंघ सभा इंदौर को दो लाख की राशि प्रदान कर इस कार्य की शुरुआत कर दी है। इसके साथ ही परिजनों ने यह संकल्प भी लिया है कि उक्त विमान हादसे के कारण मुआवजे के रूप में अब जितनी भी राशि आएगी उसकी बैंक में एफडी कर उससे मिलने वाले ब्याज से जरूरतमंदों की मदद की जाएगी। संत नगर स्थित गुरुद्वारे में मनाए गए गुरु प्रकाश पर्व के मौके पर हरप्रीत कौर के नाम पर सेवा के कार्य की शुरुआत की गई।

हरप्रीत कौर के पिता महेन्द्रपाल सिंह होरा, बलजीत कौर होरा कल अहमदाबाद से इंदौर पहुंचे और श्री गुरु सिंघ सभा के प्रधान हरपाल सिंघ भाटिया के हाथों में ट्रस्ट का वो पत्र सौंपा, जिसमें प्रारंभिक दो लाख के अंशदान से शुरुआत करने की लिखित सहमति दी गई।झ हरप्रीत कौर के पिता अहमदाबाद के कारोबारी महेन्द्रपाल सिंह होरा ने कहा कि हरप्रीत बचपन से ही वे गुरुमुखी अध्ययन, शब्द कीर्तन और सामाजिक आयोजनों में रुचि रखती थीं। गुरुद्वारे के सेवा कार्यों में भी सक्रिय रूप से सहभागी रहती थीं। ऐसे में उनकी स्मृतियों को समाज कल्याण से जोड़ने के उद्देश्य से राम हरप्रीत मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना की गई है, जो महिलाओं और बच्चों के शिक्षा, स्वास्थ्य हेतु कार्य करेगा। इस ट्रस्ट की शुरुआत प्रारंभिक अंशदान राशि दो लाख रु से की गई है।

आने वाले समय में एयर इंडिया, टाटा ट्रस्ट, बीमा कंपनियों अन्य माध्यम से जो भी मुआवजा या वित्तीय सहायता प्राप्त होती है, तो वह राशि भी इसी ट्रस्ट को समर्पित की जाएगी। इस निर्णय पर श्री इंदौर गुरु सिंघ सभा के प्रधान हरपाल सिंघ भाटिया ने अपनी सहमति दी और कहा कि गुरु सिंघ सभा इस सोच को सेल्यूट करती है। गत 12 जून 2025 को हुए प्लेन क्रैश में हरप्रीत सदा के लिए अपने परिवार से बिछड़ गई। हरप्रीत कौर की ससुराल इंदौर में है इसलिए इस ट्रस्ट की शुरुआत यहां से की गई है।

इंदौर के 2 युवक भैरव कुंड में डूबे पिकनिक मनाने गए थे तलाश जारी

भैरव कुंड 300 फीट नीचे और घने जंगलों के बीच स्थित

इंदौर। पिकनिक स्पॉट भैरव कुंड में पिकनिक मनाने गए दो युवक डूब गए। उनकी तलाश जारी है। रविवार को अपने 6-6 दोस्तों के ग्रुप के साथ गौरव पिता राजेश कांचले निवासी रामकृष्ण कॉलोनी इंदौर व विवेक पिता भरत वर्मा (32) निवासी अभिनंदन नगर पिकनिक मनाने गए थे। कुंड में नहाने के दौरान गौरव डूबने लगा तो उसे डूबते देख विवेक बचाने के लिए पानी में उतरा और दोनों डूब गए। इसके बाद उनके साथियों ने मदद के लिए शोर मचाया तो ग्रामीण और बाद में पुलिस भी मौके पर पहुंची। दोनों युवकों की तलाश जारी है। बताया जाता है कि दोनों ही अलग-अलग अपने 12 दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने भैरव कुंड गए थे।

भैरव कुंड लगभग 300 फीट नीचे और घने जंगलों के बीच स्थित है, जहां से ऊपर का हिस्सा इंदौर जिले के अंदर आता है और भैरव कुंड का नीचे का स्थान देवास जिले के उदयनगर थाना क्षेत्र में आता है। खुड़ैल थाना के अंतर्गत इंदौर जिले में मोहाड़ी, गिद्दा खो, हत्यारी खो में पिछले दो सालों के अंदर लगभग 8 से 10 मौतें हो चुकी हैं। पूर्व में हुई घटना को देखते हुए खुड़ैल पुलिस ने डीएसपी उमाकांत चौधरी व कम्पेल चौकी प्रभारी सत्येंद्र सिंह सिसोदिया के नेतृत्व में बड़ा अभियान चलाते हुए लोगों को यहां पर आने के लिए मना करते हुए यहां से भगाया भी और जगह-जगह पर सूचना पटल भी लगाए। लेकिन, फिर भी पिकनिक स्पाट पर लोगों का आना-जाना लगा रहा। मृतक विवेक पिता भरत वर्मा एमआर का काम करता था, वहीं गौरव कक्षा 12 में पढ़ता था और वह पढने वाले दोस्तों के साथ पिता को यह कहकर गया था कि मैं अभी दस-पंद्रह मिनट में आता हूं और वह अपने दोस्तों के साथ नहाने के लिए भैरव कुंड पहुंच गया था।

सरप्राइज कॉम्बिंग गश्त में 1338 बदमाश चेक, 568 पर कार्रवाई

इंदौर। शहर में अपराध और अपराधियों पर शिकंजा कसने के उद्देश्य से पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह के निर्देशन में 19-20 जुलाई की रात सरप्राइज कॉम्बिंग गश्त की गई। एडिशनल कमिश्नर अमित सिंह एवं मनोज कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में चारों जोन, यातायात डीसीपी और सभी थानों की पुलिस टीमों ने मिलकर संयुक्त कार्रवाई की। इस दौरान करीब 1338 बदमाशों की चेकिंग की गई, जिनमें से 568 पर वैधानिक कार्यवाही की गई। इनमें 85 स्थायी, 91 गिरफ्तारी और 104 जमानती वारंट तामील किए गए। शराब पीकर वाहन चलाने वाले 194 चालकों के खिलाफ 185 मोटर व्हीकल एक्ट के तहत कार्रवाई हुई। पुलिस ने सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने के 8 प्रकरण दर्ज किए। आदतन अपराधियों पर 86 प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की गई।

कलेक्टोरेट के आधार केंद्र में अव्यवस्था, न कुर्सी न पानी और स्टाफ भी अभद्र

बेसमेंट में केंद्र से लोग परेशान, ई-गवर्नेंस अधिकारी लापरवाह

इंदौर। कलेक्टरेट के बेसमेंट में संचालित आधार केंद्र लोगों के लिए सुविधा की बजाय सजा बन गया है। स्कूल-कॉलेज खुलते ही छात्रों सहित आमजन को आधार अपडेट कराने की जरूरत पड़ रही है, लेकिन केंद्र पर बैठने की जगह तक नहीं, पीने का पानी नहीं, हवा और रोशनी का अभाव है। सबसे बड़ी समस्या है यहां तैनात स्टाफ की अभद्रता और मनमानी। कई आवेदकों ने बताया कि नियम से आवेदन करने वालों को घंटों खड़ा रखा जाता है, जबकि मनमानी फीस देने वालों का काम तुरंत कर दिया जाता है। मात्र दो कुर्सियां लगी हैं जो हमेशा भरी रहती हैं। पुरुषों को बाहर खड़े रहने कहा जाता है। आवेदकों ने यह भी बताया कि नेटवर्क की कमी से कई बार आवेदन रिजेक्ट हो जाते हैं, पर कर्मचारी जिम्मेदारी लेने से इनकार कर देते हैं। एक महिला आवेदक ने बताया कि उसे दूसरी जगह दोबारा पैसे देकर आधार अपडेट करवाना पड़ा। यह सब तब हो रहा है, जब यह केंद्र कलेक्टर कार्यालय के भीतर ही संचालित है और इसके बावजूद ई-गवर्नेंस अधिकारी आंख मूंदे बैठे हैं। ई-गवर्नेंस प्रभारी अतुल दुबे ने सिर्फ इतना कहा कि मामले को देखते हैं, जबकि पूर्व में भी इसी केंद्र के एक कर्मचारी पर शिकायत हो चुकी है।

बेसमेंट की दुर्दशा, कर्मचारियों की बेरुखी और बुनियादी सुविधाओं की कमी ने इस केंद्र को अपमान और उत्पीड़न की जगह बना दिया है। लोगों का कहना है कि सरकार की डिजिटल इंडिया पहल के बावजूद लोगों को आधार जैसे ज़रूरी दस्तावेज़ के लिए भी अपमान क्यों सहना पड़ रहा है।

इंदौर और भोपाल में ट्रांसमिशन लाइनों के नीचे बने 1740 निर्माण चिन्हित किए

हाईटेंशन लाइनों के दायरे में 2340 निर्माण, मकान मालिकों को नोटिस

इंदौर। प्रदेश के कई शहरों की नई कॉलोनियों सहित कई इलाकों में कई मकान हाईटेंशन ट्रांसमिशन लाइनों के प्रतिबंधित दायरे में बना दिए गए हैं। यह निर्माण वर्षों पहले स्थापित ट्रांसमिशन लाइन के समीप किए गए, जो न केवल गैरकानूनी हैं, बल्कि जानलेवा भी साबित हो सकते हैं। एमपी ट्रांसको ने पिछले तीन वर्षों में ऐसे 2340 निर्माण चिन्हित किया है, वहीं 892 निर्माणों के लिए नोटिस जारी किए हैं। एमपी ट्रांसको द्वारा अपने स्तर पर इन्हें हटाने के कई प्रयास समय-समय पर किए जाते हैं, साथ ही जिला प्रशासन की मदद से भी अभियान चलाया जाता है।

वर्षों पहले स्थापित हुई इन एक्स्ट्रा हाईटेंशन ट्रांसमिशन लाइनों के नीचे बसे रहवासी मकान न केवल विद्युत सुरक्षा नियमों का उल्लंघन हैं, बल्कि यह जनजीवन को गंभीर खतरे में डाल रहे हैं। जानकारी के अनुसार ऐसे सभी क्षेत्र जहां पहले से ही ट्रांसमिशन लाइन क्रियाशील है, फिर भी विद्युत सुरक्षा मापदंडों को नजरअंदाज कर उनके समीप अनधिकृत निर्माण कर लिए गए, उन क्षेत्रों में ट्रांसमिशन लाइनों से दुर्घटना एवं जनहानि होने की आशंका के मद्देनजर वहां कंपनी द्वारा सुरक्षा नियमों की जानकारी घर-घर चस्पा की जा रही है। कर्मचारी लाइनों से सुरक्षित दूरी बनाए रखने के लिए अनाउंसमेंट भी कर रहे हैं। जागरूकता एवं जन सुरक्षा के लिये ट्रांसमिशन लाइनों के संपर्क में आने से संभावित खतरों से सचेत भी कराया जा रहा है। भोपाल और इंदौर में ट्रांसमिशन कंपनी ने ऐसे 1740 निर्माण चिन्हित किए हैं, जिन्हें हटाना जरूरी है। राजधानी में इस तरह के निर्माणों को हटाने के लिए 848 नोटिस जारी कर चुकी है। लेकिन, अब तक इन पर प्रभावी कार्रवाई नहीं हो सकी है। वर्ष 2022, 2023, अक्टूबर 2024 और हाल ही में फिर से नोटिस जारी किए गए हैं। अपने स्तर पर कई प्रयास किए गए, लेकिन अब जिला प्रशासन की मदद से अभियान चलाने की योजना बनाई गई है।

संपादकीय

उलझन में थरूर और कांग्रेस

केरल के तिरूवअनंतपुरम् के कांग्रेस सांसद शशि थरूर और उनकी पार्टी कांग्रेस की स्थिति न उगलते बने और न ही निगलते बने वाली हो गई है। थरूर की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से नजदीकी कांग्रेस को चुभ रही है तो थरूर अभी भी पार्टी छोड़ कर सीधे भाजपा का दामन थामने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। शायद उन्हें इस बात का डर है कि कहीं दांव उल्टा न पड़ जाए। वहीं कांग्रेसजन थरूर पर हमला कर रहे हैं, बावजूद इसके पार्टी उन्हें निष्कासित करने का साहस नहीं जुटा पा रही है। फिलहाल पूरा मामला केरल में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है। कांग्रेस और थरूर इसके नफे नुकसान के आईने में ही अपनी चालें चलना चाहते हैं। कभी नर्म नर्म, कभी सख्त सख्त। वाले अंदाज पर अब केरल के एक कांग्रेस नेता ने थरूर पर हमला बोला है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता के. मुरलीधरन ने थरूर को चेतावनी देते हुए कहा कि वो अब हमारे साथ नहीं हैं। ढ्ढमुरलीधरन ने कहा कि शशि थरूर को अब कांग्रेस के किसी भी कार्यक्रम में तब तक आमंत्रित नहीं किया जाएगा, जब तक कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा पर अपना रुख नहीं बदलते। पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरलीधरन ने यह भी कहा कि कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्ल्यूसी) के सदस्य थरूर को अब 'हम में से एक' नहीं माना जाता। उन्होंने आगे कहा कि पार्टी का राष्ट्रीय नेतृत्व तय करेगा कि थरूर के खिलाफ क्या कार्रवाई की जाए। उधर कांग्रेस नेता उदित राज ने थरूर को भाजपा का सुपर प्रवक्ता बता दिया। उदित राज का यह बयान थरूर की उस टिप्पणी के बाद आया, जिसमें उन्होंने कहा था कि ऑपरेशन सिंदूर ने बता दिया कि आतंकियों को कीमत चुकानी होगी। जबकि मुरलीधरन द्वारा आलोचना के पीछे शथि थरूर का ताजा बयान था, जिसमें उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा था कि देश पहले है, पार्टी बाद में। कोच्चि में 'शांति, सद्भाव और राष्ट्रीय विकास' पर आयोजित एक कार्यक्रम में थरूर ने कहा कि राजनीतिक पार्टियां सिर्फ एक रास्ता हैं, देश को बेहतर बनाने का जरिया हैं। अगर देश ही नहीं बचेगा, तो पार्टियों का क्या फायदा? इसलिए जब देश की सुरक्षा का सवाल हो, तब सभी दलों को मिलकर काम करना चाहिए। लेकिन कुछ लोग इसे पार्टी से गद्दारी समझ लेते हैं। यही सबसे बड़ी दिक्कत है। राजनीति में मुकाबला चलता रहता है, लेकिन मुश्किल वक्त में सभी को एकजुट होना चाहिए। यही नहीं, इसके पहले थरूर मोदी सरकार की विदेश नीति की तारीफ कर चुके हैं और इमर्जेंसी को देश का काला अध्याय बता चुके हैं। कुल मिलाकर थरूर कांग्रेस की तयशुदा पार्टी लाइन से हटकर ही बोलते रहे हैं और पार्टी को लगातार असहज करते रहे हैं। मलयालम अखबार 'दीपिका' में प्रकाशित अपने लेख में थरूर ने कहा कि इमरजेंसी से हमे सबक लेना जरूरी है। उन्होंने नसबंदी अभियान को मनमाना और क्रूर फैसला बताया। अनुशासन और व्यवस्था के लिए उठाए गए कदम कई बार ऐसी क्रूरता में बदल जाते हैं, जिन्हें किसी तरह उचित नहीं कहा जा सकता। शशि थरूर ने यह भी लिखा कि हमे लोकतंत्र को हल्के में नहीं लेना चाहिए। यह एक बहुमूल्य विरासत है, जिसे लगातार संरक्षित करना जरूरी है। सत्ता को केन्द्रीकृत करने, असहमति को दबाने और संविधान को दरकिनार करने का असंतोष कई रूपों में फिर सामने आ सकता है। इसके बाद हिंदू में प्रकाशित एक लेख में थरूर ने मोदी की तारीफ करते हुए लिखा कि मोदी की ऊर्जा, गतिशीलता और जुड़ने की इच्छा वैश्विक मंच पर भारत के लिए प्रमुख संपत्ति बनी हुई है, लेकिन उन्हें और ज्यादा सपोर्ट मिलना चाहिए। इससे परेशान कांग्रेस ने इसे थरूर की निजी राय बताया था।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

हमारे सामूहिक नैतिक पतन की दास्तान

हाल ही में ओडिशा के बालासोर में फकीर मोहन ऑटोनॉमस कॉलेज की 20 वर्षीय बीएड छात्रा द्वारा आत्मदाह की घटना ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। पीड़िता ने अपने शिक्षक के खिलाफ कई बार यौन उत्पीड़न की शिकायत की, लेकिन जब उसकी बातें अनसुनी कर दी गई, तब उसने प्रधानाचार्य कार्यालय के बाहर खुद को आग लगा ली। 90 प्रतिशत जल चुकी यह छात्रा कुछ दिनों में चल बसी, लेकिन उसकी मौत ने कई सवालों को जन्म दिया- क्या हमारी शिकायत निवारण प्रणाली मृतप्राय हो चुकी है? क्या संस्थानों में न्याय पाने की कोई आशा नहीं बची?

जब किसी समाज की सबसे संरक्षित और प्रतिष्ठित जगहें शैक्षणिक संस्थान और कार्यस्थल ही असुरक्षा का प्रतीक बन जाएँ, तो यह न केवल एक सामाजिक विफलता है, बल्कि यह उस नैतिक पतन की भी चेतावनी है जो हमारी संवैधानिक आत्मा को झकझोरती है। महिलाएँ, जो इन स्थानों पर ज्ञान, आत्मनिर्भरता और गरिमा की खोज में जाती हैं, यदि वहीं यौन उत्पीड़न, शोषण और हिंसा का शिकार बनें, तो यह सिर्फ कानून का उल्लंघन नहीं, बल्कि समाज के आत्मबोध पर करारा प्रहार है। ओडिशा से कर्नाटक, दिल्ली से बंगाल तक फैली इन घटनाओं की भयावहता और लगातार हो रही पुनरावृत्ति अब यह साबित कर चुकी है कि हमारी 'शरणस्थली' कही जाने वाली संस्थाएँ आज हिंसा के गर्त में धँस चुकी हैं।

हाल ही में ओडिशा के बालासोर में फकीर मोहन ऑटोनॉमस कॉलेज की 20 वर्षीय बीएड छात्रा द्वारा आत्मदाह की घटना ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। पीड़िता ने अपने शिक्षक के खिलाफ कई बार यौन उत्पीड़न की शिकायत की, लेकिन जब उसकी बातें अनसुनी कर दी गई, तब उसने प्रधानाचार्य कार्यालय के बाहर खुद को आग लगा ली। 90 प्रतिशत जल चुकी यह छात्रा कुछ दिनों में चल बसी, लेकिन उसकी मौत ने कई सवालों को जन्म दिया- क्या हमारी शिकायत निवारण प्रणाली मृतप्राय हो चुकी है? क्या संस्थानों में न्याय पाने की कोई आशा नहीं बची?

बंगाल के आर. जी. कर मेडिकल कॉलेज में पिछले वर्ष एक पीजी छात्रा की निर्मम हत्या के बाद भी सुरक्षा को लेकर कोई ठोस सुधार नहीं किया गया। इसके बाद एक लॉ कॉलेज की छात्रा के साथ जून 2025 में सामूहिक बलात्कार हुआ। दिल्ली में एक 9 वर्षीय बच्ची की बलात्कार के बाद हत्या ने फिर से कानून व्यवस्था की बदहाली को उजागर कर दिया। मंगलुरु में दो प्राध्यापकों को छात्रा के साथ बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार किया गया। ये सभी घटनाएँ संकेत देती हैं कि अब शिक्षा और कार्य के स्थल यौन हिंसा के अड्डे बनते जा रहे हैं।

इन घटनाओं से यह साफ होता है कि आज हमारे देश में पीड़िताओं को न्याय दिलाने वाली प्रणाली लगभग निष्क्रिय हो चुकी है। ओडिशा की छात्रा ने कई बार शिकायत की, यहाँ तक कि वह मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुँची, लेकिन कहीं भी उसे न्याय नहीं मिला। एक जीवन, जो आगे चलकर समाज के निर्माण में योगदान दे सकता था, अकाल मृत्यु का शिकार बन गया, इसकी जिम्मेदारी किसकी है?

यह घटना 'यौन उत्पीड़न से महिलाओं का कार्यस्थल पर संरक्षण अधिनियम, 2013' के कार्यान्वयन की गंभीर खामियों को उजागर करती है। इस अधिनियम के तहत प्रत्येक संस्थान में 'आंतरिक शिकायत समिति' का गठन अनिवार्य है, परन्तु अधिकतर संस्थानों में या तो यह समितियाँ गठित नहीं होतीं या उनका संचालन औपचारिकता मात्र बनकर रह गया है। जब यह समितियाँ निष्क्रिय रहती हैं, तो पीड़िता को न्याय पाने के लिए 'पिलर टू पोस्ट' भटकना पड़ता है।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 4,45,256 मामले दर्ज किए गए, जो 2021 की तुलना में 4 प्रतिशत अधिक हैं। इन अपराधों में सबसे अधिक मामले 'पति या रिश्तेदार द्वारा क्रूरता' (31.4 प्रतिशत) के हैं, लेकिन 'महिला की लज्जा भंग करने के इरादे से हमला' 18.7 प्रतिशत और बलात्कार 7.1 प्रतिशत पर हैं। यह आंकड़े केवल दर्ज मामलों के हैं– अनेक मामले तो कभी दर्ज ही नहीं होते, खासकर जब अपराधी कोई प्रभावशाली व्यक्ति हो। अपराधियों में दंड का भय नहीं है, क्योंकि उन्हें पता है कि शिकायतों की सुनवाई या तो होगी नहीं, या इतनी देर से होगी कि पीड़िता थककर चुप हो जाएगी। जब तक हम अपराधियों को त्वरित और कड़ा दंड नहीं देंगे, तब तक 'न्याय की आशा' एक सपना मात्र रहेगी।

2012 में हुए निर्भया कांड ने देश को झकझोर दिया था और सरकार ने तत्क्षण कठोर कानून बनाए। निर्भया फंड की स्थापना हुई, फास्ट ट्रैक कोर्ट बने, और पीड़िता की सुरक्षा एवं पुनर्वास की बातें की गईं। लेकिन आज, एक दशक बाद, हालात में कोई बुनियादी सुधार नहीं दिखता। बलात्कार की शिकार बच्चियाँ, कॉलेजों में उत्पीड़न की शिकार छात्राएँ और कार्यस्थलों पर शोषण झेलती महिलाएँ यह सवाल करती हैं- क्या कानून केवल कागज़ पर हैं? आज भी अधिकतर पीड़िताएँ शिकायत करने से डरती हैं, क्योंकि उन्हें समाज द्वारा बदनाम कर दिए जाने का भय होता है। थाने में उनकी बात नहीं सुनी जाती, और यदि बात सुन भी ली गई, तो न्याय मिलते-मिलते वर्षों बीत जाते हैं।

शैक्षणिक संस्थानों का उद्देश्य केवल शिक्षा देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के लिए एक सुरक्षित, नैतिक और प्रेरणादायक वातावरण तैयार करना है। जब शिक्षक ही शोषक बन जाएं, और प्रधानाचार्य उनकी रक्षा करें, तब संस्थान की नैतिकता सवालों के घेरे में आ जाती है।कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को आंतरिक शिकायत समिति को सशक्त और स्वतंत्र बनाना चाहिए। समिति में विविधता, विशेषज्ञता और संवेदनशीलता आवश्यक है। छात्राओं को यह विश्वास दिलाना होगा कि वे यदि शिकायत करेंगी तो उन्हें बदले में प्रताड़ना नहीं, बल्कि न्याय मिलेगा।

मीडिया की भूमिका इस संकट में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि ओडिशा की छात्रा की आत्मदाह की घटना सुर्खियों में नहीं आती, तो शायद कोई भी उसकी पीड़ा के बारे में न जान पाता। समाज को चाहिए कि वह पीड़िताओं को तिरस्कार की दृष्टि से देखने के बजाय उनके साथ खड़ा हो। सरकार को ऐसे मामलों में त्वरित कार्रवाई करते हुए दोषियों को सजा दिलानी चाहिए। आंतरिक शिकायत समिति की समय-समय पर निगरानी, कार्यस्थलों और कॉलेजों में यौन-शिक्षा और लैंगिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देना, ये सभी प्रयास अनिवार्य हैं।

अब समय आ गया है कि हम केवल कानून बनाकर नहीं, बल्कि समाज में एक नई चेतना पैदा करके इस समस्या से लड़ें। बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा से ही लिंग-संवेदनशीलता, सहमति और सम्मान की भावना सिखानी चाहिए। माता-पिता, शिक्षक, प्रशासक, पुलिसकर्मी, हर किसी को यह समझना होगा कि जब कोई लड़की या महिला शिकायत करती है, तो वह न्याय की नहीं, अपने अस्तित्व की गुहार लगाती है।

जब रक्षक ही भक्षक बन जाएँ, तो पीड़िता की चीखें हमारी कानों में गूंजनी चाहिए। एक समाज, जो अपने बेटियों को सुरक्षा नहीं दे सकता, वह प्रगति के किसी भी पथ पर नहीं चल सकता। यौन हिंसा के विरुद्ध न्याय की माँग कोई एक-दो दिन का आंदोलन नहीं हो सकता; यह निरंतर जागरूकता, संवेदनशीलता और कार्यवाही की माँग करता है।

ओडिशा की छात्रा, बंगाल की मेडिकल छात्रा, दिल्ली की 9 साल की बच्ची, ये सभी नाम केवल आँकड़े नहीं हैं, बल्कि हमारे सामूहिक नैतिक पतन की दास्तान हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि अब कोई और बेटी खुद को आग न लगाए, कोई और छात्रा न्याय के लिए भटकते हुए दम न तोड़े। सुरक्षित भारत की परिकल्पना तभी साकार होगी, जब शैक्षणिक संस्थान और कार्यस्थल वास्तव में शरणस्थली बनें डर और उत्पीड़न के अड्डे नहीं।

इस भयावह परिदृश्य से उबरने के लिए केवल संवेदनाएं व्यक्त करना पर्याप्त नहीं, बल्कि एक बहुआयामी रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिकायत निवारण तंत्र को तकनीकी रूप से पारदर्शी और पीड़िता-केन्द्रित बनाना होगा। हर कॉलेज, विश्वविद्यालय और कार्यस्थल पर 'गोपनीय डिजिटल पोर्टल' की स्थापना की जानी चाहिए जहाँ पीड़िता बिना किसी भय के शिकायत दर्ज कर सके। इन शिकायतों की निगरानी एक स्वतंत्र बाहरी समिति द्वारा की जाए, ताकि संस्था की अंदरूनी राजनीति न्याय में बाधा न बन सके। इसके अतिरिक्त, न्यायपालिका को ऐसे मामलों में 'मूल्य आधारित दृष्टिकोण' अपनाते हुए समयबद्ध न्याय देना होगा। फास्ट ट्रैक अदालतें केवल कागज़ी नहीं, बल्कि क्रियाशील हों, जो दोषियों को जल्द सज़ा देकर उदाहरण प्रस्तुत करें।

शिक्षा व्यवस्था में भी यौन नैतिकता, लैंगिक सम्मान और संवेदनशीलता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को यह सिखाया जाना चाहिए कि सहमति क्या होती है, और किसी के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाना अपराध क्यों है। यदि हम आज मौन रहे, तो कल इतिहास हमें कठघरे में खड़ा करेगा। अब भी समय है कि हम 'संरक्षण' की परिभाषा को पुनः स्थापित करें, जहाँ भय नहीं, भरोसा हो; उत्पीड़न नहीं, उदारता हो।

राजनीति : कपास के फूल से कमल के फूल तक

विचार

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

मैं भारत का एक नागरिक जो आज़ादी के पाँच साल बाद पैदा हुआ, अपने देश के राजनीतिक परिदृश्य का एक शब्द चित्र बनाता हूँ और पाता हूँ कि ... मेरे बचपन के दिनों में कॉंग्रेस कपास के फूलों से भरी गर्म रजाई की तरह थी और जिसे ओढ़कर देश की सभी बिरादरियों के लोग गर्माहट महसूस करते थे। मेरी तरह कई लोग इस गर्माहट को आज भी भूले नहीं हैं। उस समय देश में कॉंग्रेस सोसलिस्ट और प्रजा समाजवादी नाम के दल भी बनें। उस समय जनसंघ नाम का एक अल्पज्ञात दल भी अपना दीपक जलाये था।

गैर कॉंग्रेसवाद का नारा सबसे पहले इन्हीं समाजवादी दलों ने लगाया और इनके पढ़े-लिखे नेताओं ने तो यहाँ तक कहा कि वे कॉंग्रेस को हटाने के लिए कोई भी समझौता करने को तैयार हैं। इन्हीं ने जनसंघ के लोगों से मिलकर संविद सरकार बनाने का राजनीतिक खेल भी खेला। देश को सद्भावपूर्ण राष्ट्रीयता का सबक सिखाने वाली कॉंग्रेस की भरी रजाई से ही रुई नोंच-नोंचकर कई तरह के जातिवादी दल अपने गद्दे-तकिए भरवाने लगे थे और इंदिरा जी के राजनीतिक समय में खुद कांग्रेस भी अपनी भरी-पूरी रजाई के दो टुकड़े कर चुकी थी। बाद में तो वह कई तृण-मूलों में बिखरती चली गयी।

जब जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में कॉंग्रेस के खिलाफ़ बिहार आंदोलन प्रारंभ हुआ और उनके कुछ आह्वानों से यह संदेह होने लगा कि कहीं देश में अराजकता न फैल जाये, तब इसी कारण आपातकाल लगाने की नौबत भी आयी। जब उन्नीस महीने के बाद आपातकाल हटाया गया तो भांति-भांति के जातिवादी, कौमपरस्त, साम्प्रदायिक दल एक 'जनता पार्टी' नामक तात्कालिक गठबंधन बनाकर देश की सत्ता पर काबिज हो गये। साम्यवादी वामपंथियों ने भी उनका समर्थन किया। वे मात्र ढाई साल में विफल होकर देश के लोगों की नज़रों से गिर भी गये। जनता ने फिर कॉंग्रेस को चुना। जब आतंककारी ताकतें इंदिरा जी के प्राण भी ले चुकीं, तब भी राजीव गांधी के नेतृत्व में कॉंग्रेस आगे बढ़ती रही। फिर राजीव जी के प्राण भी ले लिए गये।

यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि जनता के जात-पॉंत में बॅंटे रहने के कारण और उसकी क्षेत्रीय पीड़ाओं के नाम पर वोट बटोरने वाले छोटे राजनीतिक दल बड़ी तादाद में खड़े होकर कॉंग्रेस की सर्वसमावेशी शक्ति को कमजोर करने लगे थे और इन दलों ने ही कॉंग्रेस को सत्ता के स्वार्थी गठबंधनों की तरफ दबाव बनाकर खींचा। वामपंथी दल भी कॉंग्रेस के पिछलगुआ बनकर उभरने लगे। जो कॉंग्रेस देश के दिल को जीतकर शासन चलाती थी, उसे इन वोट के खुदरा व्यापारियों के दलों के दलदल में फॅंसना पड़ा। इन गठबंधनों के मेंढकों को तौलने में अपना समय गॅंवाना पड़ा।

भारत के चुनाव आयोग की सूची में सैकड़ों राजनीतिक दल रजिस्टर्ड हैं। जिनमें से कईयों का हम नाम भी नहीं जानते। उनका यह धंधा ही बन गया है कि राष्ट्रीय दलों में अगड़ों-दलितों-पिछड़ों के नाम पर अपनी राजनीतिक गुमटी कैसे जमाकर रखी जाये। ये राजनीतिक गुमटियॉं कॉंग्रेस को चाहे जब संकट में डालती रही हैं और इसी से लोकतंत्र में फुटकर राजनीतिक सौदेबाजियों का चलन बढ़ा है और अभावग्रस्त दलित-पिछड़ों के दुख आज तक कम नहीं हुए हैं। ये जातिवादी 'मण्डल' के दल इतने अवसरवादी हैं कि 'कमण्डल' में भी अपनी जगह खोज लेते हैं। इनका धर्म निरपेक्ष और समतावादी होने का दावा कितना बेमानी लगता है। देश में अपनी राजनीतिक महत्वाकॉंक्षा पूरी करने के लिए सत्ताइस दिन के लिए प्रधानमंत्री बनते रहे हैं। कोई छह महीने के लिए बना और कोई साल-डेढ़-साल ही चल पाया।

भारतीय जनता पार्टी ने जब इन राजनीतिक गुमटियों के नेताओं को साथ लेकर और फिर इनका भेद जानकर इनके वोट के खुदरा व्यापार में सेंध लगायी तो ये दल उसके खेमे में खिसकने लगे। सबसे पहले इन मेंढकों को अटल बिहारी वाजपेयी ने पॉंच साल तक किसी तरह तौला। ये दल यही कहते पाये गये हैं कि कांग्रेस और भाजपा तो एक जैसे ही हैं। इसका मतलब यह हुआ कि सत्ता पाने के लिए दोनों बड़े दलों में अपनी जगह बनायी जा सकती है। इन खुदरा दलों की घुसपैठ के कारण इतना बड़ा देश करीब आधी सदी से 'कामन मिनिमम प्रोग्राम' से ही चल रहा है। वह अपनी समृद्धि का कोई बड़ा सपना देख नहीं पा रहा। मैंनें अभी तक वोट के इन खुदरा व्यापारी नेताओं को देश की अर्थनीति, स्वास्थ्य और शिक्षा व्यवस्था पर कोई गंभीर विमर्श करते हुए नहीं सुना। वे केवल वोट बटोरने के लिए जातियों का नाम स्मरण ही करते रहते हैं। वे उन्हें रोज गिनते रहते हैं कि कहीं उनके लिए कम न पड़ जायें।

कमल के फूल पर राजनीतिक भॅंवरों को मंडराते और उसकी परिक्रमा करते देखकर इस पुष्प के कई नाम याद आते हैं ... राजीव, नीरज, पंकज और जलज भी कमल के ही नाम है। राजीवनयन, नीरजनयना और कमलनयन कहकर इस पुष्प से प्रेम से भरी उज्ज्वल आंखों की उपमा दी जाती है। पानी में उत्पन्न होने से इसे जलज कहा जाता है। पंक (कीचड़) से ऊपर उठकर खिलने से यह पंकज कहलाता है। श्रीमद्भग्वद्गीता में गुण-अवगुण से सने हुए जीवन को समत्व दृष्टि से परखकर राज्यकर्ताओं और प्रजाजनों को राग-द्वेष से ऊपर उठकर कमलपत्रवत निष्काम गुजर-बसर करने की सलाह दी गयी है। राज्यसत्ता और उससे प्रतिबद्ध लोगों का अस्तित्व कमल के पत्ते पर कुछ देर के लिए ठहरी पानी की बूॅंदों की तरह ही होता है। वे अचानक ढरक भी जाती हैं।

कमल योगियों का प्रिय पुष्प भी है। योगी इस पुष्प को आधार मानकर कई रूपक गढ़ चुके हैं। हमारे शरीर में षट्दल कमल की कल्पना योगियों ने ही की है। हमारा हृदय शतदल कमल जैसा है और बुद्धि में बसा हुआ ब्रह्माण्ड सहस्रदल कमल की तरह परिकल्पित है। कमल का प्रतीक पंक से ऊॅंचा उठने की कला सिखाता है, उसमें लिथड़ जाने की नहीं। जिस तरह कमल के पत्ते पर पानी की बूॅंद सूर्य के प्रकाश में उज्ज्वल झिलमिलाती है बिल्कुल उसी तरह लोकतंत्र में सबके जीवन को अपने स्वराज्य में झिलमिलाना चाहिए।

राजनीतिक दलों के लोगों को विभेदकारी राजनीतिक प्रपंच के पंक (कीचड़) से ऊपर उठकर और आत्मभाव से सबको अपनाकर राज्य का संचालन कर सकना चाहिए। हाथों को भी कर-कमल की उपमा दी जाती है। देश के समूचे जीवन और उसकी आशा-आकांक्षाओं को आत्मीयतापूर्वक थामने के लिए उजले राजीवनयन और स्वच्छ कर-कमल ही चाहिए।

सृष्टि का रचयिता पंक से उठी कमलनाल के सहारे ही अष्टदल कमल पर विराजमान है। आधुनिक राज्य के रचनाकारों को इस बात की चिंता करना चाहिए कि यह कमल-प्रतीक राजनीतिक पंक में कहीं लिथड़ न जाये। कमल का फूल अपने से अपने में उठकर पाये जाने वाले स्वराज्य का प्रतीक है। वह सबके खिले हुए जीवन का पहचान चिह्न है। उससे केवल वोट नहीं यह बोध भी प्राप्त कर सकना चाहिए कि भारत के लोगों का जीवन भेदभाव रूपी पंक से ऊपर उठकर खिल सके।

और थोड़ी परेशानी ओटीपी

कटाक्ष

विश्वास व्यास

लेखक व्यंग्यकार हैं।

'ओटीपी' इंटरनेट की तिलिस्मी दुनिया की चाबी है। जैसा कि हम तिलस्मी किस्सों, नाटकों और फिल्मों में देखते आए है। तिलस्मी चाबी हासिल करने के लिए वीडियो गेम्स की तरह बाधाओं के कई लेवल पर करने होते है। इंटरनेट पर हर काम में ओटीपी की सख्त निगरानी होती है।

ओटीपी हासिल करना वैसे तो मिनिट भर का काम है। पर उससे पहले कि कवायद बड़ी होती है। पहले फॉर्म भरो, फिर उल्टे सीधे शब्दों में लिखा एक कोड सीधा करके लिखो।

वो क्या कहते है उसेज कैप्ट्चा कोड! कही कुछ आडा लिखा है, कही टेढ़ा! कही बड़ा लिखा है, कही छोटा! उसे समझते समझते कई बार तो आदमी ये भी भूल जाता है कि वह क्या काम करने निकला था। उसका सारा ज्ञान, बुद्धि और चेतना केवल कैप्चा समझने में लग जाती है।

ये सॉफ्टवेयर वाले भाई लोग पता नहीं इतनी सी बात क्यों नहीं समझते कि अगर हम बिना कंप्यूटर पढ़े लोगों को कोड ही लिखना, समझना आते तो बेटा तुम्हारी जरूरत ही क्या थी??

उलटी बात तुम लिखो और सीधी करे हम!! ये कौन सी बात हुई?? मुझे तो इसके नाम में भी शरारत महसूस होती है। कैप्चा में मुझे 'तू अब के पचा' वाला भाव नजर आता है। जब तक आदमी दो पांच बार पच न ले, ये कोड पूरा नहीं होता।

चलो, जैसे तैसे बहुत पचने के बाद यदि यह किला आपने जीत लिया तो आगे ओटीपी अपनी सेना लेकर खड़ा मिलता है। मुझे उस वक्त लगता है जैसे ओटीपी मुस्कुरा कर कह रहा हो, 'और थोड़ा पचो और थोड़ी परेशानी' झेलो!

एक बार कोशिश करो, ओटीपी नहीं आएगा! आप आंखे गड़ाए अपना inbo& बार बार देखते रहेंगे। पर वह नहीं आएगा! रूठी प्रेमिका के मेसेज का इंतजार करने का आपका अनुभव यहां थोड़ी मदद कर देता है। पर फिर धैर्य चुकने लगता है। आप ओटीपी रिसेंड करने का अनुरोध भेज देते है। वैसे अफसोस है कि प्रेमिका वाले मामले में ये सुविधा नहीं मिलती है। लोग कहते है कि अपना ओटीपी किसी को न बताए! इसे गुप्त रखे! ओटीपी भेजने वालों ने इस बात को गंभीरता से ले लिया है। वो हमें हमारा ओटीपी ही नहीं भेजते! जब तक की उन्हें यकीन नहीं हो जाता कि हम किसी को बताएंगे नहीं!

बेकरार नजरे इनबॉक्स को निहारती रहती है। पर वह नहीं आता! आप घबराने लगते है। इधर उधर के चार पांच ऐप देख लेते है। पर इतंजार खत्म नहीं होता। उधर मोबाइल स्क्रीन पर जरा सी आहट होती है, तो दिल सोचता है- कही ये वोतो नहीं! पर हाय री किस्मत! वह नहीं आता!

आप पछता कर एक बार फिर भेजने का अनुरोध करते है। और चमत्कार हो जाता हैं। इतंजार का मीठा फल तुरंत मिल जाता है। ओटीपी महोदय आप पर प्रसन्न हो जाते है। पर- कृपा कुछ ज्यादा बरस जाती है और एक नहीं दो नहीं तीन तीन ओटीपी आ जाते है। ये जीवन का दुर्लभ क्षण होता है। जब आदमी एक मांगने पर तीन मिलने के बाद भी खुश नहीं होता! कंफ्यूज होता है।

मसला यह खड़ा होता है कि कौन सा ओटीपी उपयोग किया जाए! आदमी बेचारा फिर कंफ्यूज!

जैसे तैसे अकड़ बक्कड़ बंबे बो कर के आदमी एक ओटीपी नियत जगह पर डालता है और मैसेज आता है कि 'आपका समय समाप्त हो गया है!'

जीवन के चक्र की तरह एक बार फिर शुरुआत करनी पड़ती है। ओटीपी हमे सिखाता है कि जिंदगी में अवसरों के पासवर्ड मुश्किल से मिलते है। उन्हें सही वक्त पर सही जगह पहुंचा दिया तो जीवन सफल! नहीं तो फिर से फॉर्म भरना ही है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

विजी श्रीवास्तव

लेखक व्यंग्यकार हैं।

शांति के मसीहा के बहुरंगी रूमाल

इन दिनों शांति की डिमांड अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत बढ़ गई है। पहले हमारा देश शांति का सबसे बड़ा निर्यातक था। लेकिन अचानक बाज़ार में तमाम सप्लायर उग आने के कारण हमारी शांति की वेल्यू ही नहीं रही। वैश्विक मंचों पर शांति अब एक उत्पाद है। शान्ति के खिलोने फेंगशुई में पैक हो रहे हैं, लिक्विड शांति, ड्रोन के साथ स्प्रे होने के लिए मुकाम की तलाश में हैं और कहीं वोडका में घुलकर अल्कोहॉलिक शान्ति, तबाही की चिंगारी को बुझने से बचाने के अभियान में लगी है। बड़े सप्लायरों ने अपने हथियारों के ट्रक के साथ 'फ्री शांति पैकेज' बांटना शुरू कर दिया है। युद्ध के बाद की शांति, सत्ताधीशों को ठहराव की गारंटी देती है। इसलिए बुढ़ाते नेताओं को यह डील ज्यादा रास आ रही है।

इन दिनों एक बड़ा बाजीगर, शांति के इन्टरनेशनल मार्केट पर एकाधिकार जमाना चाहता है। वह दुनिया भर में अशांति की तलाश कर, खुद को शांति के ब्रांड एंबेसडर के रूप में पेश करता है। उसके कोट की लंबी जेबों में कई रंगों के रुमाल ठुंसे रहते हैं। वह लाल रुमाल दिखाकर सांडों को लड़ने के लिए उकसाता है। उन्हें कोंच कोंच कर मैदान में लाने के बाद, कूच करने के लिए हरा रूमाल भी वही दिखाता है। जब सांड लड़ लड़ कर थकने लग जाएं तो उन्हें सफेद रुमाल दिखाकर शांति पाठ करने लगता है। उसकी न मानने वालों के लिए वह जेब में काला रूमाल तैयार रखता है। वहीं अपना माल बेचने के लिए वो गोल?डन रूमाल लहराता है। उसकी दुकान का स्लोगन है कि शांत हो जाओ, वरना शान्त कर दिए जाओगे।

लेकिन इन दिनों शांति दूत, भूत की तरह अपने सफेद किले में बेचैनी से भटक रहा है। उसका मन बहुत अशांत है। वह बार बार अपनी जेबों में से कभी इस रंग का-कभी उस रंग का रूमाल निकालता और वापस घुसेडता है। रात को निखालिस अद्धी गटक लेने के बाद भी उसे सुकून नहीं मिल पा रहा है। उसकी टांग टीस रही है क्योंकि जितनी जगह डाली, वहीं टांग खिंचाई हुई। वह अपने सफेद रूमालों के एवज में दुनियां भर से क्रेडिट चाहता है। वह शान्ति के बड़े पुरस्कार की ख्वाइश में खुद की पैरवी खुद ही कर लेता है।

हाल ही में शांति के इस स्वयंभू मसीहा ने रीढ़ विहीन अर्थव्यवस्था के अंधे निगहबान को बुलाकर लंच कराया। मसीहा ने जूठा मुंह पौंछकर, सुनहरा रूमाल खाकिस्तानी अकड़बाज मेहमान की तरफ बढ़ाया। उसने लपक के उसे इज्जत के साथ ग्रहण किया। मतलब साफ था, सौदेबाजी का गोल्डन हैंड करचीफ, उस चीप किस्म के चीफ को मंजूर था। गोल्डन रूमाल नाक पौंछकर भी दिया जाता, तब भी शिरोधार्य ही किया जाता।

मेहमान ने बड़ी सी डकार ली। वैसे तो यह शांति के मसीहा की तौहीन होती, लेकिन खाकिस्तानियों की आदत ही है कि थोड़ी सी पुचकार मिलते ही उन्हें डकराते देर नहीं लगती। वे बोले-आपके साथ लंच से बड़ा बल मिला। आप इतने नोबेल हो कि आपको शान्ति का नोबेल शांति पुरस्कार मिलना ही चाहिए। शांति का मसीहा खुश हुआ। उसने मक्खन पॉलिश को गहरी सांस लेकर सूंघा। फिर टेढ़ी मुस्कान के साथ बोला- आप लोग कितने करैप्ट हो, यह मुझे अच्छी तरह पता है। इसलिए मैंने आपको क्रिप्टो करैन्सी डील के लिए चुना है। इससे आप अपने देश में शांति खरीद सकोगे। मेहमान ने कहा-जो हुकुम मेरे आका। हम आपका यह कर्ज कैसे चुका पाएंगे। आका जानते हैं कि ईएमआई बांधकर, वे शान्ति का कर्ज, मय ब्याज वसूल करने में माहिर हैं।

आका ने मुस्कुरा कर कहा- आई लव यू। कहते हुए उसे अपनी लाइफ में तूफान लाने वाली 'स्टार्मी' डेनियल्स की याद आई। इसलिए जल्दी से अपनी गलती सुधार कर बोला-आई लव योर कन्ट्री। मेहमान, अपना ओहदा भूलकर सैल्यूट मारने की जगह कौर्निश करता चला गया।

शांति दूत ने अपनी आत्मा को शांत करने के लिए गर्दन खिड़की से बाहर निकाली। उसे अच्छा लगा कि कई और जगह लड़ाई अभी जारी थीं। मन तो बोला कि शान्ति का अवार्ड यूं न मिला तो छीन कर ही ले लूंगा। फिर भी उसने घंटी बजाई और बारूद की महक भरे सफेद रूमाल को धोकर लाने का आदेश दिया।

राष्ट्रीय ध्वज दिवस

श्वेता गोयल

लेखिका शिक्षक हैं।

भारत की एकता, साहस और आकांक्षाओं का प्रतीक तिरंगा

राष्ट्रीय ध्वज दिवस भारत की सम्प्रभु राष्ट्र बनने की यात्रा का स्मरण कराता है। तिरंगा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता के लिए इसके कठिन संघर्ष और एकजुट एवं समृद्ध राष्ट्र के लिए अपने लोगों की आकांक्षाओं का प्रतीक है। हमारा राष्ट्र ध्वज न केवल राष्ट्र की एकता, अखंडता, गरिमा, गौरव, शक्ति, आदर्श और आकांक्षाओं का प्रतीक है बल्कि समूचे विश्व को त्याग की भावना एवं शाति का संदेश भी देता है। यह हमारी स्वतंत्रता का भी प्रतीक है क्योंकि आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों को एकजुट करने में इसकी बहुत अहम भूमिका रही। तिरंगे ने ही भारतवासियों को एकता और भाईचारे का संदेश देकर उन्हें एक सूत्र में पिरोकर अंग्रेजों से लोहा लेने को प्रेरित किया था। तब क्रांतिकारियों के लिए राष्ट्र ध्वज का सम्मान अपने प्राणों से भी बढ़कर होता था, इसीलिए अंग्रेजों की लाठियां व गोलियां खाते हुए भी उन्होंने इसे कभी झुकने नहीं दिया।

विश्व में प्रत्येक राष्ट्र का अपना-अपना राष्ट्रीय ध्वज है। राष्ट्रीय ध्वज ही उसकी मर्यादा और अस्मिता से जुड़ा होता है लेकिन इस मायने में हमारा राष्ट्र ध्वज 'तिरंगा' अन्य राष्ट्र ध्वजों के मुकाबले अनेक विशेषताएं धारण किए हुए है। चूंकि अंग्रेजों से भारत की मिली आजादी के चंद दिन पहले ही 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने वर्तमान भारतीय तिरंगे को देश के आधिकारिक ध्वज के रूप में अपनाया था, इसीलिए भारत में प्रतिवर्ष 22 जुलाई को 'राष्ट्रीय ध्वज दिवस' मनाया जाता है। आधिकारिक रूप में तिरंगे को अपनाने के बाद से यह देश की एकता, साहस, और आकांक्षाओं का प्रतीक बन गया। राष्ट्रीय ध्वज दिवस भारत की सम्प्रभु राष्ट्र बनने की यात्रा का स्मरण कराता है। तिरंगा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता के लिए इसके कठिन संघर्ष और एकजुट एवं समृद्ध राष्ट्र के लिए अपने लोगों की आकांक्षाओं का प्रतीक है। हमारा राष्ट्र ध्वज न केवल राष्ट्र की एकता, अखंडता, गरिमा, गौरव, शक्ति, आदर्श और आकांक्षाओं का प्रतीक है बल्कि समूचे विश्व को त्याग की भावना एवं शाति का संदेश भी देता है। यह हमारी स्वतंत्रता का भी प्रतीक है क्योंकि आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों को एकजुट करने में इसकी बहुत अहम भूमिका रही। तिरंगे ने ही भारतवासियों को एकता और भाईचारे का संदेश देकर उन्हें एक सूत्र में पिरोकर अंग्रेजों से लोहा लेने को प्रेरित किया था। तब क्रांतिकारियों के लिए राष्ट्र ध्वज का सम्मान अपने प्राणों से भी बढ़कर होता था, इसीलिए अंग्रेजों की लाठियां व गोलियां खाते हुए भी उन्होंने इसे कभी झुकने नहीं दिया।

तीन रंगों की पट्टियों वाले राष्ट्रीय ध्वज की सबसे ऊपर की केसरिया रंग की पट्टी त्याग, बल और पौरूष की प्रतीक है जबकि बीच वाली सफेद पट्टी शांति और सत्य की प्रतीक है और सबसे नीचे की हरे रंग की पट्टी हरियाली, समृद्धि एवं सम्पन्नता की प्रतीक है। झंडे के बीचों-बीच सफेद पट्टी में स्थित गहरे नीले रंग का अशोक चक्र आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। 24 तीलियों वाला अशोक चक्र देश की प्रगति, राष्ट्र के कानून और धर्म के पहिये का प्रतीक है। डॉ. सर्वपल्ली राधकृष्णन के शब्दों में कहें तो जो लोग इस ध्वज के नीचे कार्य करेंगे, उन्हें सत्य और सदाचार के सिद्धांतों का पालन करना होगा। राष्ट्र ध्वज के नीचे कार्य करने वालों से उनका तात्पर्य सरकारों और नौकरशाहों से था। राष्ट्र कोकिला सरोजिनी नायडू ने भी राष्ट्र ध्वज की महत्ता का उल्लेख करते हुए संविधान सभा में राष्ट्र ध्वज का प्रस्ताव पेश करते समय 22 जुलाई 1947 को कहा था कि नए भारत के सभी नागरिकों को इस राष्ट्र ध्वज को प्रणाम करना होगा और इसके नीचे कोई छोटा-बड़ा नहीं होगा।

राष्ट्र ध्वज का सफर 7 अगस्त 1906 को आरंभ हुआ था। हरे, पीले और लाल रंग की तीन पट्टियों से बना यह राष्ट्रीय ध्वज कलकत्ता के पारसी बागान में फहराया गया था। उस ध्वज पर ऊपर की हरी पट्टी पर एक ही पंक्ति में सफेद रंग के आठ कमल अंकित थे जबकि बीच वाली पीली पट्टी पर देवनागरी में गहरे नीले रंग से वंदेमातरम् लिखा था और नीचे की लाल पट्टी पर बायीं ओर एक सफेद सूर्य और दायीं ओर एक-एक सफेद चन्द्रमा और तारा अंकित थे। 'भारत का झंडा' नामक यह ध्वज हालांकि भारत के सभी धर्मों, सम्प्रदायों और साम्प्रदायिक सद्भावना को मद्देनजर रखते हुए तैयार किया गया था लेकिन यह ध्वज सर्वमान्य नहीं हो पाया। 1917 में डा. एनी बेसेंट और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक द्वारा 'होमरूल आन्दोलन' चलाया गया था। उस समय एक नया राष्ट्रीय ध्वज तैयार किया गया, जिसमें लाल और हरे रंग की एक के बाद एक कुल 9 समानान्तर और तिरछी पट्टियां थी। उस ध्वज के बीचों-बीच 7 तारे थे और एक कोने में चांद व तारा अंकित थे जबकि उसके ऊपरी बायें कोने में 'यूनियन जैक' का चित्र (झंडे का चौथाई भाग) बनाया गया था। झंडे में यूनियन जैक के इस चित्र को सम्मिलित किए जाने के कारण ही यह अधिकांश लोगों द्वारा नापसंद कर दिया गया क्योंकि इस चित्र को राष्ट्रीय ध्वज में स्थान देने का अर्थ यही माना गया कि भारतीय समाज की ब्रिटिश सम्प्रभुत्ता के प्रति स्वीकृति है। तब एक ऐसे ध्वज की आवश्यकता महसूस की गई, जो प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय और विचारधाराओं के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के साथ देशवासियों के लिए जीवन-मरण का प्रतीक भी बन सके।

1921 में विजयवाड़ा में कांग्रेस के अधिवेशन में आंध्र प्रदेश के पिंगली वैंकैया नामक क्रांतिकारी युवक ने महात्मा गांधी को एक ऐसा ध्वज भेंट किया, जिसमें लाल व हरे रंग की केवल दो पट्टियां थी लेकिन पंजाब के एक बुजुर्ग नेता रायजादा पंडित हंसराज ने गांधी जी को सुझाव दिया कि इस ध्वज में चरखे को भी अंकित किया जाए और तब गांधी जी ने यह सुझाव स्वीकारते हुए हिन्दुओं के लिए केसरिया रंग, मुस्लिमों के लिए हरा रंग तथा अन्य सम्प्रदायों के लिए ध्वज में सफेद रंग को भी शामिल किया। 31 दिसम्बर 1929 को रावी नदी के तट पर इसी तिरंगे को फहराते हुए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की गई थी। हालांकि बहुत से लोगों को राष्ट्रीय ध्वज को जातियों व धर्म-सम्प्रदाय से जोड़ना उचित नहीं लगा, अतः 1931 में राष्ट्रीय ध्वज के स्वरूप के निर्धारण के लिए कराची कांग्रेस ने 7 व्यक्तियों की एक समिति बनाई और समिति ने एक ही रंग (केसरिया) के ध्वज में नीचे बायीं ओर लाल रंग के चरखे का चिन्ह अंकित करने का सुझाव दिया, जिसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अस्वीकार कर दिया। तत्पश्चात् पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की एक बैठक हुई और उस बैठक में तिरंगे ध्वज को ही बीच की सफेद पट्टी में चरखे सहित मान्यता प्रदान की गई और उस निर्णय को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया लेकिन इसमें सबसे अहम बात यह रही कि तीनों पट्टियों के रंगों को धर्म-सम्प्रदायों से न जोड़कर उनके गुणों के आधार पर ही स्वीकार किया गया। इस ध्वज का आकार लम्बाई और चौड़ाई में 3:2 रखा गया।

1924 में आजादी के लिए संघर्षरत श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' ने झंडा गीत ''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा'' की रचना की और महात्मा गांधी ने उस गीत के दूसरे और तीसरे भाग को हटाकर उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। वह गीत पहली बार कानपुर में 1925 में कांग्रेस सम्मेलन में सामूहिक रूप से गाया गया। बाद में नेताजी सुभाष चंद्र बोष ने भी इसे एक लाख लोगों के साथ गाया और देखते ही देखते यह गीत क्रांतिकारियों का सबसे लोकप्रिय गीत बन गया। चाहे कांग्रेस का कोई सम्मेलन हो, कोई प्रभात फेरी हो अथवा क्रांतिकारियों का कोई आन्दोलन, ऐसे हर अवसर पर यही झंडा गीत बड़े ही जोशीले अंदाज में गाया जाने लगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के चंद दिनों पहले जब भारत के सम्मान और स्वाभिमान के प्रतीक स्वरूप स्वतंत्र भारत के लिए राष्ट्रीय ध्वज की चर्चा चली तो 1931 में सर्वसम्मति से स्वीकार किए गए ध्वज को ही पुनः राष्ट्र ध्वज के रूप में स्वीकार किया गया लेकिन 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा की एक बैठक में पं. नेहरू ने चरखे के स्थान पर इसमें देश की प्रगति, राष्ट्र के कानून और धर्म के पहिये के प्रतीक 24 तीलियों वाले अशोक चक्र को रखने का सुझाव दिया। संविधान सभा के सभी सदस्य इस सुझाव से सहमत हो गए और उसी दिन से राष्ट्रीय ध्वज को नए रूप में स्वीकार लिया गया। इस प्रकार हमारे राष्ट्रीय ध्वज को वर्तमान स्वरूप तक पहुंचने के लिए करीब 41 वर्षों का बहुत लंबा सफर तय करना पड़ा।

यात्रा

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

महात्मा मंदिर: गांधीजी के जीवन की एक आभासी यात्रा

तीन मंज़िला इस संग्रहालय में गांधीजी के जीवन की कहानी को तकनीक और विभिन्न माध्यमों से प्रस्तुत किया गया है। संग्रहालय में आगंतुकों को हेडफोन प्रदान किए जाते हैं, जिनसे हिंदी या अंग्रेज़ी में ऑडियो-विज़ुअल कथा सुनी जा सकती है। तीन मंज़िलों में फैला यह संग्रहालय एक अदभुत अनुभव प्रदान करता है। यात्रा की शुरुआत तीसरी मंज़िल से होती है, जहां पोरबंदर से जुड़ी कहानियां दिखाई जाती हैं—गांधीजी का जन्मस्थान। यह मंज़िल गांधीजी का परिवार वृक्ष और उनके बचपन की झलकियां दिखाती है—जैसे उन्हें क्लाइडोस्कोप देखना और राजकोट में नाटक देखना पसंद था, जहां वे स्कूल गए। एक नाटक राजा हरिश्चंद्र का जिक्र भी आता है, जिसने गांधीजी के 'सत्य' के सिद्धांत को गहराई से प्रभावित किया। यहां यह भी दिखाया गया है कि गांधीजी के भीतर मांसाहार से परहेज़, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य आदि जैसे विचार कैसे विकसित हुए। इस मंज़िल पर 3डी मैपिंग के ज़रिए दर्शकों को आभासी अनुभव मिलता है।

हाल ही में गुजरात के गांधी नगर स्थिति महात्मा मंदिर को देखने/जानने का अवसर मिला। मेरा गांधी-विनोबा विचार परिवार की विरासत का हिस्सा रहा है। बचपन से ही घर में 'सत्य', 'अहिंसा' और 'सेवा' जैसे शब्द केवल पढ़े या सुने नहीं, बल्कि जिए जाते रहे। गुजरात के गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर और दांडी कुटीर संग्रहालय की यात्रा ने इस अनुभवों को और जीवंत बना दिया। यह यात्रा महात्मा गांधी के विचारों, जीवन-दर्शन से सजीव साक्षात्कार की अनुभूति थी। यह उस व्यक्ति से मिलन जैसा था, जिसने बिना किसी हथियार के बल पर समूचे देश की चेतना को झकझोर दिया था। महात्मा मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही जो बात सबसे पहले मन को छूती है, वह है इसकी शांति, भव्यता और विचारों की ऊँचाई।

महात्मा मंदिर की नींव में गुजरात के 18,066 गांवों की मिट्टी कलशों में भरकर डाली गई थी—यह सचमुच एक जनता से जुड़ा स्मारक है। यह वही भाव था, जिसे गांधी 'ग्राम स्वराज' और 'लोकशक्ति' कहते थे। गांधी नगर के महात्मा मंदिर कार्यक्रम स्थल को एक पुल के ज़रिए जोड़ा गया है, जिसके साथ स्थित एक 41 मीटर ऊँचा शंक्राकार ढांचा है, जो नमक के ढेर की आकृति का अनुकरण करता है। यह ढांचा महात्मा गांधी के 1930 के दांडी मार्च से प्रेरित है, जो ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए नमक कर के विरुद्ध था।

34 एकड़ में फैले इस परिसर में भव्य सम्मेलन केंद्र, प्रदर्शनी हॉल और संगोष्ठी सभागार हैं। महात्मा मंदिर से कुछ ही दूरी पर स्थित दांडी कुटीर संग्रहालय इस यात्रा का सबसे भावनात्मक और अनुभवात्मक पहलू रहा। यह संग्रहालय जनवरी 2015 में उद्घाटित किया गया था। दांडी कुटीर को 240 मीटर लंबे केबल-स्टे ब्रिज से महात्मा मंदिर से जोड़ा गया है। इस पुल पर लगाए गए पवनचक्की (विंडमिल) 'चरखा' का प्रतीक हैं और ये लगभग 2 किलोवॉट विद्युत उत्पन्न करते हैं। महात्मा मंदिर के निकट स्थित दांडी कुटीर संग्रहालय में प्रवेश करना एक संग्रहालय में जाना भर नहीं था; यह एक यात्रा थी—गांधी के भीतर, उनके समय में, और अंततः अपने भीतर की।

तीन मंज़िला इस संग्रहालय में गांधीजी के जीवन की कहानी को तकनीक और विभिन्न माध्यमों से प्रस्तुत किया गया है। संग्रहालय में आगंतुकों को हेडफोन प्रदान किए जाते हैं, जिनसे हिंदी या अंग्रेज़ी में ऑडियो-विज़ुअल कथा सुनी जा सकती है। तीन मंज़िलों में फैला यह संग्रहालय एक अदभुत अनुभव प्रदान करता है। यात्रा की शुरुआत तीसरी मंज़िल से होती है, जहां पोरबंदर से जुड़ी कहानियां दिखाई जाती हैं—गांधीजी का जन्मस्थान। यह मंज़िल गांधीजी का परिवार वृक्ष और उनके बचपन की झलकियां दिखाती है—जैसे उन्हें क्लाइडोस्कोप देखना और राजकोट में नाटक देखना पसंद था, जहां वे स्कूल गए। एक नाटक राजा हरिश्चंद्र का ज़िक्र भी आता है, जिसने गांधीजी के 'सत्य' के सिद्धांत को गहराई से प्रभावित किया। यहां यह भी दिखाया गया है कि गांधीजी के भीतर मांसाहार से परहेज़, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य आदि जैसे विचार कैसे विकसित हुए। इस मंज़िल पर 3डी मैपिंग के ज़रिए दर्शकों को आभासी अनुभव मिलता है।

दूसरी मंज़िल पर गांधीजी की लंदन और दक्षिण अफ्रीका की यात्राएं चित्रित थीं। यहां उनका सत्याग्रह और नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष प्रेरणा देता है। वह दृश्य देखा जब गांधीजी को ट्रेन से उतारा गया—सिर्फ उनके रंगभेद के कारण। होलोग्राफ़ी, 360-डिग्री प्रोजेक्शन और ट्रांसपेरेंट एलईडी तकनीक ने उस माहौल को जैसे जीवित कर दिया।

पहली मंज़िल पर एक रेल कोच बनाया गया है, जिसमें हम आगंतुक चढ़ते हैं। कोच की खिड़कियों की जगह स्क्रीन लगी हैं, जो स्वतंत्रता पूर्व भारत के स्टेशनों और विभिन्न स्थानों जैसे शांतिनिकेतन की झलक देती हैं, जहां गांधीजी रवींद्रनाथ टैगोर जैसे समकालीन महान विभूतियों से मिलते हैं और सत्याग्रह व अहिंसा का संदेश देते हैं। वहीं भीमराव अंबेडकर और गांधीजी का संवाद भी प्रभावी रहा, जिसमें अस्पृश्यता की समाप्ति और हरिजनों के मंदिर प्रवेश को लेकर चर्चा को प्रस्तुत किया गया। यह पूरी यात्रा सिर्फ देखने की नहीं, अनुभव करने की थी। जैसे-जैसे संग्रहालय के गलियारे पार करते गए, वैसे-वैसे एक गहरी शांति मन में उतरती गई।

इस पूरी यात्रा के बाद एक बात मन में साफ थी कि—गांधीजी केवल किसी कालखंड के व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि आज भी वे एक जीवंत विचार हैं। उनके सिद्धांत, उनका जीवन, और उनका संघर्ष आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने सौ साल पहले थे।

दांडी कुटीर और महात्मा मंदिर ने हमें यह समझाया कि गांधीजी को जानना पुस्तकों से अधिक, अनुभव से संभव है। उनकी उपस्थिति किसी मूर्ति में नहीं, बल्कि हमारे भीतर के निर्णयों, हमारे व्यवहार और हमारे विचारों में बसती है। गांधीनगर की यह यात्रा केवल एक स्मृति बनकर नहीं रह गई; यह एक नए संकल्प की प्रेरणा बन गई—गांधीजी को केवल स्मारकों में नहीं, बल्कि जीवन में जीवित रखने का संकल्प।

इस पूरे भ्रमण में हमने महसूस किया कि दांडी कुटीर का अनुभव केवल गांधीजी की जीवनी पढ़ने से कहीं अधिक गहराई देता है। यह सजीव, स्पर्शनीय और आत्मसात करने योग्य अनुभव था। आधुनिक तकनीक ने गांधीजी की विचारधारा को आज के संदर्भ में समझने और महसूस करने का एक नया द्वार खोला। यह न केवल एक शैक्षिक यात्रा थी, बल्कि परिवार के लिए एक स्मरणीय अनुभव बन गई—जो आज के दौर में गांधीजी की प्रासंगिकता को गहराई से महसूस करने का अवसर देती है।

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

हर स्थिति में मन को खुश रखें

प्रसन्नता मन की दशा होती है। जरूरी नहीं कि हर समय हर कोई प्रसन्न दिखे या प्रसन्न रहें, हो सकता है कि समय और परिस्थिति के हिसाब से वह प्रसन्न न रह पाता हों पर यह भी ध्यान देने की बात है कि जब सब लोग प्रसन्न हों तो आपको भी प्रसन्न रहना चाहिए। कई लोग इस तरह के भी होते हैं कि चार लोग किसी बात से खुश हैं तो वे अपना अलग मत रखने के लिए ही दुःखी हो जायेंगे और बिना बात के ऐसे दुःखी दिखेंगे कि सारा संकट उन्हीं के उपर आ गया हों जबकि दुःख उनका है ही नहीं और जिस तरह से दुःखी दिख रहे हैं उसके पीछे जो हेतु है वह यह कि और खुश हैं इसलिए वे दुःखी होकर एक नई राह पर चलने का दिखावा कर रहे हैं। ऐसे लोगों से दुःख भी दुःखी रहता है और वह भी इनसे दूर ही रहता है कि जब प्रसन्नता के समय में इसका यह हाल है तो दुःख के समय यह क्या करेगा। कैसे अपने को और अपनी दुनिया को कंट्रोल करेगा । फिर ऐसे लोग अक्सर अकेले में अलग थलग पड़े मिलते हैं। यह भी साफ है कि दुनिया रहने के लिए मिली है और जब तक आप खुश होकर नहीं रहते जब तक दुनिया को खुशी खुशी नहीं जीते तब तक दुनिया का कोई मतलब ही नहीं। इसलिए वे सारे लोग सही होते हैं जो कैसी भी स्थिति क्यों न हों आराम से रहते हैं और धैर्य के साथ हर तरह के संकट को दूर करते हैं।

आपके चीखने चिल्लाने से कोई संकट दूर नहीं होता पर जब आप एक एक कर धैर्य से समस्या का समाधान करते चलते हैं तो समस्या दूर भी होती है और संकट से लड़ने का हुनर भी मिलता है। यहां कौन है जो पूरी तरह से संतुष्ट और आनंद में है। सबके पास एक न एक हैरानी परेशानी है और इस हैरानी परेशानी के पुल पर से सभी गुजरते हैं और जिंदगी के लिए एक संभावना भरी दुनिया खोज कर लाते हैं। बहुतों का तो यहां तक कहना होता है कि आपदाएं हमारी परीक्षा लेने आती हैं और इस परीक्षा को पास करना ही सच्चे अर्थों में जीवन धर्म होता है। इस बिंदु पर आकर जीवन की रचनात्मकता ही आदमी को अर्थवान बनाती है।

जीवन में अर्थ और रंग व रस तभी आता है जब आप जीवन को जीते हैं, जीवन के हर मोड़ पर खुश होना सीखते हैं और एक निर्मल खुशी को लेकर जीते हैं तो आप अकेले ही खुश नहीं होते अपने साथ अपने लोगों को लेकर खुश होते हैं और आपकी खुशी में अन्य लोगों की खुशी भी शामिल हो जाती है। इसीलिए वे सारे लोग जो जीवन के छोटे छोटे प्रसंग को खुशी के साथ जीते हैं, अपनी खुशी में औरों को शामिल करते चलते हैं उनके पास खुशियां भी दौड़ी चली आती है और जो मुंह फुलाकर बैठे रहते हैं वे बैठे ही रह जाते हैं। ऐसे लोगों का कोई भी कुछ नहीं कर पाता । इन्हें पूरी दुनिया भी मिल जाये तो किसी और लोक के लिए दुःखी हो जायेंगे। इन्हें कोई भी खुश नहीं कर सकता। ये मन से खुश नहीं होते, इनकी खुशी भौतिक पदार्थों के साथ होती है और यह भी सच है कि पदार्थ क्षणिक खुशी ही दे सकते हैं। जैसे ही पदार्थ और वह कारक बल खत्म होता इनकी खुशियां भी खत्म हो जाती। आजकल जो भी सोशल स्टडी हो रही है उसमें मनुष्य के स्वभाव को सबसे पहले जांचा और परखा जा रहा है। यह बराबर से देखने में आ रहा है कि आप अपने स्वभाव का इलाज नहीं करा सकते, मन की जो बीमारी है वह मन में ही जड़ीभूत होती रहती है और एक दिन यहीं मन सबसे बड़े बवाल का तनाव का कारण बन जाता है। इसके पीछे का कारण यहीं है कि आप मन से खुश नहीं हैं और आपकी ग्रंथि इतनी कटुता से भर गई है कि जब दुनिया में सही ढ़ंग से रहने की बात आती है जब सही आचरण की बात आती है तो आप पता नहीं किस दुनिया से तनाव को लेकर जीने लगते हैं और यहीं तनाव अनावश्यक खतरनाक बीमारियों को जन्म देती हैं। बहुत सारे लोग ठीक ठीक दिखते हैं फिर एक दिन पता चलता है कि वे कहीं जा रहे थे और गिर गये अब यह जो गिरना है उसका समय तो वे नोट करके बैठे नहीं थे और न ही इसके लिए तैयार थे। यह स्थिति जब आती है तो आदमी पछतावा करता है कि यह नहीं कर पाया और वह नहीं कर पाया पर अब पछताने से क्या होगा जब समय था जब हंसते खेलते दुनिया को जिंदादिली से जी सकते थे तब तो तनाव में समय निकाला बिना बात के दुःख मनाया और दुःख की चादर ओढ़ कर सो रहे पर इससे हासिल तो कुछ नहीं हुआ। इसीलिए यह कहा जाता है कि जब तक समय है तब तक अच्छे से जीवन को जीने में लगाना चाहिए। हमारी यह कोशिश होनी चाहिए कि हम स्वयं खुश रहे और औरों को भी हमारी वजह से खुशी मिले। यह खुशी किसी भी दुकान पर नहीं मिलती न ही किसी शोरूम में रखी हुई है कि आप जाएं और उठा लाएं । यह तो आपके भीतर है और आपको मन से खुश होने का हुनर पालना होगा तभी आप इस दुनिया में कुछ बेहतर कर पायेंगे। कहने का मतलब यह है कि सामान्य स्थिति में बहुत सारे लोग प्रसन्न होते हैं और होना भी चाहिए।

कामायनी में जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा के मुख से कहलवाया है कि -

'औरों को हंसते देखो मनु,
हंसो और सुख पाओ ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।।'

औरों को खुश होते देखना और स्वयं खुश होने की जो सीख है वहीं सबसे बड़ी मानवता है। यह मानवीय मूल्य है कि हमें अपनी खुशी के साथ साथ औरों की खुशी और औरों की दुनिया को भी देखना होता है और अपना विस्तार करना होता है। मनुष्यता विस्तारित होती है और यही पर जीवन का संसार का सुख और वह संकल्प होता है जिसमें हम केवल अपने लिए नहीं औरों के लिए जीते हैं।

प्रसन्नता एक सदुण की तरह है वह आपके पूरे जीवन को, परिवार को, समाज को एक साथ प्रभावित करता है। प्रसन्न होने में कुछ लगता नहीं पर बहुत सारे लोग प्रसन्न होते ही नहीं। अनायास ही मुंह फुलाकर घूमते रहते हैं। उनके मुंह फुलाकर घूमने से किसी को कुछ फर्क भी नहीं पड़ता पर ऐसे लोग खुश होने की जगह नाराजगी जाहिर करने में ही अपना सब कुछ दांव पर लगा कर घूमते रहते हैं। मान लीजिए कि आप किसी बात से, किसी संदर्भ से खुश नहीं हैं कोई बात नहीं दुनिया में बहुत सारी बातें ऐसी होती रहती हैं जिससे कोई भी खुश नहीं होता पर अपने मन को तो मत मार कर रखिए। यदि आप खुश नहीं रहते हैं तो आप मन को मार रहे हैं और यह भी सत्य है कि मन को मारने से आदमी की पूरी सेहत गिर जाती है। यदि आप स्वभाव से खुश हैं तो विपरीत परिस्थितियों में भी आपका कुछ नहीं बिगड़ता और बड़े आराम से आदमी इस संसार को जीने लगता है। यह जो दुनिया है वह जीने के लिए मिली है, खुश होकर जब मन से अपना हर कार्य संपादित करते हैं तो सीधी सी बात है कि कोई मुश्किल नहीं आती और आदमी हर हालात को अपने ढ़ंग से हैंडल कर लेता है। आदमी का सबसे बड़ा मित्र उसका धैर्य है, धैर्य को अपने साथ लेकर चलते रहिए और बगल की जेब में विवेक को भी रखते चलें यदि विवेक नहीं है तो फिर कितने भी तर्क करते रहे कुछ होने वाला नहीं है। धैर्य, लगन, बुद्धि विवेक ही संसार को संसार की तरह समझ कर जीने में आदमी की मदद करते हैं।

सेहत

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी
वरिष्ठ मनोचिकित्सक एवं 'ओवरथिंकिंग से आजादी' के लेखक

देश को ऑर्थो फिजिशियन की सख्त जरूरत

दुर्भाग्यवश, भारत की चिकित्सा व्यवस्था में अभी भी 'ऑर्थो फिजिशियन' जैसी सोच की व्यापक कमी है। दुनिया के कई विकसित देशों में ऐसे विशेषज्ञ होते हैं जो केवल सर्जरी नहीं, बल्कि जीवनशैली में सुधार, व्यायाम, फिजियोथैरेपी और अन्य गैर-सर्जिकल उपायों के माध्यम से मरीज को राहत पहुंचाते हैं। भारत में ज़रूरत है कि हम इस सोच को अपनाएं कि सर्जन के साथ-साथ ऑर्थो फिजिशियन की दृष्टि भी उतनी ही आवश्यक है।

भारत में मांसपेशियों, जोड़ों और रीढ़ की समस्याएं दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ, खराब जीवनशैली, लंबे समय तक बैठना, अत्यधिक मोबाइल या कंप्यूटर का प्रयोग और शारीरिक निष्क्रियता जैसे कारणों से देश की बड़ी आबादी इस तरह की समस्याओं से जूझ रही है। इन सभी स्थितियों में आमतौर पर लोग सबसे पहले ऑर्थोपेडिक सर्जनों से परामर्श लेते हैं। लेकिन यहीं एक महत्वपूर्ण बात अक्सर नजरअंदाज हो जाती है कि हर दर्द, खिंचाव या जकड़न का इलाज सर्जरी नहीं होता।

दुर्भाग्यवश, भारत की चिकित्सा व्यवस्था में अभी भी 'ऑर्थो फिजिशियन' जैसी सोच की व्यापक कमी है। दुनिया के कई विकसित देशों में ऐसे विशेषज्ञ होते हैं जो केवल सर्जरी नहीं, बल्कि जीवनशैली में सुधार, व्यायाम, फिजियोथैरेपी और अन्य गैर-सर्जिकल उपायों के माध्यम से मरीज को राहत पहुंचाते हैं। भारत में ज़रूरत है कि हम इस सोच को अपनाएं कि सर्जन के साथ-साथ ऑर्थो फिजिशियन की दृष्टि भी उतनी ही आवश्यक है।

फिजियोथैरेपिस्ट इस दिशा में एक अत्यंत योग्य, वैज्ञानिक और सुलभ समाधान हैं। वे मांसपेशियों और जोड़ों की संरचना, चाल-ढाल की गड़बड़ियों, रीढ़ से जुड़े तनावों, खेल की चोटों और पुराने दर्द की स्थितियों में विशेषज्ञ होते हैं। फिजियोथैरेपी का उद्देश्य होता है कि शरीर की प्राकृतिक गति को फिर से बहाल करना, बिना किसी औषधि या शल्यक्रिया के।

अभिन्न मित्र और भोपाल के ही फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. सुनील पांडेय वर्षों से इस मुद्दे को लगातार उठाते आ रहे हैं। उनके अनुसार, भारत में हर तीसरा ऑर्थोपेडिक केस ऐसा होता है जिसमें अगर समय रहते फिजियोथैरेपी शुरू हो जाए, तो न केवल ऑपरेशन टल सकता है, बल्कि मरीज की कार्यक्षमता भी तेजी से लौट सकती है। लेकिन जागरूकता और सिस्टम की उदासीनता इसमें सबसे बड़ी बाधा है।

इसके बावजूद, देश के चिकित्सा तंत्र में फिजियोथैरेपिस्ट की भूमिका को अब भी 'सहायक' या 'पैरामेडिकल' के रूप में ही देखा जाता है। अधिकांश सरकारी अस्पतालों में या तो फिजियोथैरेपी विभाग है ही नहीं, या है तो उसमें पर्याप्त स्टाफ, उपकरण और महत्व का अभाव है। अस्पतालों में भी फिजियोथैरेपिस्ट को कई बार सिर्फ पोस्ट-सर्जरी रिहैब तक सीमित कर दिया जाता है, जबकि उन्हें शुरुआती मूल्यांकन और इलाज का अवसर मिलना चाहिए।

इस उपेक्षा का एक कारण यह भी है कि अनेक मॉडर्न प्रैक्टिशनर फिजियोथैरेपी को गंभीरता से नहीं

लेते, या रेफरल देने में संकोच करते हैं। कभी-कभी यह संकोच असुरक्षा की भावना से भी उपजता है कि कहीं मरीज सर्जरी से बचकर पूरी तरह फिजियोथैरेपी पर निर्भर न हो जाए। यह दृष्टिकोण न केवल चिकित्सा की वैज्ञानिकता के विरुद्ध है, बल्कि मरीज के हित के भी विपरीत है।

तो समाधान क्या है? सबसे पहले, चिकित्सा शिक्षा में मल्टी-डिसिप्लिनरी दृष्टिकोण को शामिल किया जाना चाहिए। डॉक्टर और फिजियोथैरेपिस्ट के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा मिलना चाहिए। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, जिला अस्पतालों और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं में फिजियोथैरेपी को अनिवार्य सेवा के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही, आम जनता को भी यह बताया जाना चाहिए कि हर दर्द का इलाज गोली या ऑपरेशन नहीं होता।

भारत जैसे देश में, जहां आबादी बहुत बड़ी है और स्वास्थ्य संसाधन सीमित हैं, वहां ऐसी रणनीतियां ज़रूरी हैं जो कम लागत में, कम जोखिम के साथ, अधिक राहत प्रदान करें। इस दृष्टि से फिजियोथैरेपिस्ट को केवल सहयोगी नहीं, बल्कि स्वतंत्र और प्रमुख भूमिका में लाना समय की मांग है।

अब समय आ गया है कि हम 'ऑर्थो फिजिशियन' जैसी सोच को चिकित्सा व्यवस्था में जगह दें और फिजियोथैरेपी को उसका उचित सम्मान और स्थान प्रदान करें। मरीज की भलाई, स्वास्थ्य की वैज्ञानिकता और चिकित्सा व्यवस्था की प्रभावशीलता, तीनों के लिए यह आवश्यक है।

उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने दिल्ली में आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरी से की सौजन्य भेंट

भोपाल। उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने नई दिल्ली में आनंदपीठाधीश्वर, अनंत श्री विभूषित, श्री श्री 1008 आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरी महाराज (तपोनिधि, पंचायती श्री आनंद अखाड़ा) से सौजन्य भेंट कर आशीर्वाद एवं सान्निध्य प्राप्त किया। उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्वामी बालकानंद गिरी से धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विषयों पर विस्तार से चर्चा की और मार्गदर्शन प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि संत समाज का आशीर्वाद और विचारशील मार्गदर्शन लोककल्याण की दिशा में प्रेरक होता है। उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि भारत की सनातन परंपरा, हमारी आध्यात्मिक चेतना और संतों की सेवा भावना ही समाज में समरसता, शांति और नैतिक मूल्यों की स्थापना करती है। उन्होंने कहा कि संत-महात्माओं के सान्निध्य से सेवा और सद्भाव की प्रेरणा मिलती है, जो शासन के जनहितकारी प्रयासों को भी सार्थक दिशा प्रदान करती है।

उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने किये बाबा महाकाल के दर्शन, लोककल्याण की प्रार्थना की

श्रावण के दूसरे सोमवार को बाबा महाकाल की भव्य सवारी में हुए शामिल

भोपाल। पवित्र श्रावण माह के दूसरे सोमवार को उपमुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने उज्जैन में बाबा महाकाल के दर्शन किए और प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि एवं कल्याण की प्रार्थना की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल और नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय बाबा महाकाल की परंपरागत सवारी में श्रद्धा एवं भक्ति भाव से शामिल हुए। भगवान महाकाल की पालकी जैसे ही महाकालेश्वर मंदिर प्रांगण से निकली, पूरा वातावरण हर-हर महादेव के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि उज्जैन नगरी की धरती पर बाबा महाकाल का दर्शन परम सौभाग्य की बात है। श्रावण का यह पावन पर्व हमें भक्ति, सेवा और आत्मिक शुद्धता का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि धार्मिक परंपराएं हमारी सांस्कृतिक पहचान का आधार हैं। यह आध्यात्मिक शांति, सामाजिक एकता और संस्कारों की चेतना को सशक्त करते हैं।

उल्लेखनीय है कि श्रावण सोमवार को भगवान महाकाल की परंपरागत सवारी नगर भ्रमण पर निकलती है, जिसमें हजारों श्रद्धालु शामिल होते हैं। इस अवसर पर नगर को भव्य रूप से सजाया गया था और चारों ओर धार्मिक उल्लास का वातावरण था। सवारी में प्रशासन एवं महाकाल मंदिर समिति के अधिकारी, जनप्रतिनिधि, संत-महात्मा एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

एम्स भोपाल में एक नेत्रदान से दो ज़िंदगियों को मिली नई रोशनी

भोपाल। कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में एम्स भोपाल जनस्वास्थ्य से जुड़े प्रभावशाली कार्यों को निरंतर आगे बढ़ा रहा है। इसी क्रम में हाल ही में 'हॉस्पिटल कॉर्नियल रिट्रीवल प्रोग्राम' के अंतर्गत एम्स भोपाल के नेत्र विभाग ने एक नेत्रदान के माध्यम से दो व्यक्तियों को नई रोशनी प्रदान की। मध्यप्रदेश की 54 वर्षीय दिवंगत नेत्रदाता, श्रीमती माधुरी विश्वरूप, ने मरणोपरांत अपनी दोनों आँखें दान कीं, जिससे दो लोगों की जिंदगी रोशन हो सकी। पहली पुतली का प्रत्यारोपण 65 वर्षीय पुरुष को किया गया, जो सूखी आँख (ड्राय आई) और चोट के कारण दृष्टिहीनता का सामना कर रहे थे। उन्होंने कई अस्पतालों में इलाज कराया था, लेकिन डोनर न मिलने के कारण उन्हें राहत नहीं मिली। एम्स भोपाल में उन्हें नई पुतली लगाई गई। ऑपरेशन के बाद जब उन्हें रोशनी लौटनी शुरू हुई तो वह भावुक हो गए और रोते हुए बोले, 'अब मैं खाना देख कर खा सकता हूँ।' उन्होंने डॉक्टरों का हृदय से धन्यवाद करते हुए कहा, 'डॉक्टर वास्तव में भगवान का रूप हैं।' दूसरी पुतली का प्रत्यारोपण 65 वर्षीय महिला को किया गया, जिनकी आंख की एंडोथेलियल लेयर खराब हो चुकी थी। सफल ऑपरेशन के बाद उन्हें भी दृष्टि प्राप्त हुई। दोनों ऑपरेशन सफलतापूर्वक संपन्न हुए और यह एम्स भोपाल की प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं कि कैसे नेत्रदान के माध्यम से जीवन में प्रकाश लाया जा सकता है। इस मौके पर नेत्र विभाग के प्रमुख ने कहा कि कॉर्नियल ट्रांसप्लांटेशन केवल चिकित्सा प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक मानवीय अभियान है। यह समाज में जागरूकता, करुणा और आशा का संचार करता है। एम्स भोपाल की ओर से नेत्रदाता माधुरी विश्वरूप के परिवार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया गया, जिन्होंने इस अमूल्य निर्णय से दो ज़िंदगियों को रोशनी दी। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, यह उदाहरण है कि कैसे एक निस्वार्थ निर्णय दो लोगों की ज़िंदगी बदल सकता है। नेत्रदान मानवता की सच्ची अभिव्यक्ति है और एम्सझ भोपाल इस दिशा में सेवा और जागरूकता को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

10 दिनों से लगा बारिश पर ब्रेक, गर्मी-उमस से लोग परेशान

बारिश नहीं होने से बढ़ी बिजली की खपत, किसान चिंतित

बैतूल। सावन की शुरुआत हुए 11 दिन बीत गए है, लेकिन जिले में बारिश पर जो ब्रेक लगा है, वह अभी तक खत्म नहीं हुआ है। वैसे सावन की शुरुआत के साथ लोगों को अच्छी बारिश की उम्मीद थी, पर सावन में भी जोरदार बारिश नहीं हो रही है। जिस कारण तापमान बढकर 31.0 डिग्री पर आ गया है। रात का पारा 21.2 डिग्री पर है। इस कारण तेज गर्मी और उमस के चलते लोग परेशान है, और बीमार पड़ रहे हैं। मौसम विभाग के अनुसार इस सप्ताह मानसून की वापसी हो सकती है। लेकिन सिस्टम अभी भी कमजोर है, ऐसे में जोरदार बारिश की उम्मीद कम है। हालांकि सोमवार को भी आसमान में बादल छाये रहे। कभी धूप खिली, तो कभी बादलों ने आसमान में डेरा जमा लिया। मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान है कि दो तीन दिनों में नया सिस्टम बनने के बाद जिले में फिर से बारिश का दौर शुरू होगा। गौरतलब है कि इस बार के बारिश के सीजन में जुलाई की शुरूआत में वर्षा का दौर जारी रहा। वहीं आषाढ़ माह में तो सावन के जैसी झड़ी देखने को मिली, लेकिन सावन माह के शुरू होते ही बारिश गायब हो गई। अब जो नया सिस्टम बनेगा, उससे जिले में अच्छी बारिश के आसार हैं।

तापमान बढ़ने से बिजली की खपत बढ़ी- लगातार तापमान बढ़ने के कारण जिले में बिजली की खपत भी बढ़ी है। जुलाई में भी पंखे, कूलर और एसी का उपयोग हो रहा है। इससे घरेलू खपत में कमी नहीं आई है। जून में अच्छी बारिश से बिजली की खपत कम हुई थी। दूसरी तरफ खेतों में बोवनी के बाद मानसूनी की बारिश नहीं होने से किसानों ने अब जलस्त्रोतों से सिंचाई करना शुरू कर दिया है। ट्यूबवेल, कुओं से सिंचाई के लिए बिजली का उपयोग बढ़ा है। खपत बढने के कारण बिजली कंपनी शहर में बार-बार बिजली ट्रिप कर रही है। 10 से 15 मिनट के लिए अलग-अलग हिस्सों में बिजली बंद हो रही है।

जिले में अभी तक 367.1 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज- जिले की औसत वर्षा 1083.9 मि.मी. है तथा जिले में अभी तक 367.1 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 341.2 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी। जिले में 21 जुलाई 2025 को प्रातः 8 बजे समाप्त 24 घंटों के दौरान 10.2 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया कि 21 जुलाई 2025 को प्रातः 8 बजे तक तहसील बैतूल में 0.0, घोड़ाडोंगरी में 0.0, चिचोली में 0.0, शाहपुर में 0.0, मुलताई में 70.0, प्रभात पट्टन में 32.4, आमला में 0.0, भैंसदेही में 0.0, आठनेर में 0.0. तथा भीमपुर में 0.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है।

रोजाना छा रहे बादल, लेकिन बारिश नहीं- शहर में रोजाना बादल छा रहे हैं लेकिन बारिश नहीं हो रही है। बारिश नहीं होने से लोगों को गर्मी और उमस का सामना करना पड़ रहा है। हालात यह है कि लोगों को गर्मी से राहत पाने के लिए फिर से पंखे-कूलर का सहारा लेना पड़ रहा है। वहीं बारिश नहीं होने से लगातार तापमान में भी बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। अधिकतम तापमान 31 डिग्री के आसपास पहुंच गया है, वहीं न्यूनतम तापमान में भी उतार-चढाव बना हुआ है। ऐसे मौसम में चिकित्सकों ने सेहत पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी है। सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे का कहना है कि इस मौसम में लोगों को बाहर के खाने से बचना चाहिए। घर का तापमान मेंटेन करके रखे और सर्दी-खाँसी या बुखार होने पर तत्काल चिकित्सक से इलाज कराये।

इनका कहना है -

वर्तमान समय खेतों में नमी है, जिससे मौसम खुला रहता है तो फसलों के लिए लाभदायक ही है। हालांकि बारिश का यह विराम यदि लंबे समय तक जारी रहता है, तो फसलों की वृद्धि प्रभावित हो सकती है।

- डॉ. आनंद बडोनिया, उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

मौसम में अभी उतार-चढ़ाव जारी है। ऐसे मौसम में लोगों को अपनी सेहत के प्रति विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है, खासकर बच्चों एवं बुजुर्गों को । इस मौसम में बाहर का खाना खाने से बचे और सर्दी-खांसी सहित वायरल बुखार होने पर तत्काल उपचार कराये।

- डॉ. जगदीश घोरे, सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

केंद्र और राज्य शासन की सभी फ्लैगशिप योजनाओं में शत-प्रतिशत उपलब्धि हासिल की जाए: कलेक्टर

31 जुलाई तक किसानों का फसल बीमा करवाएं, समय सीमा की बैठक आयोजित

बैतूल। केंद्र और राज्य शासन की समस्त फ्लैगशिप योजनाओं में शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल की जाएं। प्रयास यह हो कि निर्धारित लक्ष्य से अधिक उपलब्धि प्राप्त हो। योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी स्तर पर कमी या लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अंतर्विभागीय समन्वय के मुद्दों का भी पूरी तत्परता से निराकरण किया जाएं। यह निर्देश सोमवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित समय सीमा की बैठक में बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने समस्त जिला अधिकारियों को दिए। बैठक में मुख्य

कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहें। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने सभी विभागों की विभागीय योजनाओं और प्रमुख कार्यक्रमों में प्रगति की विस्तृत समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने मध्यप्रदेश सडक़ विकास निगम, लोक निर्माण विभाग, परिवहन, राष्ट्रीय राजमार्ग और प्रधानमंत्री ग्रामीण सडक़ विकास के अधिकारियों को निर्देशित किया कि ब्लैक स्पॉट्स के चिन्हांकन की कार्यवाही शीघ्र पूर्ण की जाएं। बारिश के कारण क्षतिग्रस्त हुई सडक़ों की मरम्मत कराएं। उन्होंने परतवाड़ा मार्ग में हुए गड्ढों की शीघ्र मरम्मत कराएं जाने के निर्देश एमपीआरडीसी को दिए।

लर्निंग लायसेंस के लिए लगेगा कैंप- परिवहन विभाग की समीक्षा कर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि कॉलेज के सभी छात्र-छात्राओं का लर्निंग लाइसेंस बनाने के लिए कैंप का आयोजन कराएं। जिस पर बताया गया कि शनिवार 26 जुलाई को जेएच कॉलेज बैतूल के ऑडिटोरियम में परिवहन विभाग द्वारा लर्निंग लाइसेंस के लिए कैंप का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निर्देश दिए कि कैंप आयोजन के लिए सेशन निर्धारित कर कॉलेज के विद्यार्थियों के लाइसेंस बनाए जाएं। कैंप में राहवीर योजना, हिट एंड रन दुर्घटनाएं और कैशलेस इलाज योजना का प्रचार कराएं। उन्होंने बस वाहनों की भी जांच करने और अनफिट पाएं जाने वाहन मालिकों के विरुद्ध कार्यवाही किए जाने के निर्देश दिए।

हितग्राहियों की शीघ्र कराए ईकेवायसी- जिला आपूर्ति नियंत्रक को निर्देशित किया कि राशन की दुकानों से राशन का सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से वितरण हो। उन्होंने शेष बचे राशन हितग्राहियों का भी शीघ्र ईकेवाईसी कराएं जाने के निर्देश दिए। उन्होंने जिला विपणन अधिकारी मार्कफेड को डबल लॉक केंद्रों का आधुनिकीकरण किए जाने के लिए कहा।

वीरगति को प्राप्त हुए सिपाही श्री हरिओम नागर का पार्थिव शरीर पहुंचा भोपाल

भोपाल (नप्र)। जम्मू-कश्मीर के सियाचिन में मातृभूमि की सेवा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए राजगढ़ जिले के ग्राम टूटियाहैड़ी निवासी सिपाही श्री हरिओम नागर का पार्थिव शरीर सोमवार सायं लगभग 4 बजे विशेष विमान से भोपाल पहुंचा। भोपाल एयरपोर्ट पर नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला तथा अपर जिला दण्डाधिकारी श्री अंकुर मेश्राम ने पार्थिव देह पर पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और भारत माँ के इस वीर सपूत को नमन किया। उल्लेखनीय है कि सिपाही हरिओम नागर सियाचिन में भारत-पाक सीमा पर 13,000 फीट की ऊंचाई पर तैनात थे। ड्यूटी के दौरान 20 जुलाई की सुबह लगभग 9 बजे अचानक हुए भूस्खलन में एक विशाल शिला उनके ऊपर गिर गई, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए और वीरगति को प्राप्त हुए।

प्रदेश में इस वर्ष स्कूल के बच्चों को 4.30 लाख साइकिल की जाएंगी वितरित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरू पूर्णिमा से की थी शुरूआत

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा विभाग इस वर्ष निःशुल्क साइकिल प्रदाय योजना में 4 लाख 30 हजार बच्चों को निःशुल्क साइकिल का वितरण करेगा। साइकिल वितरण की शुरूआत मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरू पूर्णिमा महोत्सव में भोपाल के शासकीय कमला नेहरू सांदीपनि विद्यालय के सर्व सुविधा युक्त भवन के लोकार्पण समारोह से की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 50 बच्चों को निःशुल्क साइकिलें वितरित की। प्रदेश में अब तक एक लाख से अधिक बच्चों को उनकी पात्रतानुसार निःशुल्क साइकिल का वितरण किया जा चुका है।

निःशुल्क साइकिल प्रदाय योजना में ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत विद्यार्थी जो कि शासकीय विद्यालयों में कक्षा 6 और 9 में अध्ययनरत हैं, वह जिस ग्राम का निवासी है उस ग्राम में शासकीय माध्यमिक या हाई स्कूल संचालित नहीं है और उसे अपने विद्यालय तक पहुचंने के लिये 2 किलोमीटर या इससे अधिक की दूरी तय करनी पड़ती है, उन बच्चों कक्षा 6 या 9 में प्रथम प्रवेश पर एक बार निःशुल्क साइकिल दिये जाने का प्रावधान है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कन्या छात्रावास में पढ़ने वाली छात्राएं, जिनकी शाला छात्रावास से 2 किलोमीटर या उससे अधिक दूरी पर है उन्हें भी इस योजना में निःशुल्क साइकिल प्रदाय की जा रही है।

विभागीय अधिकारियों को निर्देश

स्कूल शिक्षा विभाग ने इस वर्ष विकासखंड शिक्षा अधिकारियों को 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के पहले सभी पात्र विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण के निर्देश दिये हैं। संचालनालय स्तर पर निःशुल्क साइकिल वितरण की नियमित समीक्षा की जा रही है। कक्षा 6 में पढ़ने वाले बच्चों को 18 इंच और कक्षा 9 में प्रवेश लेने वाले बच्चों को 20 इंच की साइकिल वितरित की जा रही है। विभागीय अधिकारियों को साइकिल वितरण के पहले उनके उचित भंडारण के संबंध में भी निर्देश दिये गये हैं। स्कूल शिक्षा विभाग ने इस वर्ष विभागीय योजनाओं का लाभ विद्यार्थियों को उचित समय पर दिये जाने के संबंध में कार्ययोजना तैयार की है।

करुणाधाम में 22 जुलाई से वंदे राष्ट्रमातरम् प्रतिष्ठा महोत्सव

भोपाल। भारत की संस्कृति, परंपरा और पराक्रम को समर्पित 'वंदे राष्ट्रमातरम्' राष्ट्र अनुष्ठान में देवी भारत माता के पूजन, यज्ञ, कन्या पूजन, अन्नदान, प्रकृति पूजन एवं कला संस्कार जैसे विशिष्ट आयोजन होंगे। अनुष्ठान करुणाधाम आश्रम में 25 जुलाई तक चलेगा। ज्ञात हो कि इसी दिन वर्ष 2015 में भव्य प्राण प्रतिष्ठा समारोह कर मां महालक्ष्मी के श्री विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी।

आश्रम के श्री शाश्वत शांडिल्य ने बताया कि यह आयोजन करुणाधाम पितृ पुरुष परम्पूज्य गुरुदेव श्री श्री 1008 श्री बाल गोविन्द जी शांडिल्य महाराज के आशीर्वाद से करुणाधाम पीठाधीश्वर गुरुदेव श्री सुदेश जी शाडिल्य महाराज के सानिध्य में हो रहा है। अनुष्ठान से माँ आदिशक्ति की शक्ति के साथ राष्ट्रगौरव, स्वाभिमान और अखंड भारत की भावना सशक्त होगी।

होंगे विभिन्न कार्यक्रम

करुणाधाम में बुधवार 23 जुलाई को सुबह 8 से दोपहर 12 बजे तक पंचांग प्रयोग, गुरुवार 24 जुलाई को सुबह 8 से दोपहर 12 बजे तक भूमंडल स्थापना और शुक्रवार 25 जुलाई को दोपहर 12 बजे पूर्ण आहूति भी होगी। इसी दिन शाम को 7:30 बजे मां महालक्ष्मी की दिव्य आरती का आयोजन भी किया गया है।

सांस्कृतिक संध्या में विशेष

आश्रम की सुश्री ईशा शांडिल्य ने बताया कि मंगलवार 22 जुलाई को रात 8 बजे साधो बैण्ड की प्रस्तुति होगी। बुधवार 23 जुलाई को रात 8:00 बजे श्री संजय मेहता एवं समूह द्वारा ड्रामा का प्रस्तुतिकरण किया जाएगा और गुरुवार 24 जुलाई को रात 8 बजे पंडित श्री राजेंद्र गंगानी द्वारा कत्थक की प्रस्तुति दी जायेगी।

कलेक्टर ने राजस्व कार्यों की समीक्षा की, राजस्व वसूली में गति लाने के दिए निर्देश

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज राजस्व कार्यों की गहन समीक्षा करते हुए राजस्व वसूली के कार्यों में गति लाने के निर्देश दिए हैं उन्होंने कलेक्ट्रेट के बेतवा सभाकक्ष में आयोजित आरो बैठक में उपस्थित अनुभाग क्षेत्र के समस्त एसडीएम तथा तहसीलदार समेत सभी राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि प्रदेश स्तरीय जारी ग्रेडिंग सूची में राजस्व वसूली के मामले में विदिशा जिले की स्थिति अच्छी बने इसके लिए राजस्व वसूली के निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति करें। उन्होंने राजस्व वसूली के कार्यो को पहली प्राथमिकता के साथ करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बैठक में विवादित , अविवादित नामांतरण, विवादित, अविवादित बंटवारा, नक्शा तरमीम, पीएम किसान ई-केवायसी, डिजिटल क्राप सर्वेक्षण, भूमि आवंटन प्रकरणों की समीक्षा सहित अन्य राजस्व से संबंधित कार्यो की समीक्षा की है। उन्होंने आरबीसी 64 के तहत सर्पदंश प्रकरणों के भुगतान की समीक्षा की तथा प्रकरणों में किसी भी प्रकार की विलंबता भुगतान में ना हो के निर्देश दिए हैं। उन्होंने जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए एसडीएमो को निर्देशित किया है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बैठक में वसूली के कार्यों की समीक्षा के दौरान कहा कि वसूली के कार्यों मे संबंधित क्षेत्र में आरआई को लगाया जाना सुनिश्चित करें साथ ही साथ उन्होंने ग्रामवार सूची

तैयार कर राजस्व वसूली की जाए के लिए निर्देश दिए हैं। उन्होंने आगामी बैठक में गिरदावरी में किए गए कार्यों की जानकारी लेकर आने के निर्देश भी दिए हैं।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने भरण पोषण के मामलों में गंभीरता से कार्यों का संपादन करने के निर्देश दिए हैं उन्होंने कहा है कि भरण पोषण के मामले में आवेदक यहां-वहां भटकें और परेशान ना हो इसके लिए विशेष ध्यान दें , सिविल कोर्ट में प्रकरण पेंडिंग ना रहे इसके लिए विशेष व्यवस्थाएं बनाई जाना सुनिश्चित करें।

पर्यटन को बढ़ावा: कलेक्टर श्री गुप्ता ने विदिशा जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किये जा रहे कार्यों के संबंध में भी एसडीएम और तहसीलदार को मार्गदर्शन दिया है। उन्होंने कहा कि जिले में चिन्हित पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों का रुझान बढ़े इसके लिए विशेष कार्य किये जा रहे हैं। इसके लिए कमेटी की बैठक होगी जो भी पर्यटन क्षेत्र हैं सबकी सूची बनाई जाकर उपलब्ध कराएं। साथ ही साथ उन्होंने कहा कि पर्यटन स्थलों के बोर्ड रास्ते पर अवश्य लगाए जाएं, जो भी बड़े पर्यटन स्थल हैं वहां भी जिले के अन्य पर्यटन स्थलों की जानकारी दर्ज की जाए ताकि पर्यटक बार्ड पर अंकित जानकारी से पर्यटक जिले के अन्य पर्यटन स्थलों पर भी पहुंच सकें।

जल भराव या कीचड़ से रास्ता प्रभावित ना हो

कलेक्टर श्री गुप्ता ने वर्षा ऋतु जारी है को ध्यानगत रखते हुए जिले के जिन क्षेत्रों में जल भराव और कीचड़ की स्थिति उत्पन्न होती है उन क्षेत्रों में कीचड़ की साफ-सफाई करने तथा जल भराव की निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए भी दिशा निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि आम नागरिकों को परेशानी ना हो इसके लिए बेहतर कार्य कीया जाना सुनिश्चित करें। विशेष कर उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूली विद्यार्थी जल भराव या कीचड़ इत्यादि के कारण स्कूल जाने से वंचित न रहे इसके लिए भी विशेष कार्य करें रास्ता प्रभावित न हो इसका विशेष ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि सके यदि खराब है तो वेंडर को नोटिस जारी करें। उक्त बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना , पीएम जनमन योजना सहित अन्य योजनाओं के कार्यों की समीक्षा भी की गई। उन्होंने कहा कि एसडीएम अपने स्तर पर भी पीएम आवास के कार्यों की मॉनिटरिंग करें।

बायोमैट्रिक अटेंडेंस

कलेक्टर श्री गुप्ता ने राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वह अपने कार्यालय में बायोमेट्रिक अटेंडेंस की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए मशीनें लगवाया जाना सुनिश्चित करें, ताकि अधिकारी, कर्मचारी समय पर दफ्तर पहुंच कर अपनी अटेंडेंस लगा सकें। उन्होंने कहा है कि बायोमैट्रिक अटेंडेंस के लिए मशीन लग जाने से अधीनस्थ अमला समय पर ऑफिस पहुंचेंगे और अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। इसके अलावा उन्होंने न्यायालय में 3 माह या 8 से 10 पेशी में पत्रक लंबित ना रहे के निर्देश भी दिए हैं। पूर्ण पारदर्शिता के साथ इन कार्यों को संपादन हो, नामांतरण और बटांकन एवं खसरे के साथ नक्शों में बटांकन कार्यों के संबंध में कहा कि सभी अपने कर्तव्यों का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करें इस बैठक में अवैध कॉलोनी के खिलाफ कार्यवाही सुनिश्चित कराने के संबंध में भी दिशा-निर्देश दिए गए हैं। उक्त बैठक में अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर, जिला पंचायत सीईओ श्री ओपी सनोड़िया, संयुक्त कलेक्टर श्रीमती मोहिनी शर्मा, सुश्री निकिता तिवारी सहित समस्त एसडीएम, तहसीलदार, नायब तहसीलदार बैठक में मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

नवजात शिशुओं की माताओं को छुट्टी से पहले मिला जन्म प्रमाण पत्र

बैतूल (निप्र)। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंशानुरूप जिले में नवजात शिशुओं का जन्म प्रमाण पत्र उनकी माताओं को अस्पताल से छुट्टी मिलने से पहले ही प्रदान किया जा रहा है। इसी क्रम में शुक्रवार को लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने जनपद भैंसदेही के शासकीय अस्पताल पहुंचकर तीन माताओं को उनके नवजात शिशु का जन्म प्रमाण पत्र सौंपा। शासन की मंशा के अनुरूप माता श्रीमती फूलवंती, श्रीमती रितू वाड़िवा, श्रीमती गंगा को छुट्टी से पूर्व ही उनके बच्चे का पहला कानूनी दस्तावेज सौंपा गया। कार्यक्रम के दौरान विधायक भैंसदेही महेंद्र सिंह चौहान, कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े तथा स्वास्थ्य विभाग का स्टाफ मौजूद रहा। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. हुरमाड़े ने प्रभारी मंत्री श्री पटेल को आयुष्मान योजना, टीकाकरण कार्यक्रम, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम इत्यादि स्वास्थ्य मूलक योजनाओं की प्रगति के संबंध में जानकारी भी दी।

वन अधिकार अधिनियम के तहत वन मित्र पार्टल का प्रशिक्षण सम्पन्न

हरदा (निप्र)। वन अधिकार अधिनियम के तहत वन मित्र पोर्टल पर ग्राम पंचायत स्तर पर लंबित नवीन दावों के समय सीमा में निराकरण कराने के लिये कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देश पर जिला संयोजक जनजातीय कार्य विभाग श्रीमति पारूल जैन की उपस्थिति में बुधवार को जनपद पंचायत सभा कक्ष हरदा में ग्राम पंचायत सचिव, सहायक सचिव, पटवारी एवं वन रक्षकों का वनमित्र पोर्टल का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में ग्राम सभा एवं ग्राम वन अधिकार समिति को वन मित्र पोर्टल पर दावों के निराकरण में आ रही समस्याओ को ध्यान में रखकर ग्राम वन अधिकार समिति गठन, दावों का भौतिक सत्यापन, मोबाईल एप के माध्यम से दावेदार की भूमि के रकबे का सर्वे एवं ग्राम वन अधिकार समिति द्वारा दावों का निराकारण के संबंध में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में अनुविभागीय अधिकारी वन श्री रवि कनोजिया, क्षेत्र संयोजक जनजातीय कार्य विभाग श्री एस.आई. मंडराई सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम व जागरूकता के लिये चलाया विशेष अभियान

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के मार्गदर्शन में जिले में बाल भिक्षा वृति की रोकथाम एवं जागरुकता के लिए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विशेष जागरुकता अभियान प्रारंभ किया गया। प्रभारी जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्रीमती सीमा जैन ने बताया कि अभियान के तहत दिन शुक्रवार को हरदा शहर के बस स्टेंड, रेल्वे स्टेशन, हरदुल बाबा मन्दिर चौराहा एवं अन्य मुख्य स्थानों पर जागरुकता अभियान चलाया गया। साथ ही विकासखण्ड स्तर पर भी जागरुकता अभियान चलाया गया। इस दौरान उपस्थित लोगों से अपील की गई कि बच्चों को भिक्षा नहीं शिक्षा दें। इस दौरान बताया गया कि किशोर न्याय बालकों की देखरेख एवं संरक्षण अधिनियम 2015 की धारा 76 के तहत बच्चों का भिक्षा के लिए प्रयोग करने पर या बच्चे से भिक्षावृति कराने पर 5 वर्ष का कारावास व 1 लाख रुपये के दण्ड का प्रावधान है। इस दौरान उपस्थित लोगों से अपिल की गई की कोई बच्चा भिक्षावृति करता पाया गया या कराते पाया जाता है तो चाइल्ड लाइन हेल्पलाइन नं 1098 पर भी सूचना दें।

जनपद पंचायत बनखेड़ी में विभागीय योजनाओं की समीक्षा की गई

नर्मदापुरम (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सौजान सिंह रावत द्वारा शुक्रवार को जनपद पंचायत बनखेड़ी में विभागीय योजनाओं की समीक्षा की गई। सीईओ जिला पंचायत द्वारा प्रधानमंत्री आवास, मनरेगा, एक बगिया मां के नाम, स्वच्छ भारत मिशन आदि योजनाओं व अभियान की समीक्षा की गई एवं योजनाओं मे प्रगति के निर्देश दिए गये मनरेगा योजना अंतर्गत खेत तालाब कूप रिचार्ज कार्य जो जलगंगा अभियान मे लिए गये थे की पूर्णता के निर्देश दिए गये। एक बगिया मां के नाम अंतर्गत हितग्राही चयन की समीक्षा की गई सीईओ जिला पंचायत द्वारा सभी को प्रधानमंत्री आवास पूर्णता के निर्देश दिए गये सवच्छ भारत अभियान अंतर्गत स्वछता सर्वेक्षण जल्दी पूर्ण करने के निर्देश दिए गये। बैठक मे कररोपण, नलकर जलकर संपत्ति कर की वसूली की समीक्षा की गई बैठक मे जिला पंचायत के परियोजना अधिकारी शैलेश ऊइके, अभिषेक तिवारी, प्रीति बरकाड़े, जनपद की मुख्य कार्यपालन अधिकारी सहायक यंत्री उपयंत्री, पंचायतो के सचिव, उपयंत्री उपस्थित रहे।

मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा दो दिवसीय प्रबंधन कैम्पिंग प्रशिक्षण सम्पन्न

सीहोर (निप्र)। मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा सीहोर जिले के वन मण्डल अंतर्गत ग्राम कठौतिया ईको जंगल कैम्प में दो दिवसीय गंतव्य स्थल प्रबंधन एवं कैम्पिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य ईको पर्यटन स्थल पर कार्यरत समिति सदस्यों को रोजगार के नये आयाम विकसित करना, स्थल पर आने वाले पर्यटकों को वन एवं वन्य-जीव पर्यावरण के संबंध में शिक्षित करना और स्थल के आसपास के सभी गाँवों को वनों को संरक्षित करने के लिये जागरूक करना है। प्रशिक्षण में मुख्य कार्यपालन अधिकारी ईको पर्यटन विकास बोर्ड डॉ. समिता राजौरा ने सभी प्रशिक्षणार्थियों से संवाद किया।

प्रशिक्षण में 12 ईको पर्यटन से आये 49 सदस्यों ने लिया भाग : प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के 12 ईको पर्यटन गंतव्य स्थलों, जिनमें सापना ईको पर्यटन स्थल वन मण्डल दक्षिण बैतूल, मगरपाठ व कठौतिया ईको पर्यटन स्थल वन मण्डल सीहोर, बोदाखो व समर्धा ईको पर्यटन स्थल वन मण्डल भोपाल, चिड़ीखो अभयारण्य वन मण्डल राजगढ़, देलावाड़ी ईको पर्यटन स्थल रातापानी टाइगर रिजर्व, उमरीखेड़ा ईको पर्यटन स्थल वन मण्डल इंदौर, देवखो कूनो वन्य-प्राणी अभयारण्य, चारखेड़ा ईको पर्यटन स्थल वन मण्डल खण्डवा, पनपथा ईको पर्यटन स्थल बाँधवगढ़ टाइगर रिजर्व और खिवनी अभयारण्य वन मण्डल देवास से आये कुल 49 सदस्यों, वन परिक्षेत्र अधिकारी, वन रक्षक, समिति अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सदस्य ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

ईको पर्यटन की गतिविधियों को समझाया : प्रशिक्षण के पहले सत्र में ईको पर्यटन समिति का गठन एवं संचालन, समिति सदस्यों की चयन प्रक्रिया, समिति गठन की प्रक्रिया, समिति सदस्यों तथा अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष का दायित्व एवं कर्तृत्व्य, प्रत्येक माह में समिति की बैठकों का रजिस्टर संधारण, संघर्ष प्रबंधन, सेवा प्रदाता का चयन और कानूनी अनुपालन के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। दूसरे सत्र में अतिथि सत्कार प्रबंधन, अतिथि रवानगी, स्टोर प्रबंधन, किचन प्रबंधन, कैम्प साइड प्रबंधन, टॉयलेट प्रबंधन, तीसरे सत्र में साइड प्रबंधन, साफ-सफाई एवं स्वच्छता प्रबंधन, बुनियादी सुविधा, भण्डार प्रबंधन, सुरक्षा प्रबंधन, ट्रेकिंग एवं कैम्पिंग आदि के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। ईको पर्यटन के अंतर्गत गतिविधियों में प्राकृतिक पथ-भ्रमण, पक्षी-दर्शन, विलेज वॉक, रात्रि जंगल वॉक, साहसिक गतिविधि, सेल्फी पाइंट और बैलगाड़ी की सैर इत्यादि शामिल है। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र भी दिये गये।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने बासौदा एवं कुरवाई थाना में दर्ज दो प्रकरण में फरार आरोपियों की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए क्रमशः तीन-तीन हजार रूपए नगद इनाम देने की घोषणा की है। बासौदा के थाना देहात में दर्ज अपराध प्रकरण क्रमांक 132/2025 का फरार आरोपी बुन्देल सिंह पुत्र अनंत सिंह लोधी निवासी नयागांव थाना त्योंदा एवं कुरवाई थाना में दर्ज अपराध प्रकरण क्रमांक 122/2025 का फरार आरोपी कल्ला उर्फ शुभेन्द्र पुत्र लाखन सिंह राजपूत निवासी ग्राम झागर थाना कुरवाई सहित दोनो प्रकरणो में सूचना देने अथवा गिरफ्तारी में मदद करने वालो के लिए क्रमशः तीन-तीन हजार रूपए का नगद इनाम घोषित किया गया है। सूचना देने वाला व्यक्ति चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

बैतूल (निप्र)। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन 19 जुलाई को किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कृषकों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जागरूक करना एवं प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की जानकारियां प्रदान करना था। कार्यशाला में कृषकों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जानकारी प्रदान की गई। एसबीआई जनरल इंश्योरेंस कंपनी के जोनल मैनेजर श्री त्रंबकेश्वर तिवारी ने बताया कि खरीफ मौसम में अधिसूचित फसलों का बीमा प्रारंभ हो चुका है। कृषकों द्वारा दिए गए प्रीमियम राशि सोयाबीन फसल के लिए 840 रुपए, मक्का फसल के लिए 722 रुपए, धान सिंचित फसल के लिए 814 रुपए, धान असिंचित फसल के लिए 651 रुपए, अरहर फसल के लिए 735 रुपए प्रति हेक्टेयर देय है। फसल बीमा करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित है। प्रधानमंत्री

फसल बीमा योजना के तहत बीमा करने के लिए इच्छुक अऋणी कृषक अपनी निकटतम बैंक शाखा सरकारी समिति अधिकृत चैनल एवं जन सेवा केंद्र एवं कृषक स्वयं भी राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल ऑनलाइन आवेदन कर योजना से जुड़ सकते हैं। कृषकों को फसल बीमा करवाने के लिए आवश्यक दस्तावेज बैंक पासबुक, फसल बुवाई प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बही एवं बटाईदार किसान या किराए पर ली गई भूमि के लिए भूमि मालिक द्वारा शपथ पत्र प्रस्तुत किया जाना अनिवार्य है। जिले के किसानों से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में जुड़कर योजना का लाभ उठाने का अनुरोध किया है। इस अवसर पर जिला पंचायत कृषि स्थाई समिति अध्यक्ष श्री शैलेंद्र कुंभारे, विकासखंड कृषि स्थाई समिति अध्यक्ष श्री माधवरा मनकर, भारती किसान संघ अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री दीपक कपूर, किसान मोर्चा अध्यक्ष श्री महेश्वर सिंह चंदेल, प्रांतीय सदस्य किसान संघ पुरुषोत्तम सरले, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट श्री राजीव रंजन श्रीवास्तव, उपसंचालक कृषि श्री आनंद कुमार बडोनिया, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ.आर डी बारपेटे एवं कृषि विभाग के समस्त अनुविभागीय कृषि अधिकारी, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी एवं क्षेत्रीय कृषि विस्तार अधिकारी, एसबीआई जनरल इंश्योरेंस से जोनल मैनेजर श्री त्रंबकेश्वर तिवारी, जिला प्रबंधक श्री राकेश कुमार बेरवा एवं तहसील स्थलीय एसबीआई जनरल इंश्योरेंस की टीम उपस्थित थी।

राष्ट्र के लिए मध्यस्थता अभियान अंतर्गत जिला न्यायालय में प्रशिक्षित अधिवक्ता मध्यस्थों के साथ बैठक का आयोजन

बैतूल (निप्र)। राष्ट्र के लिए मध्यस्थता अभियान के अंतर्गत जिला न्यायालय बैतूल में 18 जुलाई को माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश, अध्यक्ष श्री दिनेश चन्द्र थपलियाल द्वारा प्रशिक्षित अधिवक्ता मध्यस्थों के साथ बैठक की गई। उक्त बैठक में प्रधान न्यायाधीश कुटुम्ब न्यायालय श्री शिवबालक साहू, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, श्रीमती शर्मिला बिलवार एवं जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री सोमनाथ राय एवं जिले के प्रशिक्षित अधिवक्ता मध्यस्थ श्री बीके पांडे, श्री देवधन चढ़ोकार, श्री संजय चौरसे, श्री अजयसिंह चौहान, श्री रघुनाथ निरापुरे, श्री राकेश कुमार सोनारे, श्री संदीप कुमार खाण्डवे, श्रीमती गीता पंवार, श्रीमती सुनंदा नागले, श्री लवकुश निरापुरे एवं श्री नरेन्द्र चौरसिया उपस्थित रहे। बैठक में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री दिनेश चन्द्र थपलियाल ने बताया कि माननीय उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली द्वारा पूरे भारत में 1 जुलाई 2025 को 90 दिवसीय राष्ट्र के लिए मध्यस्थता अभियान लागू किया गया है, जो 30 सितंबर तक जारी रहेगा। उक्त अभियान अंतर्गत जिला बैतूल एवं अधीनस्थ सिविल न्यायालयों मे लंबित दुर्घटना दावा, घरेलु हिंसा, चेक बाउन्स, वाणिज्यिक विवाद, सर्विस मेटर, आपराधिक शमनीय प्रकरण, उपभोक्ता विवाद, ऋण वसूली, वटवार, बेदखली, भूमि अधिग्रहण तथा अन्य सिविल प्रकरणो का मध्यस्थ के माध्यम से निराकरण कराया जाना है।

स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर सीहोर में निकाली गई भव्य रैली

अनेक जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने सीहोर के नागरिकों और स्वच्छता टीम को दी बधाई

सीहोर (निप्र)। स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 में नगर पालिका परिषद सीहोर द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर में भव्य रैली एवं कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह रैली सीहोर के कोतवाली चौराहा से प्रारंभ हुई और तहसील चौराहे पर संपन्न हुई। इस रैली में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, स्कूली विद्यार्थियों और आम नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सीहोर नगर पालिका की टीम को बधाई दी। रैली में स्कूली बच्चों ने स्वच्छता पर आधारित रंगीन पोस्टर और नारों के साथ जनमानस को जागरूक किया। अधिकारीगण और जनप्रतिनिधियों ने पैदल चलकर स्वच्छता का संदेश का संदेश दिया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों द्वारा महात्मा गांधी की मूर्ती पर माल्यार्पण कर सभी को स्वच्छता की शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष श्री नरेश मेवाड़ा, नगर पालिका अध्यक्ष श्री प्रिंस राठौर और पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि यह सफलता सिर्फ नगर पालिका की नही बल्कि सभी सीहोर वासियों की है। हम सभी ने मिलकर स्वच्छता को जन आंदोलन बनाया है, इसी का परिणाम है कि आज हमारे सीहोर ने स्वच्छता में यह उत्कृष्ट उपलब्धि हांसिल की है। अब हमें इसे बनाए रखने का संकल्प लेना होगा। ताकि आने वाले वर्षों में भी हमारा शहर स्वच्छता में उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त करे। उन्होने कहा कि हमारा लक्ष्य अब सिर्फ स्वच्छता नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित और सुंदर सीहोर का निर्माण करना है। उन्होंने कहा कि जब नगर स्वच्छ होता है, तो सकारात्मक ऊर्जा स्वतः ही प्रवाहित होती है। सीहोर ने यह उपलब्धि प्राप्त कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस अवसर पर कलेक्टर श्री बाला गुरु के. ने जिले के नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वच्छता सर्वेक्षण में मिली यह सफलता हम सभी के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। जिला प्रशासन स्वच्छता के लिए निरंतर आगे भी ऐसे ही नागरिक सहभागिता वाले अभियान चलाता रहेगा। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य स्वच्छता में केवल पुरस्कार पाना नहीं, बल्कि स्वच्छता के लिए व्यवहार में स्थायी परिवर्तन लाना है। उन्होंने कहा कि जब एक शहर स्वच्छ होता है तो वहां के नागरिकों के जीवन पर भी इसका बेहतर प्रभाव पड़ता है, इसके साथ ही स्वच्छ हवा एवं स्वच्छ वातावरण से बीमारियों का खतरा भी कम होता है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए सीहोर के नागरिकों और नगरपालिका की टीम को बधाई दी। कार्यक्रम में एसपी श्री दीपक कुमार शुक्ला ने कहा कि स्वच्छ वातावरण का सीधा संबंध विकास, जनस्वास्थ्य और कानून-व्यवस्था से है। गंदगी अपराध और बीमारी दोनों को जन्म देती है। हम सभी को मिलकर न आगे यह प्रयास करना होगा कि हम हमेशा स्वच्छता में उत्कृष्ट स्थान पर रहें। उन्होंने कहा कि शासन के निर्देशानुसार 15 जुलाई से 30 जुलाई तक समाज को नशे से बचाने के लिए नशे से दूरी, है जरूरी नामक अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य नशे जैसी सामाजिक बुराई को खत्म करना है। इस अवसर सभी को नशामुक्ति की शपथ भी दिलाई गई।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मुख्य सचिव अनुराग जैन ने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में सौजन्य भेंट कर सफल विदेश यात्रा के लिए बधाई दी।

PWD अधिकारियों के सैर-सपाटे पर लगाम

झील की नगरी भोपाल की खूबसूरत वादियों के सैर सपाटे का शौक रखने वाले पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों पर अब विभाग ने लगाम कसने की तैयारी कर ली है। खबर है कि काम के समय भी भोपाल की 'सैर-सपाटा'

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

करने वाले इन साहबों को अब मुख्यालय छोड़ने से पहले प्रमुख सचिव से लेकर प्रमुख अभियंता तक से अनुमति लेनी होगी. यह 'सख्त पहल' उन शिकायतें के बाद हुई है जहां अधिकारी राजधानी की सड़कों पर घूमते तो खूब दिखते थे, लेकिन अपने दफ्तरों में उनकी कुर्सी खाली ही मिलती थी. अब देखना यह होगा कि क्या इस नई व्यवस्था से सड़कों का काम रफ्तार पकड़ेगा या फिर अधिकारी नए बहाने ढूंढने में मशगूल हो जाएंगे. आखिरकार, भोपाल की हवा में कुछ तो ऐसा है जो काम से ज्यादा 'सैर' को लुभाता है!

मंत्री जी की 'पर्यावरण-प्रेम' पहल

पर्यावरण संरक्षण के प्रति राज्य सरकार के मंत्री इंदर सिंह परमार की पहल वाकई सार्थक और अनोखी है। पिछले एक साल से मंत्री महोदय अपने विधानसभा क्षेत्र से लेकर पार्टी के जिला कार्यालय और राजधानी के सरकारी बंगले तक में दोपहर 1:30 बजे से 2:30 बजे के बीच, ठीक एक घंटे के लिए बिजली पूरी तरह बंद करवा देते हैं. उनका मानना है कि इससे न केवल पर्यावरण संरक्षण का मजबूत संदेश जाता है, बल्कि बिजली की भी बचत होती है। अब तक तो हमने सिर्फ 'पावर कट' सुना था, लेकिन यह तो 'पावर को छुट्टी' देने वाली बात है! उम्मीद है कि मंत्री जी की इस 'ऊर्जा-बचत' पहल से प्रेरणा लेकर बाकी नेता भी कुछ ऐसे ही 'चमत्कारी' कदम उठाएंगे, जिससे जनता को भी कुछ 'फायदा' महसूस हो.

'पावरफुल' नेता से कार्यकर्ताओं ने बनाई दूरी

एक समय भाजपा के अति-पावरफुल रहे एक नेता और वर्तमान सांसद से इन दिनों पार्टी के पदाधिकारी ही नहीं, कार्यकर्ता भी दूरी बनाए हुए हैं। आलम यह है कि सांसद महोदय जब भोपाल में होते हैं तो उनके बंगले में इक्का-दुक्का लोग ही दुआ-सलाम करने पहुंचते हैं। पदाधिकारी तो पूरी तरह से 'किनारा' कर चुके हैं। खबर तो यहां तक है कि सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में जाने से भी बच रहे हैं, क्योंकि वहां भी कार्यकर्ताओं का टोटा बना रहता है। पिछले दिनों एक पारिवारिक कार्यक्रम में उन्होंने बधाईयां देने वाले पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं की कमी को शिद्दत से महसूस किया। लगता है, सत्ता का सूरज ढलने पर 'छुटभैये' भी बड़े नेताओं से मुंह फेर लेते हैं. सियासत की यह भी एक अजीब विडंबना है!

'दिल्ली-दरबार' से कार्यकाल वृद्धि की आस?

प्रदेश के मुख्य सचिव को लेकर एक बार फिर कयासों का दौर शुरू हो गया है। मंत्रालय के गलियारों में चर्चाओं और सुर्खियों का बाजार गर्म है। मौजूदा मुख्य सचिव अनुराग जैन का कार्यकाल अगले माह अगस्त में समाप्त हो रहा है, लेकिन सूत्र बताते हैं कि हाल ही में उनके दिल्ली दौरे को कार्यकाल में वृद्धि के प्रयासों के तौर पर देखा जा रहा है। क्या दिल्ली से उन्हें 'ग्रीन सिग्नल' मिल गया है? वहीं, दूसरी तरफ, मुख्य सचिव पद के लिए दिल्ली में बैठे प्रदेश के एक और सीनियर आईएएस अधिकारी का नाम भी जोर-शोर से चल रहा है। अब देखना यह होगा कि क्या मौजूदा मुख्य सचिव को 'एक्सटेंशन' मिलता है या फिर 'दिल्ली-दरबार' से कोई नया चेहरा आता है। मंत्रालय में तो हर कोई अपनी-अपनी अटकलें लगा रहा है।

केंद्रीय मंत्री क्या कह गए ?

पड़ोसी राज्य में एक कार्यक्रम में शामिल होने सब-परिवार पहुंचे एक केंद्रीय मंत्री जब वापसी के लिए एयरपोर्ट जाने लगे, तो सड़कों को लेकर कुछ ऐसा कह गए कि अब पार्टी में इसको लेकर चर्चाएं शुरू हो गई हैं। सूत्रों की मानें तो केंद्रीय मंत्री एयरपोर्ट जाने के लिए कार्यक्रम से जल्दी निकले और इसका ठीकरा वहां की सड़कों पर फोड़ दिया। मंत्री जी तो समय पर एयरपोर्ट पहुंच गए, लेकिन सड़कों को लेकर दिया गया उनका बयान अब पार्टी में चर्चा का विषय बन गया है। खास बात यह है कि केंद्रीय मंत्री ने ऐसे राज्य की सड़कों के बारे में बोला है जहां की सड़कें तो वाकई मजबूत हैं, लेकिन अगर उस राज्य से आने वाले पावरफुल नेता की 'इज्जत' पर ही चोट पड़ जाए तो क्या होगा? अब यह बयान सिर्फ सड़कों के लिए था या इसके पीछे कोई और 'सियासी संदेश' छिपा था, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा!

रजत पालकी में निकले महाकाल, चंद्रमौलेश्वर स्वरूप में दिए दर्शन

उज्जैन में सवारी में सीएम हुए शामिल, डमरू बजाया, एक लाख से ज्यादा श्रद्धालु पहुंचे

उज्जैन (नप्र)। श्रावण मास के दूसरे सोमवार को उज्जैन में भगवान महाकाल की दूसरी सवारी निकाली जा रही हैं। सवारी में अलग-अलग दल प्रस्तुति देते चल रहे हैं। सीएम डॉ. मोहन यादव और मंत्री कैलाश विजयवर्गीय भी इसमें शामिल हुए। सीएम ने भगवान महाकाल का पूजन किया। इसके बाद सवारी में डमरू बजाते हुए चले। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल और नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय पवित्र श्रावण माह

के दूसरे सोमवार को उज्जैन में भगवान श्रीमहाकाल की सवारी में शामिल हुए। इससे पहले रात 2.30 बजे महाकाल मंदिर के पट खोले गए। रात से लेकर सोमवार दोपहर 3 बजे तक एक लाख से ज्यादा श्रद्धालु बाबा महाकाल के दर्शन कर चुके हैं।

ओंकारेश्वर में सुबह 5 बजे मंगला आरती हुई- इधर, प्रदेश में खंडवा के ओंकारेश्वर में सुबह 5 बजे मंगला आरती हुई। ओंकार महाराज का फूलों से विशेष श्रृंगार किया गया। नैवेद्य में 56 भोग अर्पित किए गए। रायसेन के भोजेश्वर महादेव को 5 क्विंटल फूलों से सजाया गया। भोजपुर के शिव मंदिर में 25 हजार से ज्यादा लोग पहुंचे हैं। छतरपुर के जटाशंकर धाम में 3 किलोमीटर तक जाम लगा रहा।

भोपाल समेत प्रदेशभर में मंदिरों में रही भक्तों की भीड़- सीहोर के कुबेरेश्वर धाम में विशेष अनुष्ठान किए जा रहे हैं। रात से ही कांवड़ यात्रियों की भी कतारें लगी रही। भोपाल के बड़वाले महादेव, गुफा मंदिर में भी श्रद्धालु शिवशंकर के दर्शन-पूजन के लिए पहुंचे। दमोह के बांदकपुर में सुबह 4 बजे से ही भक्त जागेश्वर नाथ का अभिषेक करने पहुंच रहे हैं।

भोपाल में भी निकली महाकाल की सवारी, मंत्री सारंग हुए शामिल- भोपाल के नरेला विधानसभा क्षेत्र में शंकराचार्य नगर के मंशापूर्ण हनुमान मंदिर से भगवान महाकाल की शाही सवारी निकाली गई। इसमें मंत्री विश्वास सारंग शामिल हुए। उन्होंने पालकी भी उठाई। सवारी में हजारों श्रद्धालु शामिल हुए।

कांग्रेस के नव संकल्प शिविर में राहुल गांधी ने कहा 'बीजेपी ने चुनाव चुराए'

उमंग सिंघार, पवन खेड़ा, जीतू पटवारी, कमलनाथ, हरीश चौधरी ने संबोधित किया

मांडव। धार जिले के मांडव में कांग्रेस के 'नव संकल्प शिविर' का हुआ उद्घाटन, सेवादल की टीम के साथ प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने किया। ध्वजारोहण और राष्ट्रगान से शिविर की शुरुआत हुई। इस दौरान सभी वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। इस दौरान कांग्रेस के प्रमुख नेता राहुल गांधी, पवन खेड़ा, हरीश चौधरी, जीतू पटवारी, कमलनाथ और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने संबोधित किया

राहुल गांधी ने विधायकों को वर्चुअली संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी ने ऐतिहासिक काम किया है। हमने पहली बार एक कास्ट बेस्ड इको-सोशल सर्वे तेलंगाना में करके दिखाया। इसके माध्यम से तेलंगाना का हमने आर्थिक-सामाजिक एक्सरे किया। इस सर्वे के सवाल हमने बंद कमरे में नौकरशाहों से नहीं बनवाए। दलित, आदिवासी, सामान्य और सभी सामाजिक संगठनों से इन सवालों का प्रारूप तैयार करवाया।

आज हमारे पास तेलंगाना का जो भी डेटा आप चाहते हो, वो हम दे सकते है। ये विकास का नया मॉडल है, भागीदारी का नया मॉडल है। इससे तेलंगाना में हम नई तरह की राजनीति करने जा रहा है, भागीदारी की राजनीति करने जा रहें। जैसे ही डेटा आएगा 50 प्रतिशत आरक्षण की मांग तुरंत उठेगी। नरेंद्र मोदी को डेटा से परेशानी क्यों है? क्योंकि डेटा के पीछे सच्चाई छिपी है।

उन्होंने कहा कि मैं बिना किसी शक के कह रहा हूँ, महाराष्ट्र में चुनाव चोरी किया गया। हमने अनेक बार चुनाव आयोग से इलेक्शन डेटा वोटर लिस्ट, और पोलिंग बूथ के वीडियो फुटेज मांगे, लेकिन आज कोर्ट में कहने बोलने के बाद भी आज तक तक आयोग ने डेटा नहीं दिया। मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ। मध्य प्रदेश में भी चुनाव चोरी किया गया। अनेक बार चोरी किया गया। अगर हम सावधान नहीं रहेंगे, हमारी पार्टी तैयारी नहीं करेगी, तो जो महाराष्ट्र में हुआ वो एमपी में फिर होगा। हमनें महाराष्ट्र चुनाव की वीडियोग्राफी मांगी, तो उन्होंने कानून बदल दिया। पुरानी वोटर लिस्ट को डिस्ट्रॉय कर दिया।

बीजेपी की सरकार में गरीब लोगों का रोजगार छीना जा रहा है। आप मणिपुर चले जाइए। आप कश्मीर चले जाइए। वहाँ जो छोटे कारोबारी धंधा करते थे उन्हें परे किया गया। आप हिमाचल चले जाइए सेब का धंधा अडानी कर रहें हैं। इनकी रणनीति एक भाई से दूसरे को लड़ाने की होती है। पूरे देश में हिंदू से मुस्लिम को, मणिपुर में एक ट्राइब से दूसरे ट्राइब को, हरियाणा में जाट से नॉन जाट को लडवाते है।

पवन खेड़ा : बीजेपी का काम कांग्रेस की लकीर मिटाना – कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने कहा कि बीजेपी की सोच है कि वह स्वयं की लकीर को बड़ी नहीं कर पाएगी, इसलिए कांग्रेस की बड़ी लकीर को छोटी करने का काम वे पिछले 11 साल से कर रहें हैं। ये छोटी लकीर वाले लोग हैं। इनकी लकीर कभी बड़ी नहीं हो सकती, इसलिए हमें इनके इस छोटे लकीर करने के षड्यंत्रों का पर्दाफाश करना होगा।

आज मीडिया पर सत्ता का कब्जा है। ऐसे में मीडिया का प्रबंधन नहीं किया जा सकता, समानांतर मीडिया खड़ा करने की आवश्यकता है। मोबाइल का इस्तेमाल कीजिए। आक्रामकता से अपनी बात रखिए। जनता के मुद्दों पर हमें जनता

के गुस्से को अभिव्यक्ति देने का काम करना है। विपक्ष अकेला सत्ता से नहीं लड़ सकता, उसे मीडिया, फ़िल्म, कवियों सहित अन्य संस्थाओं की आवश्यकता है। आरएसएस और बीजेपी दलालों के माध्यम से प्रभावी आवाज़ों को अपने पक्ष में खड़े करने का षड्यंत्र कर रहें हैं। आरएसएस ने सभी महत्वपूर्ण संस्थाओं पर अपने लोग बैठा दिए हैं। हमें इनसे लड़ना है। 'भारत जोड़ो यात्रा' कम्युनिकेशन का प्रभावी उदाहरण है। यह यात्रा सत्ता में आने के बाद भी जारी रहेगी। हर युग में बुद्ध, गांधी, अंबेडकर और कबीर होते हैं इस युग के नेता राहुल गांधी हैं।

उमंग सिंघार: कांग्रेस जनता के हित में हर लड़ाई लड़ेगी – 'नव संकल्प शिविर' का आयोजन कांग्रेस की परंपरा है। बीजेपी की सरकार हर तरफ़ घोटालों में घिरी हुई है। प्रदेश की जनता त्रस्त है। कांग्रेस आदिवासियों के लिए जल-जंगल-ज़मीन की लड़ाई लड़ेगी। युवाओं को रोजगार दिलाने के लिए, किसानों को खाद बिजली, पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करवाने के लिए यहां नव संकल्प शिविर में आए हैं। हम आगे बढ़ने दिशा तय करने के लिए गहन चिंतन मनन करेंगे। महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान की लड़ाई कांग्रेस पार्टी लड़ेगी। मध्य प्रदेश की जनता की भलाई के लिए हम संकल्प ले रहें हैं और आप सबके सुझाव आमंत्रित हैं जहाँ कहीं कोई सुधार की आवश्यकता है उसे सुधारकर हम एकजुट होकर आगे बढ़ेंगे। यह परीक्षा की घड़ी है।

जीतू पटवारी : हमें 2028 में पास होना है- संगठन शरीर है और विधायक उसका चेहरा है। दोनों में समन्वय से हम 2028 में सरकार लाएंगे। मध्य प्रदेश में संगठन सृजन अभियान में पाँच लाख लोगों ने भागीदारी की है। ये हमारे लिए ऐतिहासिक है। मध्य प्रदेश की जनता बदलाव चाहती है हमें एकजुट होकर सदन में मुद्दों को उठाना होगा। हमें जनता के बीच मुद्दों को लेकर जाना होगा। आज से तीन साल है हर कांग्रेसी को परिवर्तन में भिड़ जाना चाहिए। हम हर विधानसभा में एक स्थायी प्रभारी की नियुक्ति करेंगे।

कमलनाथ : भ्रष्टाचार और अविश्वास की बीमारी

मैं सीएम था तब उद्योगपतियों से पूछता था कि आप एमपी में निवेश क्यों नहीं करते? तो वो कहते थे कि एमपी में 5 साल से जमीन के लिए भटक रहे हैं। यह भ्रष्टाचार के कारण है। इसका समाधान कांग्रेस की विचारधारा ही कर सकती है। भ्रष्टाचार और अविश्वास की बीमारी एमपी के सामने है आज कृषि क्षेत्र का क्या हाल है? खाद के लिए किसान तड़प रहा है! बड़े व्यापारियों के पास खाद की कमी नहीं है। ये कैसी व्यवस्था है? इस सोच में परिवर्तन की जरूरत है तभी हमारा कृषि क्षेत्र आगे बढ़ेगा हमें याद रखना होगा कि मध्य प्रदेश में 70 प्रतिशत क्षेत्र प्रतिशत कृषि आधारित है।

हरीश चौधरी : पार्टी से बड़ा कोई नहीं

पार्टी से बड़ा कोई नहीं होता, बदलाव हमेशा जरूरी होता है। नेता यह बात छोड़ दें कि संगठन किसी एक व्यक्ति की इच्छा से चलेगा। सोच बदलो और एक दूसरे का साथ दो। गांधी जी और नेहरू जी जैसे नेता जनता के बीच से निर्णय करते थे। हमें भी जनता और कार्यकर्ताओं के बीच रहकर उनका विश्वास जीतना होगा। अगला चुनाव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से लड़ा जाएगा। डिजिटल प्लेटफार्म को हथियार की तरह इस्तेमाल कर सरकार की नाकामियों को जनता के बीच ले जाना होगा।

जातिगत जनगणना राहुल गांधी की सोच है। कांग्रेस ने हमेशा संविधान को सर्वोपरि माना है। जब देश आजाद हुआ तो कांग्रेस ने अनुसूचित जाति के तौर पर दलितों को सूचीबद्ध किया। आरएसएस, दलितों के लिए जाति आधारित पहचान का समर्थक था। इसी तरह कांग्रेस ने आदिवासियों को एसटी के तौर पर पहचान दी। आरएसएस इसके भी खिलाफ़ था। 27 % ओबीसी हमारी सरकार ने दिया, लेकिन ओबीसी को इस बात का अहसास ही नहीं है। ओबीसी की पहचान वर्ग के तौर पर नहीं जाति के तौर पर है। इसके लिए हमें जनता को जागरूक करना होगा।

मध्यप्रदेश फूलों के उत्पादन में देश में तीसरे स्थान पर

जल्दी ही बनेगा देश का सिरमौर

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश ने फूलों के उत्पादन में देश में अलग पहचान बनाई है। देश में मध्यप्रदेश पुष्प (फूल) उत्पादन में तीसरे स्थान पर है। प्रदेश में उद्यानिकी के कुल 27.71 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में फूल उत्पादन की भागीदारी 42 हजार 978 हैक्टेयर है। प्रदेश के किसानों द्वारा वर्ष 2024-25 में 5 लाख 12 हजार 914 टन फूलों का उत्पादन किया गया है, जो रिकार्ड है। वह दिन दूर नहीं जब फूलों के उत्पादन में मध्यप्रदेश देश का सिरमौर बनेगा।

प्रदेश में किसानों का फूलों के उत्पादन के प्रति बढ़ता रूझान ही है कि गत चार वर्षों में फूलों का उत्पादन रकबा जो वर्ष 2021-22 में 37 हजार 647 हैक्टेयर था वह वर्ष 2024-25 में बढ़कर 42 हजार 976 हैक्टेयर और उत्पादन में 86 हजार 294 टन की बढ़ोत्तरी हुई है। किसानों की आय को दोगुना करने और खेती को लाभ का धंधा बनाने में केन्द्र और राज्य सरकार किसान को कैश-क्रॉप की ओर प्रेरित कर रही है। छोटी कृषि जोत रखने वाले किसान, जिनके पास एक-दो एकड़ या तीन एकड़ की कृषि भूमि है, वे फूलों का उत्पादन कर अच्छा लाभ कमा सकते है।

मध्यप्रदेश के उत्पादित फूलों की मांग देश के महानगरों के साथ विदेशों में भी बढ़ी है। गुना जिले के गुलाब की महक जयपुर, दिल्ली, मुम्बई के बाद अब पेरिस और लंदन में भी पहुँच रही है। शिक्षित युवाओं के साथ गांव में रहने वाले ग्रामीण किसान भी फूलों के उत्पादन की ओर आकर्षित हुए है। राजधानी भोपाल की ग्राम पंचायत बरखेड़ा बोदर की रहने वाली श्रीमती लक्ष्मीबाई कुशवाह धान, गेहू, सोयबीन की खेती छोड़कर गुलाब, जरबेरा और गेंदा के फूल का उत्पादन कर, हर महीने तीन से चार लाख रूपये कमा रही है। ऐसे अनेक उदाहरण है, जिनसे प्रदेश में फूलों का उत्पादन बढ़ा है। मध्यप्रदेश में प्रमुख रूप से उत्पादित किये जाने वाले फूलों में गेंदा, गुलाब, सेवन्ती, ग्लेडूलस, रंजनीगंधा तथा औषधीय पुष्पों में इसेवगोल, अश्वगंधा, सफेद मूसली और कोलिक्स है। प्रदेश में सर्वाधिक उत्पादन क्षेत्र गेंदा के फूल का है। किसानों द्वारा 24 हजार 214 हैक्टेयर में गेंदे की खेती की जा रही है। दूसरे स्थान पर गुलाब है जिसका रकबा 4 हजार 502 हैक्टेयर और तीसरे स्थान पर सेवन्ती एक हजार 709 हैक्टेयर, चौथे स्थान पर ग्लेडूल्स एक हजार 58 हैक्टेयर, पांचवें स्थान पर रंजनीगंधा 263 हैक्टेयर सहित अन्य पुष्प 11 हजार 227 हैक्टेयर में बोए जा रहे है। प्रदेश में फूलों की प्रति हैक्टेयर उत्पादकता 15.01 मैट्रिक टन है, जो फूलों की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस उत्पादकता के लिये प्रदेश की जलवायु, यहाँ की मिट्टी के साथ सिंचाई सुविधाओं के विस्तार और किसानों को शासन का सहयोग है। फूलों के उत्पादन से लेकर फूलों की गुणवत्ता में सुधार और मार्केटिंग महत्वपूर्ण विषय है, जिस पर मध्यप्रदेश शासन उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग लगातार काम कर रहा है।

राज्यपाल पटेल ने महापौर श्रीमती मालती राय को दी बधाई

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने सुपर स्वच्छता लीग सिटीज़ की राष्ट्रीय रैंकिंग में भोपाल शहर को दूसरा स्थान मिलने की उपलब्धि पर महापौर भोपाल श्रीमती मालती राय को बधाई दी है।

राज्यपाल श्री पटेल ने महापौर श्रीमती राय का पुष्प-गुच्छ भेंटकर अभिनन्दन किया। राज्यपाल श्री पटेल को पुरस्कार प्राप्त करने की उपलब्धि की जानकारी देने के लिए भोपाल महापौर श्रीमती राय सोमवार को राजभवन पहुँची थीं।

गोवा से इंदौर आ रही फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग

अंडर कैरिज वॉर्निंग की आई समस्या, फ्लाइट में सवार थे 140 यात्री, सभी सुरक्षित

इंदौर (नप्र)। गोवा से इंदौर आ रही इंडिगो की फ्लाइट में उड़ान के दौरान तकनीकी खराबी आ गई। फ्लाइट की इंदौर में ही इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। एयरपोर्ट प्रबंधन से मिली जानकारी के अनुसार गोवा से इंदौर आ रही इंडिगो की उड़ान संख्या 6ई813 की इमरजेंसी लैंडिंग हुई। बताया जा रहा है कि अंडर कैरिज वॉर्निंग के चलते फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई थी। प्रबंधन के मुताबिक विमान की सुरक्षित लैंडिंग हुई है। इस फ्लाइट में लगभग 140 यात्री सवार थे। सभी यात्री सुरक्षित हैं।

शाम 5.08 बजे कराई गई लैंडिंग

इंदौर एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार इंडिगो की फ्लाइट संख्या 6ई813 ने दोपहर 3.14 बजे गोवा एयरपोर्ट से उड़ान भरी थी। जिसके बाद फ्लाइट की शाम 5.08 बजे इंदौर एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। फ्लाइट ने तय समय से लेट गोवा एयरपोर्ट से उड़ी थी। रोजाना यह फ्लाइट 2.40 बजे गोवा एयरपोर्ट से इंदौर एयरपोर्ट के लिए उड़ान भरती है।

एयरपोर्ट सूत्रों ने बताया कि जब गोवा से इंदौर फ्लाइट पहुंची तो लैंडिंग के पहले पायलट ने देखा कि फ्लाइट के हाइड्रोलिक सिस्टम ठीक से काम नहीं कर रहा है। इसके बाद एटीसी को संपर्क कर अंडर कैरिज वॉर्निंग के बारे में जानकारी दी। एटीसी ने विमान की इमरजेंसी लैंडिंग के लिए सुरक्षा के लिहाज से सभी तैयारी रनवे पर करने के लिए फायर ब्रिगेड और अन्य अधिकारियों को सूचित किया। जिसके बाद एटीसी ने पायलट को सूचित किया और फिर विमान की पायलट ने सुरक्षित लैंडिंग कराई।

ओंकारेश्वर में दो युवक डूबे, एक की मौत

दूसरे सावन सोमवार में नर्मदा स्नान के दौरान हादसा, नीमच, राजस्थान से दर्शन करने आए थे

खंडवा (नप्र)। सावन सोमवार के दिन ओंकारेश्वर में फिर एक हादसा हो गया। नर्मदा स्नान के दौरान दो युवक गहरे पानी में डूब गए, जिनमें चित्तौड़ से आए विशाल को बचा लिया गया, जबकि नीमच निवासी 26 वर्षीय पंकज की मौत हो गई। हादसा सुबह करीब 11 बजे गौमुख घाट पर हुआ।

नीमच निवासी पंकज पिता कैलाश (26 वर्ष) और राजस्थान के चित्तौड़गढ़ निवासी विशाल अपने-अपने परिवार के साथ ओंकारेश्वर दर्शन करने पहुंचे थे। गौमुख घाट पर स्नान करते समय दोनों गहरे पानी

में चले गए। घाट पर पहले से तैनात एसडीआरएफ की टीम ने तत्काल सर्चिंग शुरू की। रेस्क्यू टीम ने विशाल को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, लेकिन पंकज को गंभीर हालत में बाहर लाया गया। अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल- हादसे के बाद घाट पर अफरा-तफरी मच गई। एसडीईआरएफ की त्वरित कार्रवाई से एक युवक को तो बचा लिया गया, लेकिन पंकज की मौत से उसके परिवार की महिलाएं बेसुध हो गईं। घटना के समय घाट पर भारी संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे, जिससे राहत कार्य में भी थोड़ी देर हुई।

चार दिन पहले भी दो सगे भाई डूबे थे

ओंकारेश्वर में नर्मदा स्नान के दौरान डूबने की घटनाएं लगातार हो रही हैं। 16 जुलाई को इंदौर से आए दो सगे भाई नर्मदा-कावेरी संगम घाट पर डूबे थे। तीन दिन तक तलाश के बाद ही उनके शव मिले। हादसों के बाद भी प्रशासनिक स्तर पर पुख्ता सुरक्षा इंतजाम नहीं किए गए हैं।

घाटों पर नहीं हैं सुरक्षा रेलिंग

श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए घाटों पर रेलिंग या स्पष्ट गहराई संकेतक तक नहीं हैं। केवल चेतावनी बोर्ड लगाए गए हैं, लेकिन हादसों पर नियंत्रण नहीं है। स्थानीय लोगों का कहना है कि घाटों के अंदर अचानक गहराई हो जाने के कारण लोग डूब जाते हैं, और रेस्क्यू करना भी मुश्किल होता है। श्रद्धालुओं ने प्रशासन से मांग की है कि घाटों पर स्थायी सुरक्षा व्यवस्था की जाए।